




सम्राट अशोक का सही इतिहास

राजेंद्रप्रसाद सिंह

सम्राट अशोक का सही इतिहास

डॉ. राजेंद्र प्रसाद सिंह

भूमिका

मौर्य काल के बारे में मेगस्थनीज ने लिखा है कि भारतवर्ष के लोग कभी झूठ नहीं बोलते, मकानों में ताले नहीं लगाते और न्यायालयों में बहुत कम जाते हैं। निश्चित प्राचीन भारत के इतिहास में मौर्य काल स्वर्ण युग था। तब पाटलिपुत्र दुनिया के गिने - चुने प्राचीन नगरों में एक था।

पाटलिपुत्र के मध्य में मौर्यों का राजप्रासाद स्थित था। स्ट्रैबो ने लिखा है कि पाटलिपुत्र का राजभवन एशिया के प्रसिद्ध सूसा तथा एकबटना के राजभवन से कहीं अधिक शानदार था। जो लोग मौर्य कला पर ईरानी कला के प्रभाव के पक्षपाती हैं, उन्हें इसका जवाब खोजना चाहिए।

मेगस्थनीज ने लिखा है कि मौर्यों के शाही महल के स्तंभों पर सोने की बेलें चढ़ी थीं .... चाँदी के पक्षियों को उन पर सजाया गया था। सोने - चाँदी से शाही महल सुसज्जित था। कोई पाँच सौ साल बाद आए चीनी यात्री फाहियान ने जब पाटलिपुत्र स्थित राजभवन को देखा, तब दंग रह गया, लिखा कि शहर के बीच शाही महल और उसके हॉल पहले की तरह अब भी खड़े हैं। वह दाँतों तले ऊँगली दबाकर आश्चर्य व्यक्त किया कि ऐसा निर्माण - कार्य मानव - शक्ति के बूते की बात नहीं है।

पुरातात्विक आधार पर अशोक का साम्राज्य उत्तर - पश्चिम में हिंदूकुश से पूरब में बंगाल तक तथा उत्तर में हिमालय की तराई से लेकर दक्षिण में मैसूर तक विस्तृत था। प्राचीन भारत का कोई भी सम्राट इतने विस्तृत क्षेत्र का स्वामी नहीं था। डा. स्मिथ ने लिखा है कि दो हजार साल से भी पहले भारत के प्रथम सम्राट ने उस वैज्ञानिक सीमा को प्राप्त कर लिया था, जिसके लिए उसके ब्रिटिश उत्तराधिकारी व्यर्थ की आहें भरते रहे तथा जिसे 16 - 17 वीं सदी के मुगल बादशाह भी कभी पूर्ण रूप से प्राप्त नहीं कर सके।

अशोक के राजपद का आदर्श था कि हर समय और हर जगह पर मुझे जनता की आवाज सुनने के लिए बुलाया जा सकता है। चाहे मैं भोजन कर रहा होऊँ, चाहे अंतःपुर में होऊँ, मैं सो रहा होऊँ या अपने उद्यान में होऊँ, मेरे राज्य के अधिकारी जनता की कोई भी बात मुझ तक पहुँचा सकते हैं। सर्व लोकहित मेरा कर्तव्य है। सर्व लोकहित से बढ़कर कोई दूसरा कर्म नहीं है।

सभी मनुष्यों को अपनी संतान मानने वाले सम्राट अशोक ने जगह - जगह मनुष्यों और पशुओं के लिए चिकित्सालय बनवाए और कुएँ खुदवाए। सड़कें बनवाईं। सड़कों पर पेड़ लगवाए। अशोक अपने जनहितकारी कार्यों के लिए सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं और इस क्षेत्र में उनकी जोड़ का दूसरा शासक इतिहास में मिलना कठिन है।

कलिंग युद्ध के बाद सम्राट अशोक ने गंगा घाटी के धर्म को उठाकर विश्व धर्म का रूप दे डाले। लेनिन ने मार्क्स के सिद्धांतों को लागू किए और अशोक ने बुद्ध के सिद्धांतों को लागू किए तथा इस सिद्धांत पर चलकर वे दुनिया में वो मुकाम और शोहरत हासिल किए जो कम ही सम्राटों को नसीब हुए। जिस दार्शनिक और दर्शन की खोज में सम्राट अशोक के पिता यूनान तक अपनी आँखें गड़ाए हुए थे, अशोक की आँखों ने वो दार्शनिक और दर्शन यहीं भारत में ही खोज निकाले।

सम्राट अशोक के स्तंभ और शिलालेख देश के एक कोने से दूसरे कोने तक बिखरे पड़े हैं। उन्होंने भिक्षुओं के लिए पाषाणों को कटवाकर गुहाएँ बनवाईं, बौद्ध परंपरा के अनुसार 84 हजार स्तूपों का निर्माण कराए और जगह - जगह स्तंभ खड़ा किए, जिसकी चमक शानदार है। अशोक स्तंभ कारीगरी के अनोखे नमूने हैं। 40 - 50 फीट ऊँचा एक ही पत्थर के बने हुए जिनकी चिकनाई से प्रत्येक युग के वासी चकित होते आए हैं। सारनाथ स्तंभ पर सिंहों की जैसी शक्ति का प्रदर्शन है, उनकी फूली हुई नसों में जैसी स्वाभाविकता है, वह न केवल इस देश के बल्कि समस्त संसार के मूर्ति विन्यास में अप्रतिम है।

मौर्य प्रशासन वस्तुतः अनुशासन था। जयचंद्र विद्यालंकार इसे अनुशासन ही मानते हैं। सुविधा के हिसाब से इसे प्रशासन भी कहें तो रोमिला थापर ने लिखा है कि मौर्य शासन - प्रणाली विस्तृत रूप से नियोजित की गई थी, जिसमें अनेक विभाग तथा अधिकारी थे, जिनके कार्य पूर्णतः स्पष्ट कर दिए गए थे। ऐसा प्रतीत होता ह

ै कि यह प्रशासन अकबर के शासन काल में मुगल - साम्राज्य के प्रशासन से कहीं अधिक संगठित था। सेना भी ऐसी कि सेल्यूकस की फौज को हारनी पड़ी, जबकि मुगल सेना दुर्बल पुर्तगाली फौज से हार गई।

सही अर्थों में सम्राट अशोक प्रथम राष्ट्रीय शासक थे, जिन्होंने पूरे राष्ट्र को एक भाषा और लिपि देकर एकता के सूत्र में बाँध दिए। स्वतंत्र भारत ने सारनाथ स्तंभ के सिंह - शीर्ष को अपने राजचिह्न के रूप में ग्रहण कर मानवता के इस महान नायक के प्रति अपनी सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित की है।

अशोक जयंती, 2020

डा. राजेंद्रप्रसाद सिंह
गाँधी नगर, सासाराम (बिहार)

विषय-सूची

1. अशोक : वंश, परिवार और जीवन

2. अशोक : शिलालेख, स्तंभ और स्तूप

3. अशोक : मूल्य , प्रभाव और प्रेरणाएँ

4. अशोक : गल्प , मिथ और लिजिन्द्रियाँ

1) अशोक : वंश, परिवार और जीवन

1. जो जीता वह सिकंदर है !

जो सिकंदर को जिताया वह सिल्यूकस है!!

और जो सिल्यूकस को भी जीता वह मौर्य है !!!



2. ये सिक्के सेल्यूकस (Seleucus) के हैं। सेल्यूकस के सिक्कों पर उनका नाम लिखा है। ग्रीक में लिखा है,

जिसका अंग्रेजी रूपांतरण " Seleykoy " होगा।

Seleykoy का हिंदी रूपांतरण " सेलेउक " होगा। oy शांत रहेगा।

सेल्यूकस का वास्तविक नाम " सेलेउक " ही था। उनके सिक्के इस बात की पुष्टि करते हैं।

सेलेउक से जो सेलेउकस और बाद में, जो सेल्यूकस बना, उसका अंतिम " स " पुल्लिंग Nominative Case के कारण है।

सेल्यूकस का वास्तविक नाम " सेलेउक " ही था।

जिसका अंग्रेजी रूपांतरण " Seleykoy " होगा।



3. सतयुग की अवधारणा क्या है?

यहीं कि तब लोग सत्य बोलते थे। झूठ नहीं बोलते थे।

चोरी- डकैती नहीं थी। घर में ताले नहीं लगते थे। लोग ईमानदार थे।

आपस में भाई - चारे का नाता था। परस्पर झगड़ा - झंझट कम था। शांति थी।

यदि प्राचीन भारत में ऐसी स्थिति की कोई कमोबेश झलक मिलती है तो वह मौर्य काल में मिलती है।

मौर्य काल के बारे में मेगस्थनीज ने लिखा है कि भारत के लोग कभी झूठ नहीं बोलते, मकानों में ताले नहीं लगाते और न्यायालयों में बहुत कम जाते हैं।

यदि प्राचीन भारत में सतयुग की कमोबेश परिकल्पना की जा सकती है तो वह मौर्य काल ही होगा।



4. याद कीजिए .... भारत का वो स्वर्ण युग .... तब अफगानिस्तान, पाकिस्तान और बंगलादेश सभी जंबूद्वीप के हिस्से थे .... कोई शरणार्थी नहीं .... सभी यहीं के नागरिक थे।



5. मौर्य राजवंश की उत्पत्ति में इतिहासकारों ने विष्णु पुराण और विष्णु पुराण की टीका का भरपूर इस्तेमाल किया है, यह मानकर कि यह काफी प्राचीन है और इसीलिए इसका सबूत भी मजबूत है।

मगर विष्णु पुराण की टीका की बात छोड़िए, खुद विष्णु पुराण में कैंकिल राजाओं (4.54.55) का वर्णन है और इन कैंकिल राजाओं ने आंध्र देश पर 500 ई. से 900 ई. तक राज्य किया था।

जाहिर है कि विष्णु पुराण की टीका मौर्य राजाओं के सैकड़ों साल बाद की लिखी किताब है और इतिहासकारों को इसका इस्तेमाल इसी रूप में करना चाहिए ।

अतः मौर्यवंशी शासन व्यवस्था और इतिहास के लेखन में जिन अनेक पुराणों का इस्तेमाल इतिहासकार करते हैं, उनकी काल - प्रामाणिकता संदिग्ध है और ऐसी सामग्री इतिहास को खतरे में डालती है।

वाराह पुराण और स्कंद पुराण में रामानुजाचार्य का उल्लेख है, जबकि रामानुजाचार्य 11 वीं सदी में थे।

भविष्य पुराण में तो मुगल काल क्या, अंग्रेजों के काल तक वर्णन है। विक्टोरिया का इतिहास भी इसमें दर्ज है।



6. झूठ है कि मौर्यों की उत्पत्ति किसी मुरा नामक दासी से हुई थी।

मोरिय का संस्कृत रूप मौर्य है।

पालि, प्राकृत और संस्कृत किसी भी भाषा के व्याकरण के अनुसार मुरा से मौर्य शब्द नहीं बनेगा।

मुरा नामक दासी की कहानी मौर्य वंश को बदनाम करने के लिए बाद में गढ़ी गई है।

मोरिय वास्तविक है और मौर्य कृत्रिम है वरना गया में आज भी फल्गु तट पर मोरिया घाट तथा कैमूर में बसहा गाँव के पास स्थित अशोक शिलालेख की पहाड़ी मठ मोरिया नाम से नहीं जानी जाती।



7. मोरिय गण का टोटेम था मोर (पक्षी)। मोर न तो आर्यों का है, न द्रविड़ों का। मोर आस्ट्रिकों का है।

मोर की जड़ आर्य- द्रविड़ भाषाओं में नहीं मिलेगी। इसकी जड़ आस्ट्रिकों की भाषाओं में मिलेगी।

संताली, मुंडारी, हो, मोन, शबर, मलय आदि आस्ट्रिक भाषाएँ हैं। ये भाषाएँ हजारों - हजार मिल की दूरी पर हैं। अचूक एकता है इनमें, मगर आसपास की सटी भाषाओं से एकदम बेखबर!

देखिए एकता का सूत्र इन्हें कैसे बाँधता है? मोर को संताली में माराक, मुंडारी में मराअः, हो में मरः, मोन में म्राक, शबर में मर, मलय में मेर आदि कहा जाता है।

मोरिय गण का नस्ल - सिद्धांत यही से प्रतिपादित होगा।



8. मौर्यों का जमाना था। भारत और यूनान के बीच आवाजाही थी। तब ग्रीक और प्राकृत शब्दों का मेलजोल भी था।

ग्रीक में एक शब्द " एंड्रो - दमस " (Andro - Damas) का प्रचलन है। एंड्रो - दमस में दो शब्दों का मेलजोल है। एंड्रो ग्रीक का और दमस प्राकृत का शब्द है। ग्रीक में एंड्रो का अर्थ पुरुष तथा प्राकृत में दमस का अर्थ जीतने वाला होता है। एंड्रो - दमस का अर्थ " जीतने वाला पुरुष " हुआ।

चंद्रगुप्त मौर्य को एंड्रो - कोट्टस (Andro- Cottus) क्यों कहा जाता है?

एंड्रो - कोट्टस में दो शब्दों का मेलजोल है। एंड्रो ग्रीक का और कोट्टस प्राकृत का शब्द है। ग्रीक में एंड्रो का अर्थ पुरुष तथा प्राकृत में कोट्टस का अर्थ किले वाला होता है। एंड्रो - कोट्टस का अर्थ " किले वाला पुरुष " हुआ।

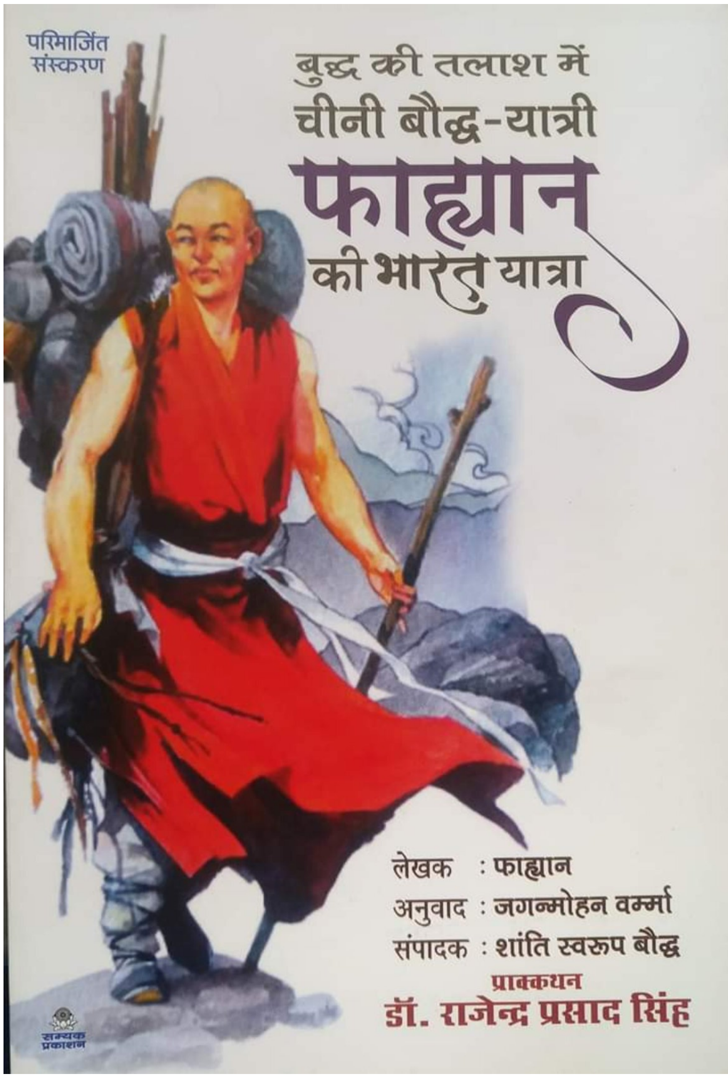
चंद्रगुप्त मौर्य को यूनानियों ने " किला - पुरुष " यूँ ही नहीं कहा है। पाटलिपुत्र की किलेबंदी ऐसी कि पक्षी भी पर नहीं मार सके। किलेबंदी को देखकर मेगस्थनीज चकित थे।

मेगस्थनीज ने लिखा कि पाटलिपुत्र की किलेबंदी ऐसी कि नगर के चारों ओर मोटी लकड़ी की दीवार थी। दीवार के बीच - बीच में मोर्चे बने थे और चारों ओर 60 फीट गहरी एवं 600 फीट चौड़ी खाई थी। दीवार में 64 दरवाजे तथा 570 बुर्ज थे।



9. पढ़ा है कि गुप्त साम्राज्य की हुकूमत पाटलिपुत्र से चलती थी। गुप्त काल में ही फाहियान भारत आए। वे पाटलिपुत्र गए।

आश्चर्य कि फाहियान को पाटलिपुत्र में गुप्त राजाओं का कोई राजप्रासाद नहीं दिखाई पड़ा। कोई गुप्त राजा भी नहीं मिले। उल्टे फाहियान ने पाटलिपुत्र में सम्राट अशोक के भव्य राजप्रासाद का अवलोकन किए। तारीफ में लिखे कि इतना सुन्दर इस लोक के लोग नहीं बना सकते। आश्चर्य कि कोई पाँच सौ साल बाद भी वह राजप्रासाद जस का तस खड़ा था।



10. मौर्य काल स्वर्ण युग था।

गुप्त काल प्राचीन भारत का स्वर्ण युग नहीं था। स्वर्ण युग की परिकल्पना कलम की ताकत से इतिहासकारों द्वारा खड़ा किया गया हौआ है।

जिस अजंता की गुफाओं को घसीटकर इतिहासकार गुप्त - कला से जोड़ते हैं, उस अजंता पर न तो गुप्त राजाओं का शासन था और न संरक्षण था।

जिस नालंदा महाविहार को इतिहासकार गुप्तकालीन मानते हैं, वह वस्तुतः मौर्यकालीन है।

जिस भूमरा और नचना की इमारतों को गुप्त राजाओं की देन बताई जाती है, वह वस्तुतः नागों की है।

जिस लाट पर खुद समुद्रगुप्त ने अपनी प्रशस्ति लिखवाई है, वह सम्राट अशोक का है।

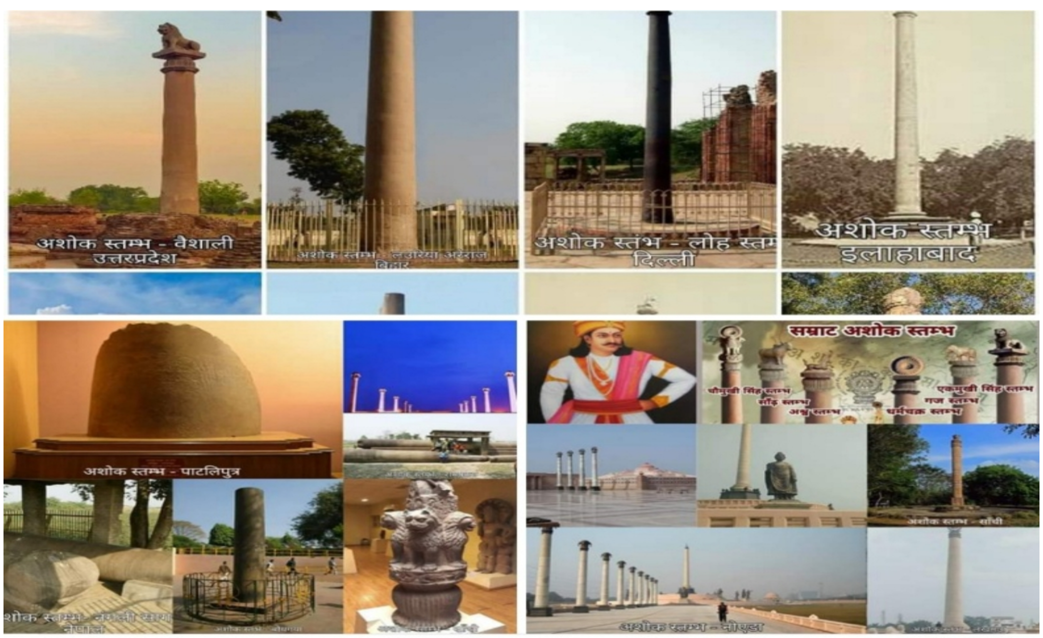
जिस सुदर्शन झील पर स्कंदगुप्त का शिलापट्ट लगा है, वह सुदर्शन झील भी चंद्रगुप्त मौर्य की थी।

जिस पटना में गुप्त राजाओं का शाहीमहल था, वह शाहीमहल मौर्यों का था।

जिस गुप्तकाल में फाहियान भारत आया था, वह गुप्त जैसे राजाओं को जानता भी नहीं था।

जिस गुप्त साम्राज्य की विशालता की प्रशंसा है, वह चोल साम्राज्य से भी छोटा था।

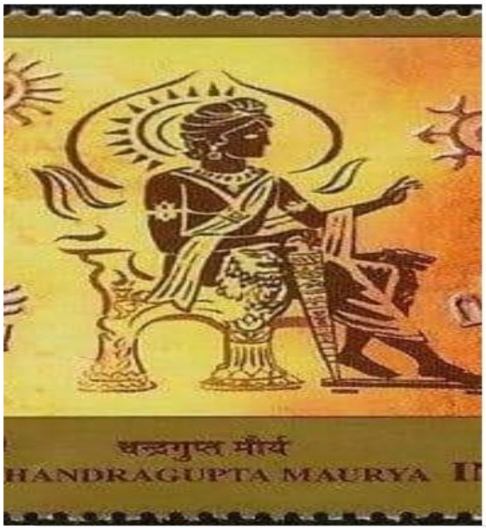
जिस गुप्त साम्राज्य की साहित्यिक उपलब्धियों का यशोगान है, उनकी प्रायः प्रामाणिकता संदिग्ध है। कुल मिलाकर गुप्तकाल के पास ऐसा कुछ भी नहीं बचता, जिसके बलबूते उसे प्राचीन भारत का स्वर्ण युग कहा जा सके।भारत का असली स्वर्ण युग मौर्य काल था।



11. विश्व इतिहास की झलक में जवाहर लाल नेहरू ने प्राचीन भारत के इतिहास से स्वतंत्र शीर्षक लिखने के लिए सिर्फ तीन राजाओं को चुना है -- 1. चंद्रगुप्त मौर्य 2. सम्राट अशोक और 3. हर्षवर्धन।

और eजो चुना वो सभी गैर वैदिक थे।

आश्चर्य कि उनमें से दो मौर्य वंश के थे।





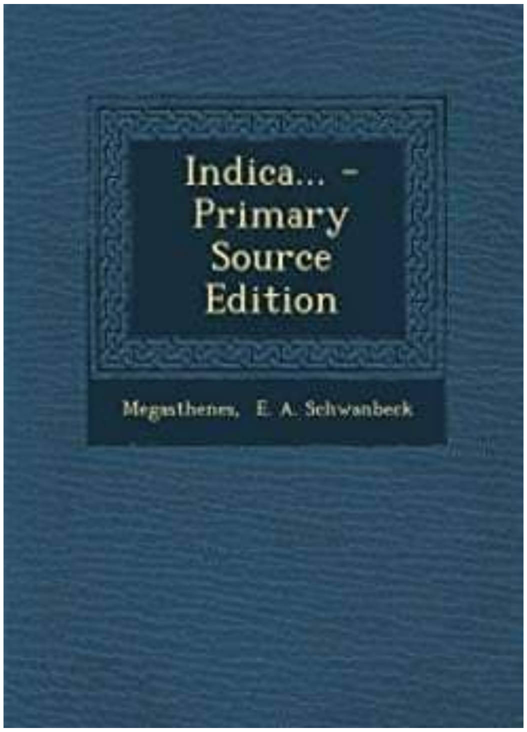


12. कल्पना कीजिए अब से कोई ढाई हजार साल पहले जब मौर्यों का शासन था, तब बाकायदे विदेशियों की देखरेख के लिए समिति थी और यह समिति विदेशियों के आवास तथा बीमार पड़ने पर चिकित्सा का इंतजाम करती थी।

देश में विदेशियों की पुख्ता सुरक्षा .... सुखद सफर .... और आखिर में सम्मान सहित सीमा तक विदाई।

यह बात एक विदेशी राजदूत मेगस्थनीज ने ही लिखी है, कोई देशी आदमी ने नहीं लिखी है।

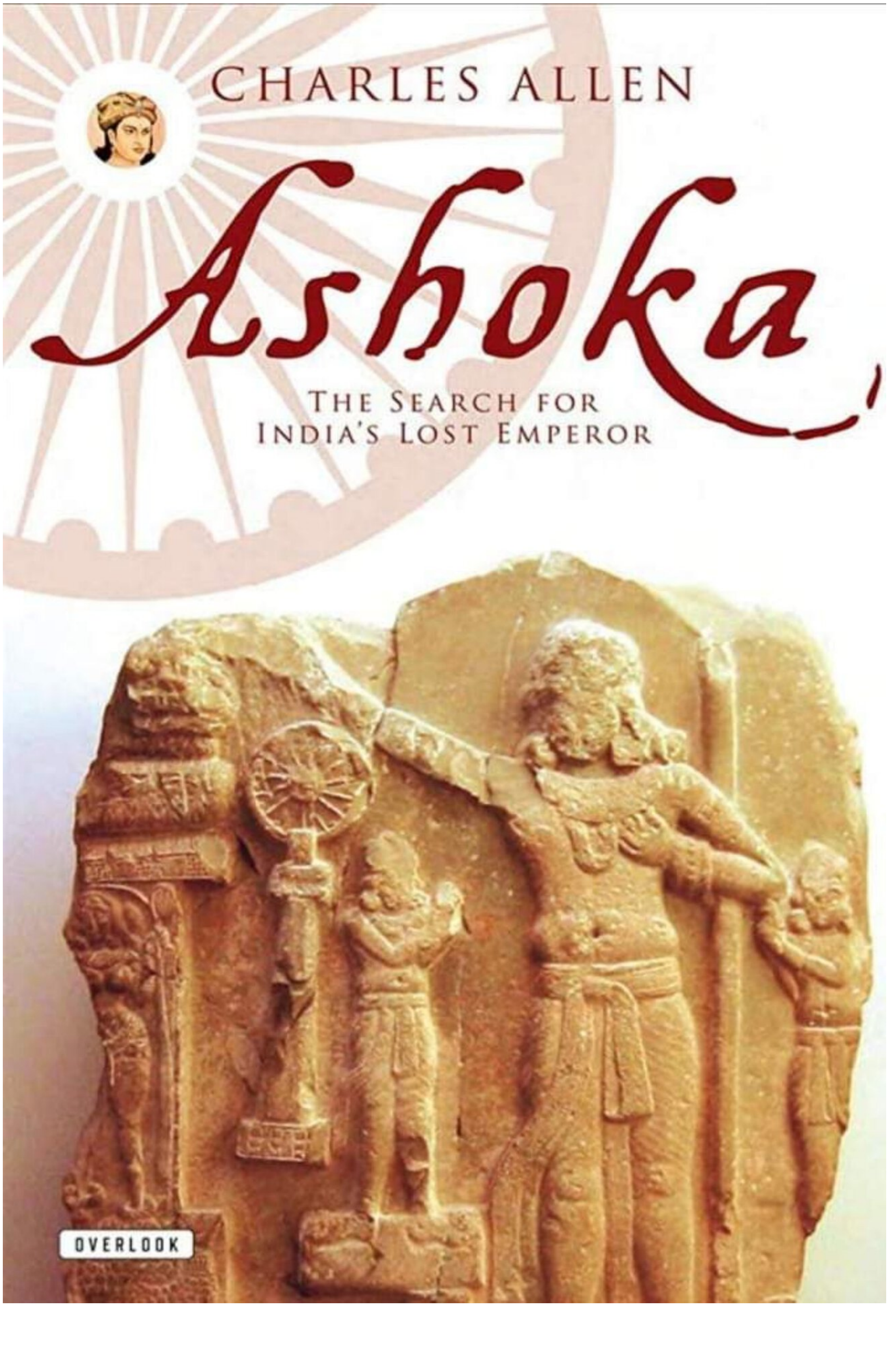
आज ढाई हजार साल बाद हम कितने सभ्य हुए हैं कि एक - दूसरे का खून बहा रहे हैं।



13. इंग्लैंड के लोकप्रिय इतिहासकार चार्ल्स एलेन ने " अशोक : दी सर्च फार इंडियाज लास्ट एम्परर " (2012) नामक पुस्तक लिखी है।

चार्ल्स एलेन ने लिखा है कि भारत के जो हिंदू मंदिर सर्वाधिक प्रमुख हैं, वे बुद्धिस्ट संरचना हैं।

उदाहरण के रूप में वे कहते हैं कि जो मंदिर भारत के चार कोनों पर स्थित हैं, उसे ही लिया जा सकता है। उत्तराखंड का बद्रीनाथ, पुरी का जगन्नाथ, केरल का अयप्पा और पंढरपुर का विट्ठलनाथ में या तो बुद्ध मूर्तियों को देव - छवि में या लिंग में परिवर्तित किया गया है।


CHARLES ALLEN
Ashoka
THE SEARCH FOR
INDIA'S LOST EMPEROR
OVERLOOK

14. दुनिया भर के इतिहासकार सम्राट अशोक की जन्म - तिथि को लेकर हैरान हैं। आखिर चैत शुक्ल अष्टमी को अशोक की जन्म - तिथि क्यों और कैसे है?

बात 408 ई. की है। तब फाहियान पाटलिपुत्र में मौजूद थे। वो अप्रैल महीने की 19 तारीख थी। दिन रविवार था। पूरा पाटलिपुत्र अशोक जयंती के जलसे में डूबा हुआ था। फाहियान ने इस जलसे का आँखों देखा हाल प्रस्तुत किए हैं।

तब भारत में शक संवत का प्रचलन था। सो 408 ई. का शक संवत में रूपांतरण 330 होगा। शक संवत 330 में चैत का अधिमास (Leap month) था। कैसे अधिमास था? इसका सूत्र है कि 330 में 12 का गुणा कीजिए और फिर 19 का भाग दीजिए। यदि शेषफल 9 से कम होगा, तब समझिए कि शक संवत 330 का साल अधिमास होगा। गणना करने पर शेषफल 8 आता है। साबित हुआ कि शक संवत 330 अर्थात 408 ई. में अधिमास था।

अब जानिए कि किस महीने में अधिमास था। इसके लिए दो सूत्र हैं। पहला यह कि शक संवत 330 में 1666 को घटाइए। फिर 19 का भाग दीजिए। यदि शेषफल 3 है तो समझिए कि वह चैत का अधिमास था। दूसरा सूत्र यह है कि शक संवत 330 में 928 घटाइए। फिर 19 का भाग दीजिए। यदि शेषफल 9 है तो समझिए कि वह चैत का अधिमास था। दोनों सूत्र से जाँचने के बाद पता चलता है कि 408 ई. में चैत का अधिमास था। अर्थात दो चैत साथ - साथ लगे थे।

फाहियान ने लिखा है कि पाटलिपुत्र में प्रत्येक साल सेकेंड मून (Second Moon) में 8 वीं तिथि को जुलूस निकलता था। 408 ई. में Secod Moon में 8 वीं तिथि चैत शुक्ल अष्टमी होगी। इसलिए कि उस साल चैत अधिमास था। फाहियान ने जुलूस का सविस्तार वर्णन किया है। इस दिन 4 पहिए का रथ बनता था। रथ 20 हाथ ऊँचा और स्तूप के आकार का बनता था। बीच में बुद्ध की मूर्ति होती थी। बड़े पैमाने पर लोग जुलूस में शामिल होते थे। नाचते - गाते थे। प्रमुख लोग औषाधालय स्थापित करते थे। गरीब, अपंग, अनाथ, विधवा आदि की सहायता करते थे। वैद्य बीमार लोगों की चिकित्सा करते थे।

यहीं तो सम्राट अशोक भी करते थे। अशोक जयंती पर सम्राट अशोक की राह चलकर तब भारत की जनता अपने इस महानायक को सच्चे अर्थों में नमन करती थी। फाहियान की पुस्तक का अनुवाद करने में जेम्स लेगी से थोड़ी चूक हुई कि उन्होंने सेकेंड मून को दूसरा महीना लिख दिए। परिणाम यह हुआ कि भारत के इतिहासकारों ने उसे वैशाख बना लिया।

इसका सटीक अनुवाद " रिकॉर्ड आॅफ दि बुद्धिस्टिक किंगडम्स " में हर्बर्ट ए. गाइल्स ने किया है - सेकेंड मून में आठवीं तिथि।

सेकेंड मून की आठवीं तिथि शक संवत 330 में चैत शुक्ल अष्टमी होगी। आज 1 अप्रैल, 2020 को भारत में अशोक जयंती मनाई जा रही है, फाहियान ने जिस अशोक जयंती का आँखों देखा हाल लिखा है, वह 19 अप्रैल, 408 ई. को मनाई गई थी।

स्ट्रैबो ने लिखा है कि भारत में जन्म - दिन मनाने की परंपरा मौर्य शासकों ने आरंभ की।

सम्राट अशोक की जन्म - तिथि के बारे में नए तथ्यों को खोजकर आज उन्हें जन्म - दिन पर नमन करता हूँ।



15. सम्राट अशोक का भाई - प्रेम!

सम्राट अशोक के एक छोटे भाई थे। अर्हत थे। घर - द्वार त्याग चुके थे। गृद्धकूट पर रहते थे। बड़ी शांत और एकांत जगह थी। यही बुद्ध ने बिबिंसार को बौद्ध धम्म में दीक्षित किए थे।

अशोक अपने छोटे भाई से बेहद प्यार करते थे। वे चाहते थे कि छोटा भाई घर आए। उसे खिलाएँ और राजभवन में रखें। मगर छोटे भाई को वहीं शांति थी। उन्हें राजधानी पसंद नहीं थी।

सम्राट ने अपने छोटे भाई से कहा कि पाटलिपुत्र चलो, वहीं तुम्हारे लिए कृत्रिम पर्वत बनवाए देता हूँ। गुफा भी। तुम्हारी शांति कोई नहीं तोड़ेगा।

.....और अंततोगत्वा सम्राट का आदेश हुआ, अगले दिन अपने छोटे भाई के लिए पाटलिपुत्र में कृत्रिम पर्वत और उसमें गुफा बनवा डाले।

छोटे भाई पाटलिपुत्र गए या नहीं, इसका विवरण नहीं मिलता है।

फाहियान ने अपनी डायरी के 27 वें भाग में अशोक के इस भ्रातृ - प्रेम की दास्तान बड़े मनोयोगपूर्वक लिखी है।

गुफा का विवरण देते हुए फाहियान ने लिखा है कि यह 30 हाथ लंबी, 20 हाथ चौड़ी और 10 हाथ से अधिक ऊँची थी।कोई पाँच सौ बरसों बाद फाहियान को ये निशानियाँ दिखाई दी होंगी।

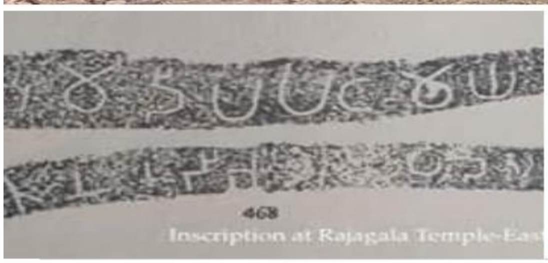
16. अपने बेटा - बेटी के लिए आदमी क्या नहीं करता.... यदि राजा हो तो क्या कहना.... भारतीय इतिहास में सम्राट अशोक द्वारा अपने ही बेटा - बेटी को मानव - कल्याण के लिए चीवर पहनाकर विदेश भेज देने का विरल उदाहरण मिलता है.... ऐसा कि वे बेटा - बेटी अपने देश में जीने क्या, मरने भी नहीं आए।

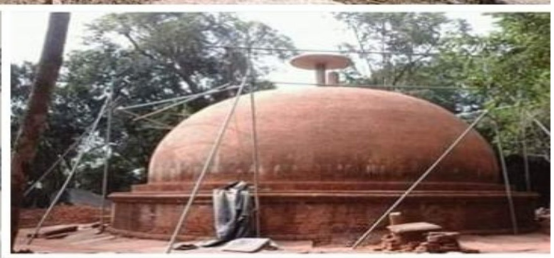
 

17. हजारों साल से सुनते आए हैं कि सम्राट असोक के पुत्र महिंद बौध धम्म के संदेशों को लेकर श्री लंका गए थे।

श्री लंका के एक मामूली स्तूप के एक मामूली पत्थर पर, जो अम्पारा जिले के Rajagala में स्थित है, इसका प्रमाण मिला है कि महिंद थेर श्री लंका गए थे।







18. मध्यप्रदेश के सिहोर जिले में पानगुरारिया बौद्ध विहार है। पानगुरारिया में अशोक के दो शिलालेख और एक यष्टि लेख मौजूद है। सभी की भाषा प्राकृत और लिपि ब्राह्मी है।

पहली तस्वीर अशोक के शिलालेख की है और दूसरी यष्टि लेख की। यष्टि लेख पर अशोक की बेटी संघमित्रा द्वारा दान दिए जाने का विवरण अंकित है, जिससे संघमित्रा की पुरातात्त्विक ऐतिहासिकता पुष्ट होती है।

अशोक के शिलालेख पर एक जो प्रमुख बात लिखी है, वह यह कि राजा, जो पियदसि नाम से जाने जाते थे, एक बार उपुनीथ विहार की तब यात्रा की, जब कुमार सम्व की मानेम देश की प्रशासनिक जिम्मेवारी थी।

कुमार सम्व संभवतः अशोक के परिवार के जान पड़ते हैं और मानेम देश सिहोर का इलाका रहा होगा।

आसपास में कई शैलाश्रय हैं। शैलाश्रय बौद्ध भिक्षुओं के आवास और साधना स्थल थे। स्थानीय भाषा में इसे सारू - मारू की कोठड़ी बोलते हैं। इसके आसपास छोटे - छोटे कई

स्तूप हैं और एक बड़ा स्तूप भी है। आप चित्र में स्तूपों को देख सकते हैं।

अंतिम तस्वीर अशोक के शिलालेख का लिपि - रेखांकन है, जिसमें लिखा है - " पियदसिनामराजा कुमार सम्व मानेम देसे उपुनीथ विहार याताया "।



19. नाम में भी कुछ रखा है।

अपनी जिस रानी का नाम सम्राट अशोक ने स्वर्णाक्षरों में पत्थरों (कौशांबी अभिलेख) पर लिखवाया है, वह रानी कालुवाकि थी जिस पर आज तक कोई भी साहित्यकार ने कलम नहीं चलाई है।

कालुवाकि के रानी शिलालेख पर लिखा है कि देवानंपियषा वचनेना सवत महमता वतविया ए हेता दुतियाये देवीये दाने अंबावडिका वा आलमे व दानगहे व ए वा पि अंने कीछि गनीयति ताये देविये षे नानि हेवं ... न ... दुतियाये देविये ति तीवलमातु कालुवाकिये।

इस शिलालेख में सम्राट अशोक ने अपनी दूसरी रानी तिवलमाता कालुवाकि की इस प्रार्थना को पूरी करने का महामात्य को आदेश देते हैं कि रानी जो भी आम्र - वाटिका, आराम, दानगृह या अन्य जो भी दान देती हैं, वे सभी उनके नाम में अंकित करें।

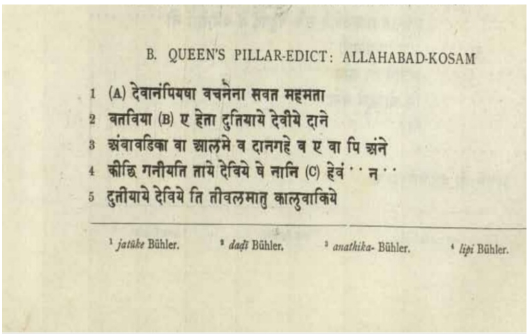
अशोक के पुरातत्व में इसी पुत्र का नाम मिलता है।

जिस रानी का कोई पुरातत्वीय सबूत नहीं है, वह रानी तिष्यरक्षिता है, जिस पर आज तक न जाने कितने नाटक, कहानियाँ एवं अन्य साहित्य लिखे गए हैं।

काश ! कालुवाकि का नाम ऋचा, श्रद्धा या कुछ ऐसा ही आर्यवादी होता !

समझा क्यों बुद्ध की पत्नी का असली नाम कच्चाना साहित्य से गायब है और बाद का दिया हुआ नाम यशोधरा विख्यात है।

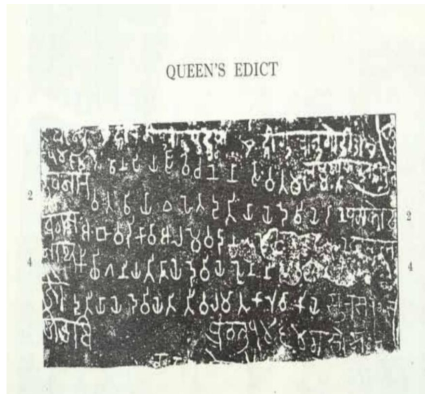
आखिर कच्चाना, कालुवाकि जैसे नाम गैर आर्यवादी जो ठहरे!



B. QUEEN'S PILLAR-EDICT: ALLAHABAD-KOSAM

1 (A) देवानंपियषा वचनेना सवत महमता
2 वतविया (B) ए हेता दुतियाये देवीये दाने
3 अंबावडिका वा आलमे व दानगहे व ए वा पि अंने
4 कीछि गनीयति ताये देविये षे नानि (C) हेवं ‥ न ‥
5 दुतीयाये देविये ति तीवलमातु कालुवाकिये

[1] *jatūke* Bühler. [2] *daḍī* Bühler. [3] *anathika-* Bühler. [4] *lipi* Bühler.



20. सम्राट अशोक के सिर्फ एक पुत्र का पुरातात्त्विक सबूत मिलता है। उस पुत्र का नाम तीवर/तीवल था।

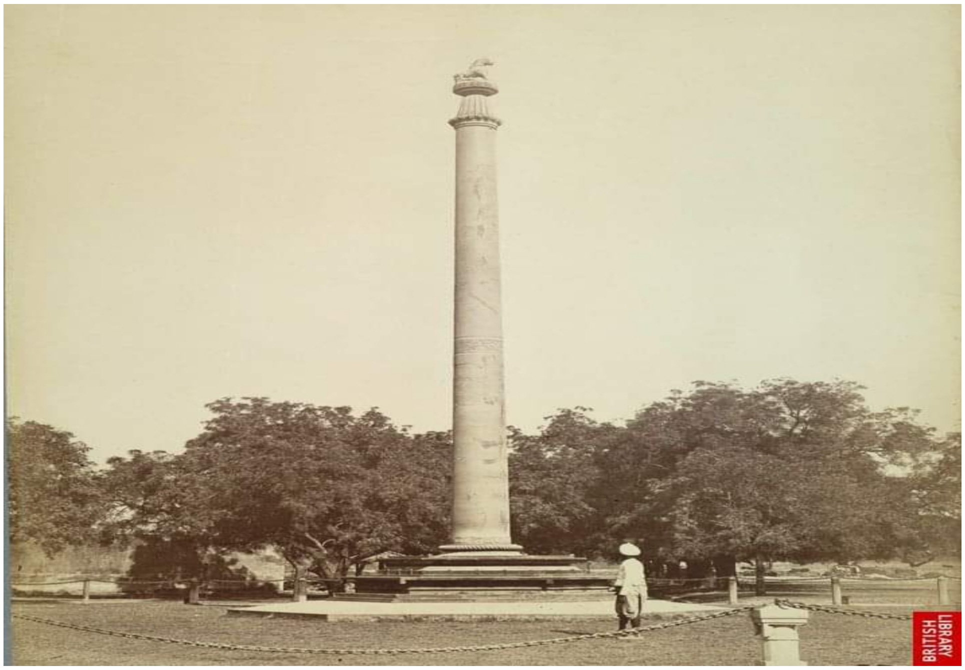
बाकी किसी भी उसके पुत्र का नाम शिलालेखों में नहीं मिलता है।

तीवर का नाम अपनी माँ के नाम के साथ इलाहाबाद के स्तंभ लेख पर खुदा हुआ है। तसवीर उसी स्तंभ लेख की है।

तीवर संभवतः अशोक का तीसरा पुत्र था। इसीलिए उसका नाम तीवर था।

जो भी हो, यह तो तय है कि एक पिता अपने पुत्र का नाम अच्छा- सा रखा होगा।

मगर संस्कृत में तीवर का अर्थ वर्णसंकर पुत्र होता है। शायद इस अर्थ में सम्राट अशोक अपने पुत्र का नाम नहीं रखा होगा। ये संस्कृत वालों ने तीवर का अर्थ बिगाड़ दिया है।



21. जिस यूनान के सिकंदर का इतिहास में ढोल पीटा जाता है, उसी यूनान का दूत मेगस्थनीज ने बताया है कि पटना में मौर्यों के शाही महल के मुकाबले फारसी साम्राज्य के सूसा तथा एकबटान के शाही महल कुछ नहीं थे और यह वही फारसी साम्राज्य है जो सिकंदर के अपने साम्राज्य से 40 गुना बड़ा था। अशोक का मूल्यांकन अभी बाकी है।



22. जिनका साम्राज्य दुनिया के 52 लाख वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला था।

जिनका शासन दुनिया की 33 फीसदी आबादी पर था।

वो सम्राट अशोक थे।



23. पश्चिमोत्तर भारत की जिस वैज्ञानिक सरहद को हजारों साल पहले सम्राट अशोक ने छू लिए थे, उसे छूने के लिए अंग्रेज तोप - बंदूक लिए ताजिंदगी ललचते रहे और नहीं छू पाए। वो सम्राट अशोक थे!

म्राज्य का नाम ➡ क्षेत्रफल ➡
जब सबसे ज्यादा विशाल रह

. **मौर्य साम्राज्य** ➡ 52 लाख वर्गकिलोमीटर ➡ 250 ईसवी पूर्व
. **मुगल सल्तनत** ➡ 40 लाख वर्गकिलोमीटर ➡ 1690 ईसवी
. **चोल राजवंश** ➡ 36 लाख वर्गकिलोमीटर ➡ 1030 ईसवी
. **गुप्त साम्राज्य** ➡ 35 लाख वर्गकिलोमीटर ➡ 400 ईसवी
. **दिल्ली सल्तनत** ➡ 32 लाख वर्गकिलोमीटर ➡ 1312 ईसवी
. **मराठा साम्राज्य** ➡ 28 लाख वर्गकिलोमीटर ➡ 1760 ईसवी
. **कुषाण साम्राज्य** ➡ 20 लाख वर्गकिलोमीटर ➡ 200 ईसवी
. **हर्ष साम्राज्य** ➡ 10 लाख वर्गकिलोमीटर ➡ 647 ईसवी

मौर्य साम्राज्य दक्षिण भारत के कुछ हिस्स को छोड़ कर पूरे भारतीय उपमहाद्वीप प फैला था। इसकी जनसंख्या तकरीबन 5 करोड़ थी जो उस समय संसार की कुल आबादी का 33 फीसदी हिस्सा थी।

मौर्य वंश के निम्नलिखित राजा हुए –

1. **चन्द्रगुप्त मौर्य,** 323-298 ईसा पू ➡ (25 वर्ष)
2. **बिन्दुसार,** 298-273 ईसा पूर्व ➡ (25 वर्ष)
3. **अशोक,** 273-232 ईसा पूर्व ➡ (वर्ष)
4. **दशरथ मौर्य,** 232-224 ईसा पूर्व (8 वर्ष)
5. **सम्प्रति,** 224-215 ईसा पूर्व ➡ (वर्ष)
6. **शालिसुक,** 215-202 ईसा पूर्व ➡ (13 वर्ष)
7. **देववर्मन्,** 202-195 ईसा पूर्व ➡ वर्ष)
8. **शतधन्वन्,** मौर्य 195-187 ईसा ➡ पूर्व (8 वर्ष)

24. हमें सबसे प्राचीन पुरातात्विक रिकार्ड में कनकमुनि, बुद्ध, प्रसेनजित और अशोक के जो नाम मिलते हैं, वे क्रमशः कोणागमन, बुध, पसेन और असोक मिलते हैं। कोणागमन, बुध, पसेन और असोक जैसी उच्चारण - रीति प्राकृत भाषा की है। ये सभी नाम इन व्यक्तियों के समय के हिसाब से निकटतम दूरी के हैं।

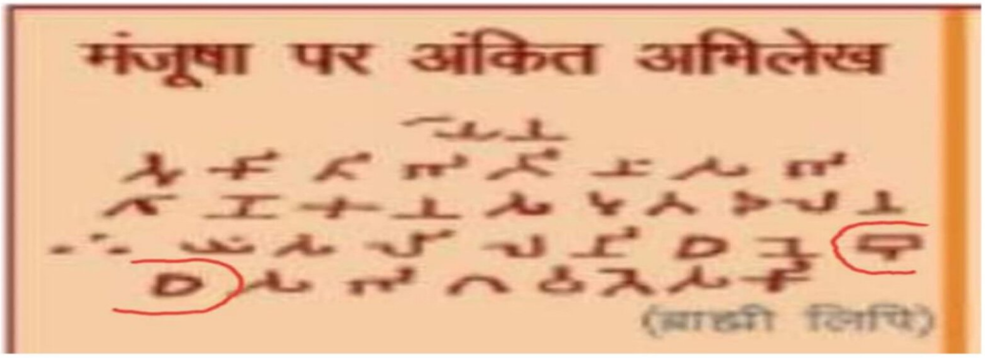
कनकमुनि, बुद्ध, प्रसेनजित और अशोक जैसी उच्चारण - रीति संस्कृत की है। प्राचीन पुरातात्विक रिकार्ड में इस उच्चारण - रीति के नाम नहीं मिलते हैं।

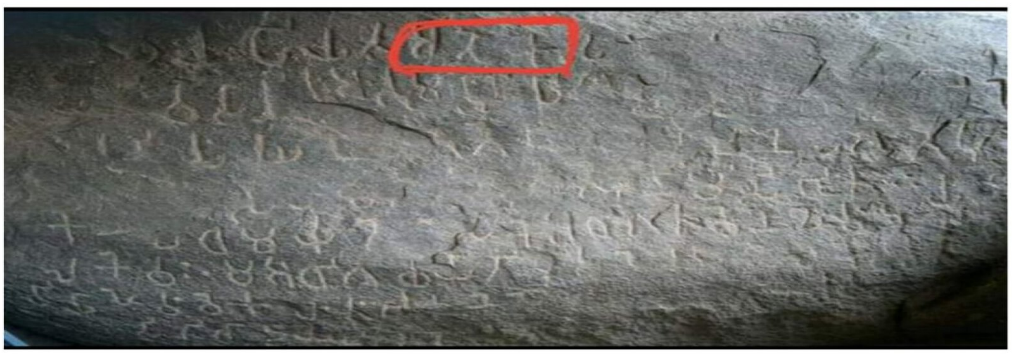
जाहिर है कि कोणागमन, बुध, पसेन और असोक जैसे प्राकृत भाषा के नामों को बाद में संस्कृत भाषा की उच्चारण - रीति में तब्दील किया गया है।

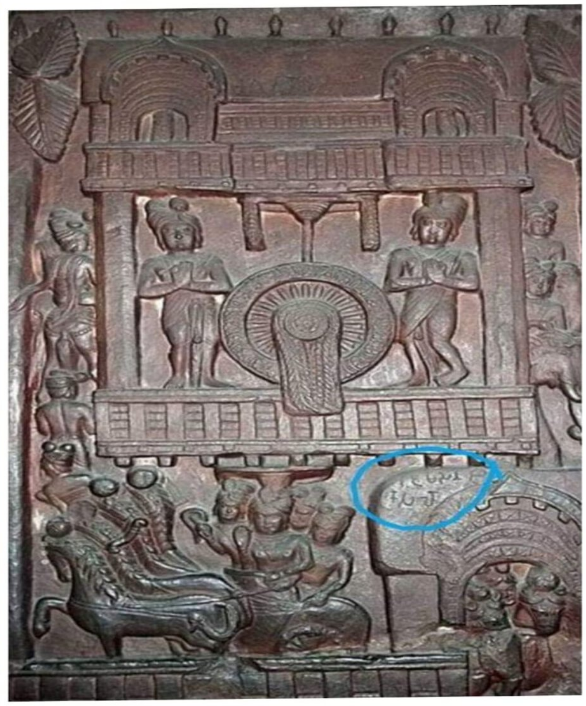
इससे साबित होता है कि संस्कृत का विकास प्राकृत से हुआ है।

प्रथम अभिलेख भरहुत से है, दूसरा पिपरहवा से, तीसरा पुनः भरहुत से और चौथा मास्की से। आप लाल घेरे में सभी चार नामों को पढ़ सकते हैं।

अशोक का वास्तविक नाम असोक था।



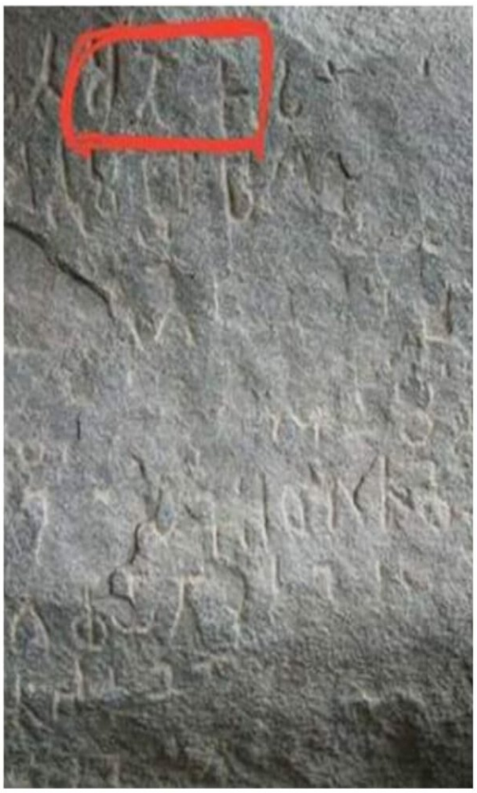


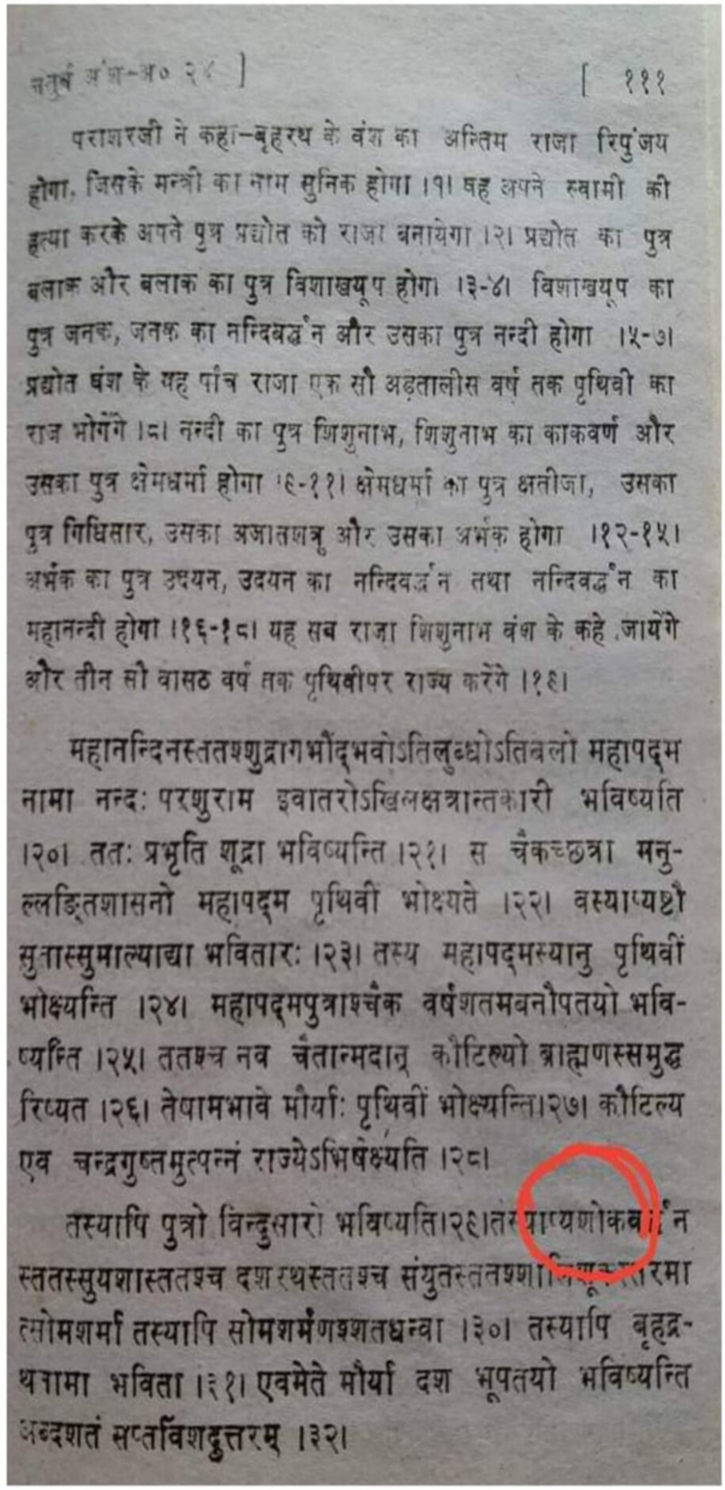
 

25. पहली तस्वीर मास्की शिलालेख की है। इसमें सम्राट अशोक ने अपना नाम लिखवाया है। अशोक का वास्तविक नाम " असोक " था। लाल घेरे में असोक लिखा है। तीनों लेटर बहुत स्पष्ट है। आप भी पढ़ लीजिए।

दूसरी तस्वीर में विष्णु पुराण का एक पन्ना है। आप देख सकते हैं कि संस्कृत साहित्य में असोक के वास्तविक नाम की जगह " अशोक " लिखा है। लाल घेरे में अशोक लिखा है। आप भी पढ़ लीजिए।

निष्कर्ष यह कि अशोक का वास्तविक नाम " असोक " था। संस्कृत में " असोक " शब्द का संस्कार कर " अशोक " किया गया है। मतलब कि असोक मूल शब्द है और अशोक कृत्रिम है। दूसरे शब्दों में असोक ही तत्सम है और अशोक उसका तद्भव है। असोक से अशोक बना है। इसीलिए मैं कहता हूँ कि प्राकृत का संस्कार कर या अपभ्रंश कर संस्कृत बनाई गई है। कोई कंफ्यूजन नहीं।





पराशरजी ने कहा—बृहद्रथ के वंश का अन्तिम राजा रिपुंजय होगा, जिसके मन्त्री का नाम सुनिक होगा ।१। वह अपने स्वामी की हत्या करके अपने पुत्र प्रद्योत को राजा बनायेगा ।२। प्रद्योत का पुत्र बलाक और बलाक का पुत्र विशाखयूप होगा ।३-४। विशाखयूप का पुत्र जनक, जनक का नन्दिवर्द्धन और उसका पुत्र नन्दी होगा ।५-७। प्रद्योत वंश के यह पाँच राजा एक सौ अड़तालीस वर्ष तक पृथिवी का राज भोगेंगे ।८। नन्दी का पुत्र शिशुनाभ, शिशुनाभ का काकवर्ण और उसका पुत्र क्षेमधर्मा होगा ।९-११। क्षेमधर्मा का पुत्र क्षतौजा, उसका पुत्र विधिसार, उसका अजातशत्रु और उसका अर्भक होगा ।१२-१५। अर्भक का पुत्र उदयन, उदयन का नन्दिवर्द्धन तथा नन्दिवर्द्धन का महानन्दी होगा ।१६-१८। यह सब राजा शिशुनाभ वंश के कहे जायेंगे और तीन सौ बासठ वर्ष तक पृथिवीपर राज्य करेंगे ।१९।

महानन्दिनस्ततश्शुद्रागर्भोद्भवोऽतिलुब्धोऽतिबलो महापद्म नामा नन्दः परशुराम इवातरोऽखिलक्षत्रान्तकारी भविष्यति ।२०। ततः प्रभृति शूद्रा भविष्यन्ति ।२१। स चैकच्छत्रा मनुल्लङ्घितशासनो महापद्म पृथिवीं भोक्ष्यते ।२२। तस्याप्यष्टौ सुतास्सुमाल्याद्या भवितारः ।२३। तस्य महापद्मस्यानु पृथिवीं भोक्ष्यन्ति ।२४। महापद्मपुत्राश्चैक वर्षशतमवनीपतयो भविष्यन्ति ।२५। ततश्च नव चैतान्नन्दान् कौटिल्यो ब्राह्मणस्समुद्धरिष्यत ।२६। तेषामभावे मौर्याः पृथिवीं भोक्ष्यन्ति।२७। कौटिल्य एव चन्द्रगुप्तमुत्पन्नं राज्येऽभिषेक्ष्यति ।२८।

तस्यापि पुत्रो विन्दुसारो भविष्यति।२९।तस्याप्यशोकवर्द्धन स्ततस्सुयशास्ततश्च दशरथस्ततश्च संयुतस्ततश्शालिशूकस्तस्मात्सोमशर्मा तस्यापि सोमशर्मणश्शतधन्वा ।३०। तस्यापि बृहद्रथनामा भविता ।३१। एवमेते मौर्या दश भूपतयो भविष्यन्ति अब्दशतं सप्तत्रिंशदुत्तरम् ।३२।

26. प्रस्तुत मूर्ति अफगानिस्तान के हद्दा क्षेत्र से मिली थी।

इसे डेविड टी. ओस्ले ने डैलस म्यूजियम आॅफ आर्ट, टेक्सास को गिफ्ट किया है।

मूर्ति की प्रामाणिक पहचान नहीं हो पाई है। मेरा अनुमान है कि ये कोई दूसरा बोधिसत्व नहीं हैं बल्कि खुद सम्राट अशोक हैं, जिन्होंने लिखित रूप से अपने को बौद्ध शाक्य बताया है और ये चिंतन- मुद्रा बौद्ध शाक्य अशोक की है।

ये सिंहासन के छोरों पर वही सिंह हैं जो अशोक के सिंह-स्तंभ पर हैं और ये दोनों सिरों के सिंह अपने सिंहासन नाम को सार्थक करते हैं



27. सम्राट अशोक के पुत्र महिंद थेर पाटलिपुत्र में कहाँ रहते थे?

जैसा कि मैंने फाहियान के हवाले से बताया है कि सम्राट अशोक के एक छोटे भाई अर्हत होकर राजगीर के गृद्धकूट पर्वत पर रहते थे।

सम्राट अशोक अपने छोटे भाई को पाटलिपुत्र लाना चाहते थे। मगर गृद्धकूट की शांति को छोड़ कर उनके छोटे भाई पाटलिपुत्र आना नहीं चाहते थे।

सम्राट अशोक ने छोटे भाई के लिए पाटलिपुत्र में गृद्धकूट की भाँति कृत्रिम पर्वत और उसमें गुफा बनवा डाले और छोटे भाई से आग्रह किए कि पाटलिपुत्र चलो।

मगर संतन को कहाँ सीकरी (फतेहपुर सीकरी) सों काम अर्थात संत को राजधानी से क्या लेना-देना।

ह्वेनसांग के विवरण से ज्ञात होता है कि छोटे भाई पाटलिपुत्र नहीं आए। तब सम्राट अशोक के पुत्र महिंद थेर उसी कृत्रिम पर्वत पर बने गुफानुमा आवास में रहने लगे।

पाटलिपुत्र का वहीं कृत्रिम पर्वत पर बने गुफानुमा आवास आजकल के पटना में स्थित भिखना पहाड़ी नामक मुहल्ला है।

भिखना पहाड़ी का मतलब हुआ - " भिक्खु की पहाड़ी "। भिखुनी का पुलिंग रूप भिखना है।

लॉरेंस वाडेल 19 वीं सदी के आखिरी दशक में भिखना पहाड़ी को देखने गए, जाँच किए और अपनी पुस्तक " डिस्कवरी आॅफ दि इग्जैक्ट साइट आॅफ अशोकाज क्लासिक कैपिटल आॅफ पाटलिपुत्र " (1892) में लिखे कि सचमुच यह एक कृत्रिम पहाड़ी है। कोई 40 फीट ऊँची है और कोई 1 मील के घेरे में है।

फिलहाल यहाँ पटना के नवाब साहब का निवास है। बड़े - बड़े पत्थर बिखरे पड़े हैं। ईंटों का मलबा है। पहाड़ी के उत्तरी - पूरबी कोने पर मठ है। मठ में जिसे पूजा जाता है, उसे लोग " भिखना कुँवर " कहते हैं। भिखना कुँवर अर्थात वहीं राजकुमार महिंद।

लॉरेंस वाडेल ने भिखना कुँवर की पूजा करने वाली कुछेक जातियों का भी जिक्र किए हैं, जिनमें दुसाध, ग्वाल, अहीर आदि प्रमुख हैं। ये लोग दूध, मिठाई, फल, फूल, रेशमी धागों आदि से भिखना कुँवर को पूजते थे।

अशोक के राजमहल से यह उत्तर की ओर है। बगल में कोई 2 किलोमीटर की दूरी पर गंगा के किनारे महेंद्रू घाट है। आसपास महेंद्रू मुहल्ला फैला हुआ है। महेंद्रू मुहल्ला कुँवर महिंद थेर की स्मृति कराता है।

लॉरेंस वाडेल ब्रिटिश इंडियन आर्मी में मेडिकल आॅफिसर थे। बाद में प्रोफेसर हुए। अन्वेषक थे। पटना के अगम कुआँ का अन्वेषण और उसे सम्राट अशोक से पहली बार जोड़ने का श्रेय लॉरेंस वाडेल को है।

लॉरेंस वाडेल ने कुँवर महिंद थेर के पाटलिपुत्र स्थित आवास की यह तस्वीर अपनी उस पुस्तक में दी है।

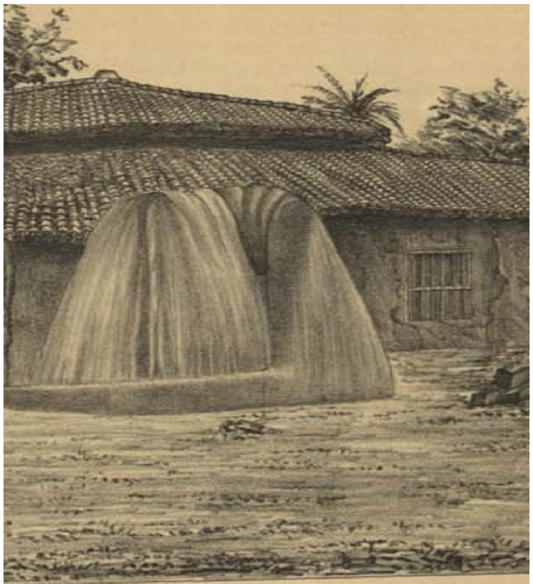


IMAGE OF
PRINCE MAHENDRA'S HERMITAGE HILL.
(from a Photograph).

2. अशोक : शिलालेख, स्तंभ और स्तूप

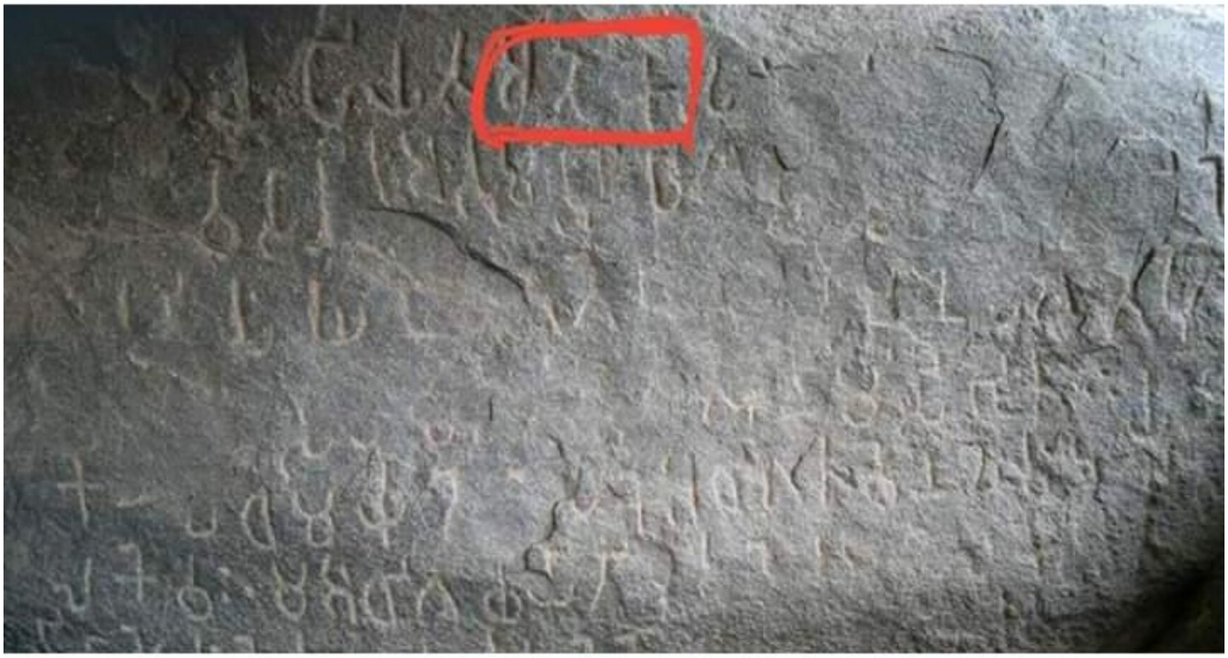
1.सम्राट अशोक विरोधी खेमे से यह अफवाह उठती रही है कि अशोक के शिलालेखों पर न तो अशोक का नाम अंकित है और न बुद्ध का।

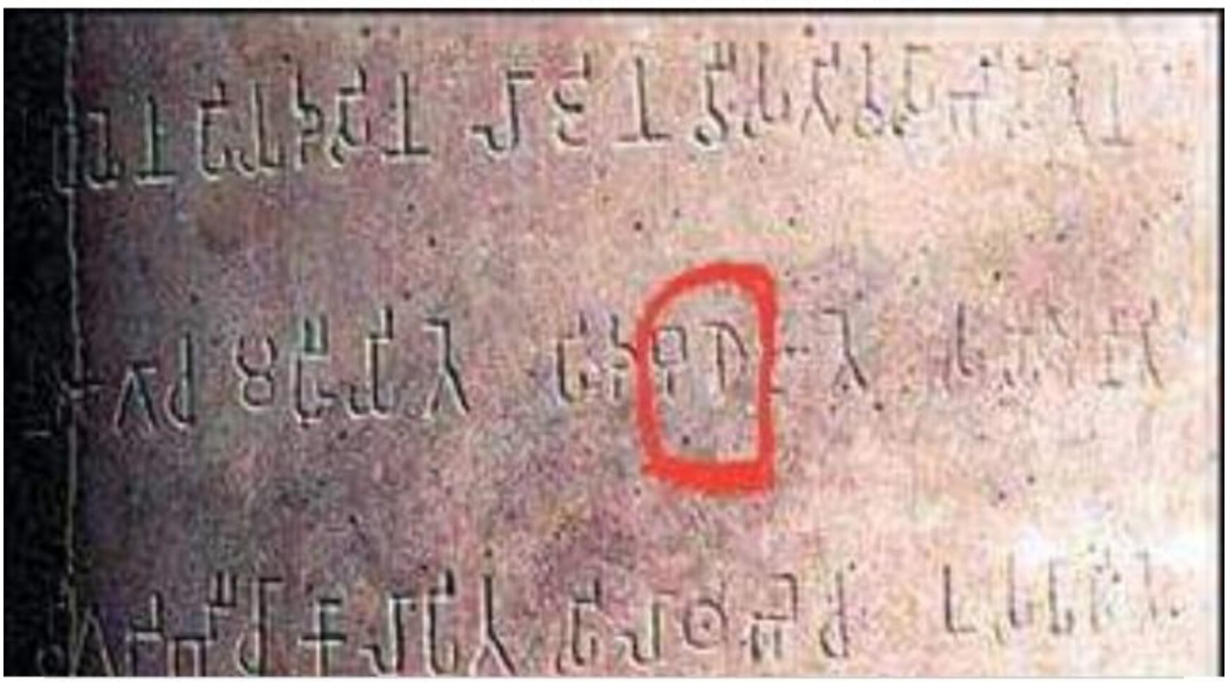
मगर यह अफवाह है। बतौर उदाहरण यहाँ अशोक के दो शिलालेख प्रस्तुत हैं।

पहला शिलालेख कर्नाटक के रायचूर जिले की मस्की नदी के तट पर स्थित नगर मास्की का मास्की शिलालेख है। इस शिलालेख पर अशोक का नाम अंकित है। आपको अशोक को लेकर कोई कंफ्यूजन न हो, इसे दूर करने के लिए अशोक के नाम से पहले " देवानंपिय " लिखा हुआ है। पढ़ने के लिए तस्वीर में " असोक " नाम को लाल घेरे में कर दिया गया है।

दूसरा अभिलेख एक स्तंभ पर है। इसे रुम्मिनदेई स्तंभलेख कहा जाता है। यह नेपाल -भारत की सीमा पर है। इस अभिलेख में बुद्ध हैं और आपको बुद्ध को लेकर कोई कंफ्यूजन न हो, इसके लिए बुद्ध के आगे शाक्यमुनी लिखा हुआ है। पढ़ने के लिए तस्वीर में " बुध " नाम को लाल घेरे में कर दिया गया है।

सम्राट अशोक काबिल थे। वे जानते थे कि शिलालेखों की गलत व्याख्या हो सकती है। शायद इसीलिए अशोक से पहले देवानंपिय और बुद्ध के बाद शाक्यमुनी जुड़ा हुआ है ताकि आनेवाली पीढ़ी कोई इस तरह की अफवाह न उठाए।

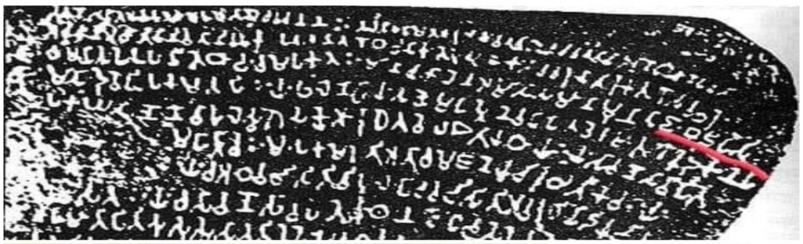




2.कई लोगों को आपत्ति है कि सम्राट अशोक ने भारत को जंबूद्वीप नहीं कहा है। जान लीजिए कि अशोक ने कई शिलालेखों में भारत को " जंबुदीपसि " ही लिखवाया है।

रूपनाथ, सासाराम, बसहा, गुजर्रा, गवीमठ, मास्की, वैराट, ब्रह्मगिरि, सिद्धपुर आदि सभी लघु शिलालेखों में भारत के लिए " जंबुदीपसि " लिखा है।

जंबुदीपसि लिखा हुआ दो उदाहरण यहाँ प्रस्तुत किए जा रहे हैं। प्रथम ब्रह्मगिरि लघु शिलालेख है और दूसरा रूपनाथ लघु शिलालेख है। जंबुदीपसि लाल रेखा से अंडरलाइन किया हुआ है।





3. सम्राट अशोक का एक लघु शिलालेख सिद्धापुरा में है। सिद्धापुरा कर्नाटक के चित्रदुर्ग जिले में है।

सिद्धापुरा शिलालेख के लेखक (लिपिकार) चपड़ हैं। चपड़ अशोक के दक्षिण भारत के शिलालेखों के भी लेखक हैं।

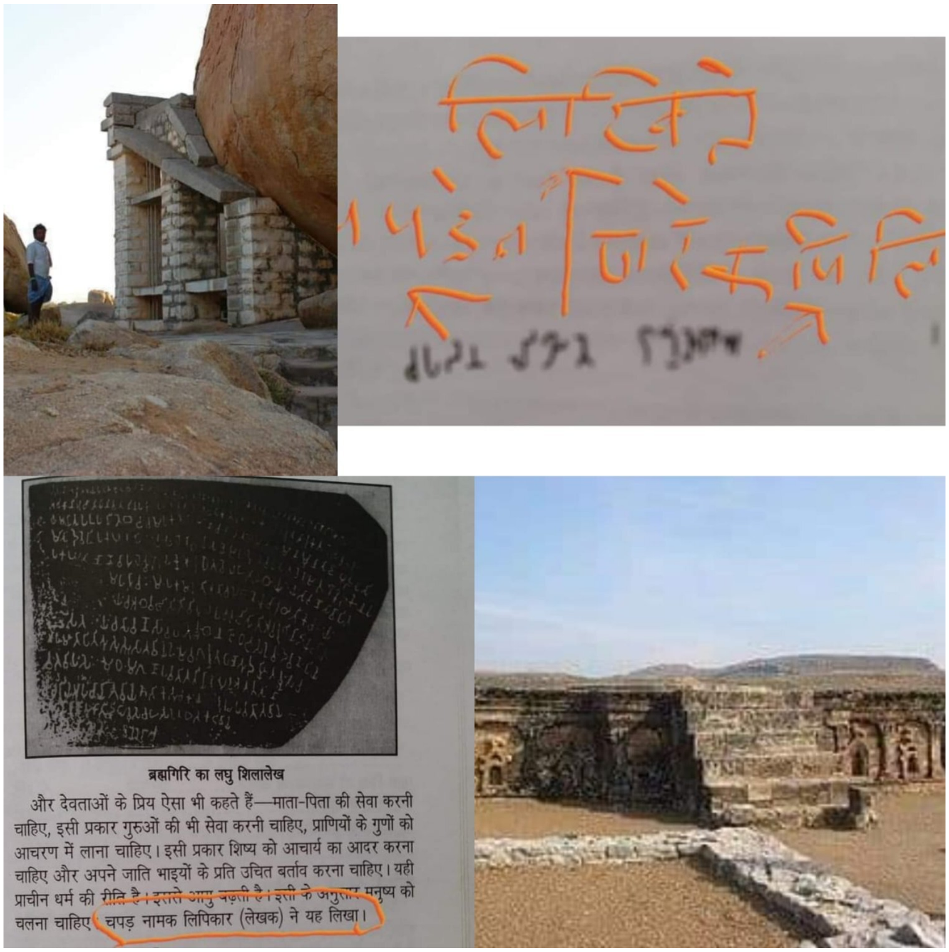
किंतु वे दक्षिण भारत के नहीं थे। वस्तुतः वे पश्चिमोत्तर भारत के निवासी थे।

कहा जाता है कि लेखक जहाँ कहीं का भी होता है, उसकी भाषा और लिपि पर कहीं न कहीं उसकी मातृभाषा और लिपि की छाप होती है।

सिद्धापुरा शिलालेख पूरी तरह से ब्राह्मी लिपि में लिखित है। मगर अंत में चपड़ ने " लिपिकार " को खरोष्ठी लिपि में लिख दिए हैं - दाएँ से बाएँ की ओर।

खरोष्ठी का प्रचलन भारत के पश्चिमोत्तर में गांधार क्षेत्र में था। तक्षशिला उसकी गतिविधियों का बड़ा केंद्र था।

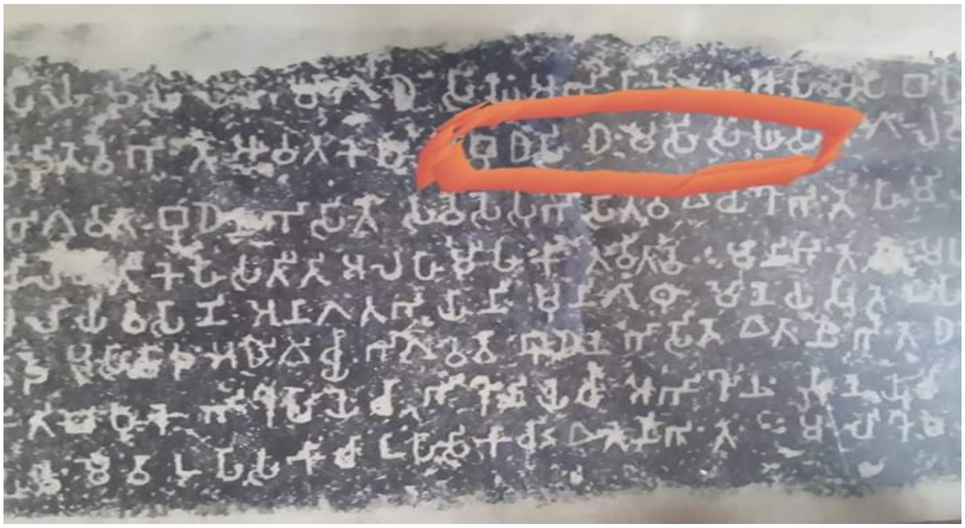
कोई शक नहीं कि चपड़ का यह खरोष्ठी प्रेम उन्हें तक्षशिला की ओर खींच ले जाता है। वहीं तक्षशिला जिसे चाणक्य से जोड़ा जाता है।



4. लाल घेरे में 9 अक्षर हैं - बुधसि धंमसि संघसि।

यहीं अशोक का भाब्रू लघु शिलालेख है।

सम्राट अशोक की आस्था बुध, धम्म और संघ में थी।

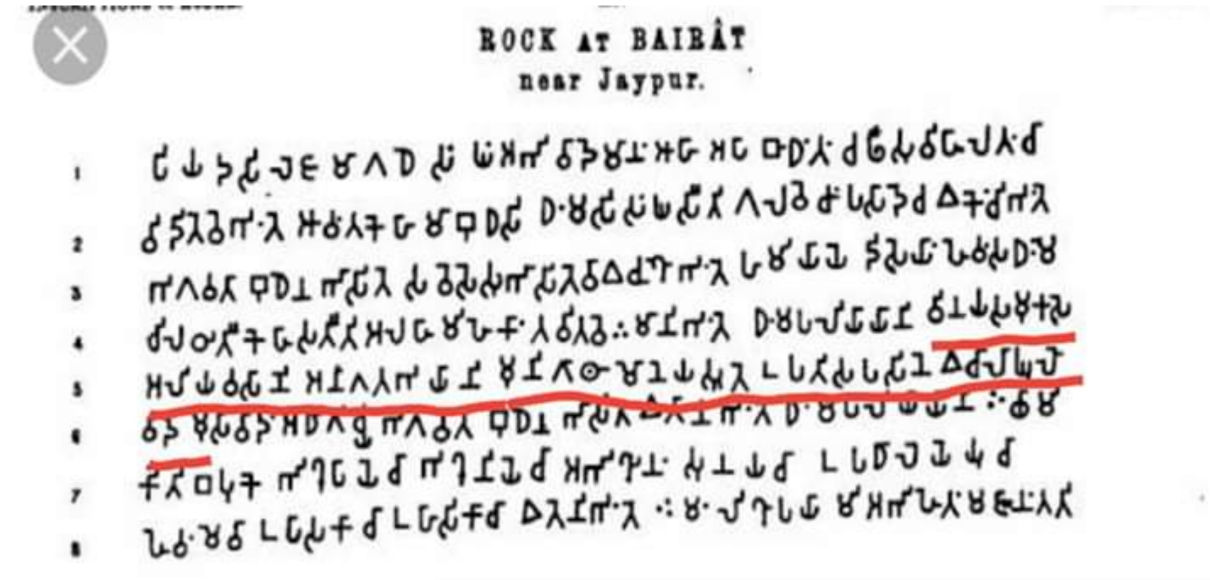


5. मौखिक रूप से कोई चाहे जितनी भी डींग हाँक ले, पुरातात्विक दृष्टिकोण से भारत की सबसे प्राचीन किताबें बौद्ध साहित्य की हैं। ये मानना होगा।

कारण कि इसके सबूत पत्थरों पर लिखित हैं। अशोक के कलकत्ता - बैराठ शिलालेख पर सात सुत्तों का नाम लिखा है, वे हैं - विनयसमुकस, अलियवसाणि, अनागतभयानि, मुनिगाथा, मोनेयसूते, उपतिसपसिने और लाघुलोवादे।

ये सातों सुत्त बौद्ध साहित्य की हैं। अभी तक जितनी किताबों को सबसे प्राचीन होने का दावा किया गया है, उसके सबसे अधिक प्राचीन होने के पुरातात्विक सबूत नहीं मिले हैं।

यह शिलालेख पहले राजस्थान के बैराठ में था, लेकिन अब इंडियन म्यूजियम, कलकत्ता में है।सातों सुत्त के नाम को लाल से नीचे रेखांकित कर दिया गया है। आप भी पढ़ सकते हैं।

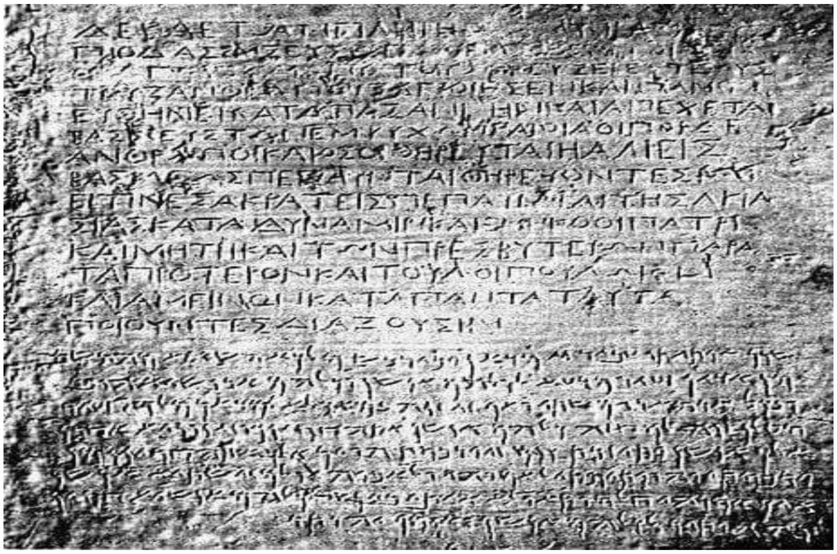


6. बुद्ध के वचनों का सर्वाधिक प्रामाणिक संकलन सम्राट अशोक के अपने अभिलेखों में कराया है।

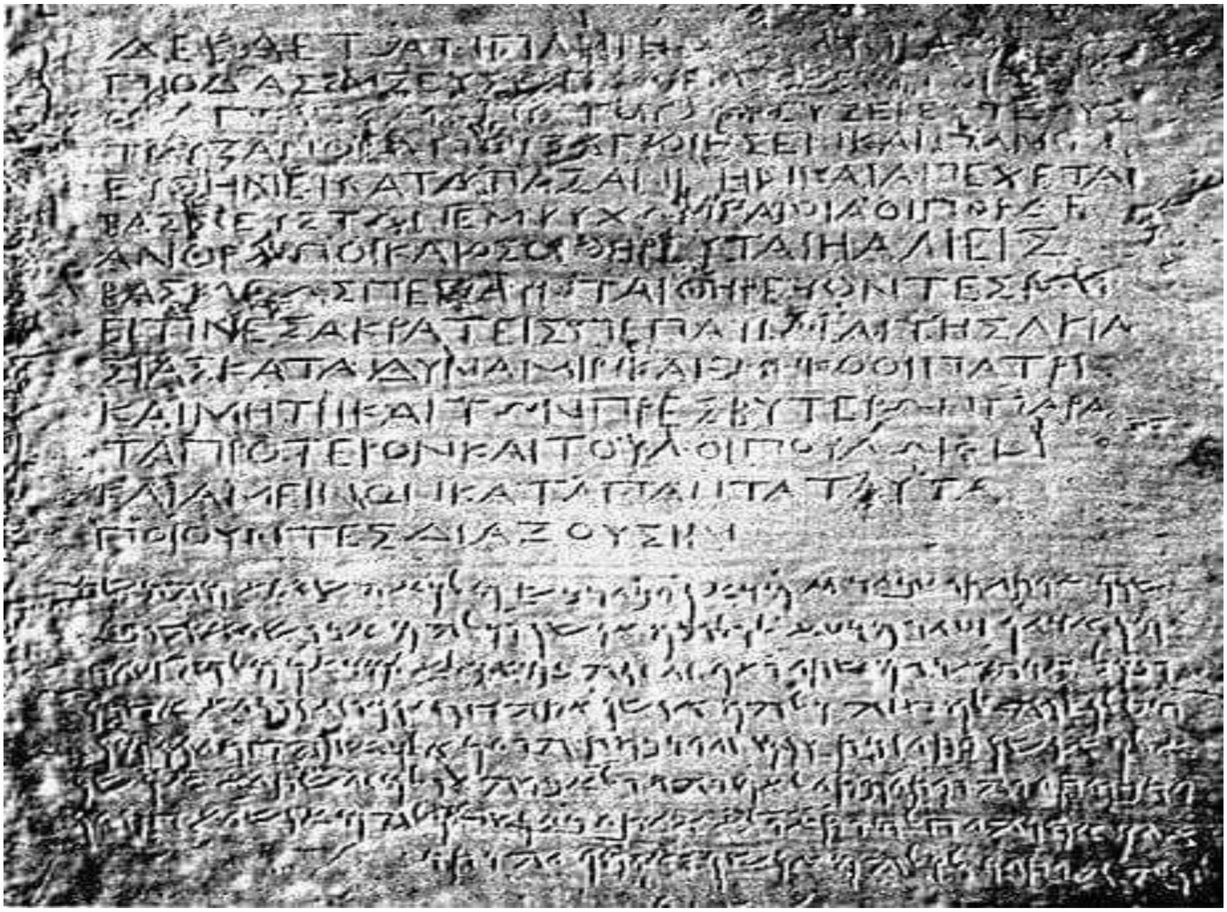
अशोक के शिलालेखों का लेखन काल बुद्ध - काल के सर्वाधिक निकट है। इसमें मिलावट की संभावना कम है। इसलिए भी कम है कि ये पत्थरों पर लिखे गए हैं।

यह भी कि पुरातात्विक दृष्टिकोण से भारत में पहला अनुवाद अशोक द्वारा ही कराए मिलते हैं।

लिप्यंतरण के भी नमूने अशोक के अभिलेखों में ही मिलते हैं।



7. अशोक के " धम्म " का अनुवाद " रिलिजन " (Religion) करना भाषा के दृष्टिकोण से गलत है। खुद अशोक ने " धम्म " का अनुवाद ग्रीक में कराया है। यह अनुवाद उसके द्विभाषीय कंधार शिलालेख पर अंकित है। उसने " धम्म " का अनुवाद ग्रीक में " युसेबेइया " कराया है, जबकि ग्रीक में " रिलिजन " को " थ्रिस्किया " कहा जाता है। " रिलिजन " में ईश्वर या देवताओं के अस्तित्व में विश्वास जरूरी होता है, जबकि " धम्म " या " युसेबेइया " में यह जरूरी नहीं हैं।



8. किसी ने लिखा कि जब संस्कृत भाषी चाणक्य मौर्य राजाओं से संवाद नहीं करता था, तब यूनानी भाषी मेगास्थनीज कैसे करता था ?

भाई, अशोक ने ब्राह्मी, खरोष्ठी, अरामाई और यूनानी चारों में अपना अभिलेख लिखवाया है।

अरामाई और यूनानी में उसका द्विभाषीय राज्यादेश भी है।

मौर्यों के दरबार में सभी के दुभाषिए थे, यूनानी के भी।संस्कृत के दुभाषिए नहीं थे। संस्कृत थी ही नहीं।

इसलिए अशोक का कोई भी अभिलेख संस्कृत में नहीं है और न अभिलेखों में एक भी शब्द संस्कृत का है। फिर संस्कृत दुभाषिए का तो सवाल ही नहीं उठता है।

आप समझ गए होंगे कि मौर्य राजाओं से यूनानी राजदूत मेगास्थनीज कैसे संवाद करता था।

ये अशोक का यूनानी और अरामाई में द्विभाषीय अभिलेख देख लीजिए।



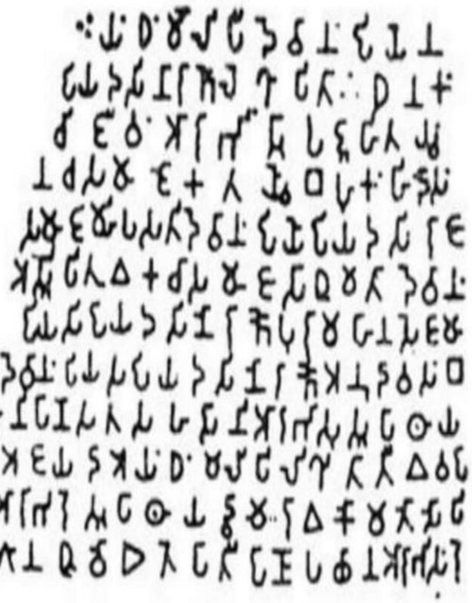
कांधार में मिला यूनानी और अरामाई का द्विभाषीय शिलालेख

9. सम्राट अशोक के जिस शिलालेख को पढ़कर इतिहासकारों ने यज्ञ और हवन में पशु-वध किए जाने का तूफान खड़ा किया है, वह उनका प्रथम शिलालेख है, जिसमें कहीं भी यज्ञ और हवन का उल्लेख नहीं है।

इसलिए अशोक के शिलालेखों की मनमानी व्याख्या कर इसे वैदिक यज्ञ और संस्कृति से जोड़ना बंद करें इतिहासकार!!!

लिप्यंतर

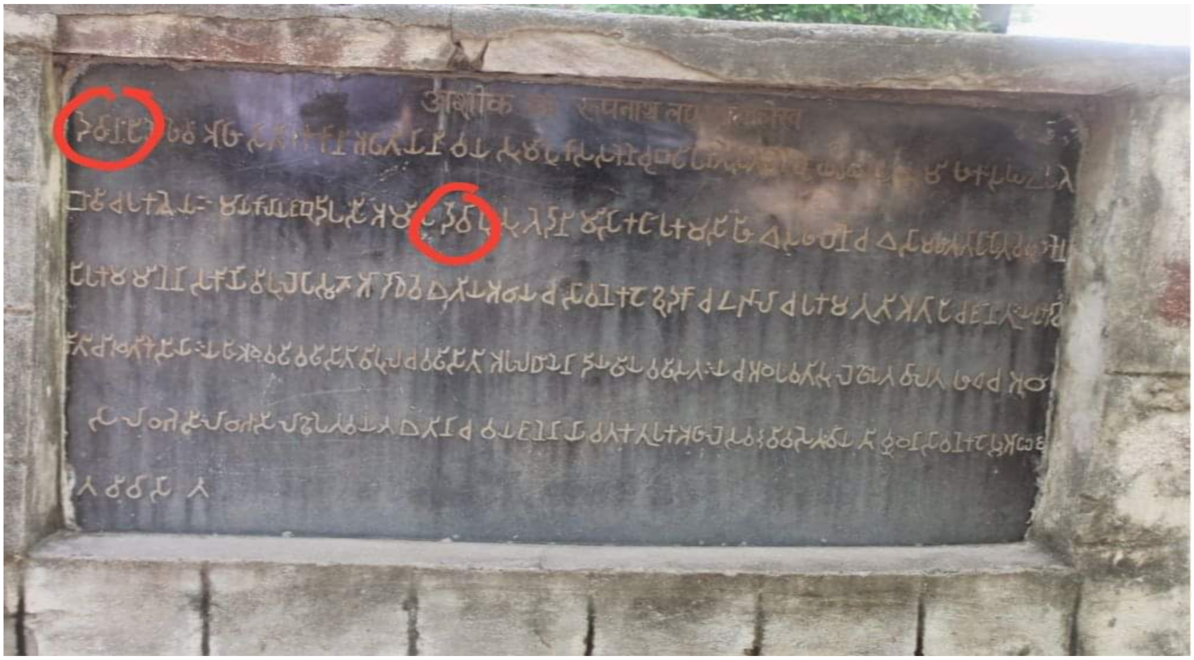
1. इयं धंमलिपि देवानंप्रियेन
2. प्रियदसिना राजा लेखापिता [।] इध न किं
3. चि जीवं आरभित्पा प्रजूहितव्यं [।]
4. न च समाजो कतव्यो [।] बहुकं हि दोसं
5. समाजम्हि पसति देवानंप्रियो प्रियदसि राजा [।]
6. अस्ति पि तु एकचा समाजा साधुमता देवानं
7. प्रियस प्रियदसिनो राञो [।] पुरा महानसम्हि
8. देवानंप्रियस प्रियदसिनो राञो अनुदिवसं ब
9. हूनि प्राणसतसहस्त्रानि आरभिसु सूपाथाय [।]
10. से अज यदा अयं धंमलिपि लिखिता ती एव प्रा
11. णा आरभरे सूपाथाय द्वो मोरा एको मगो सो पि
12. मगो न ध्रुवो [।] एते पि त्री प्राणा पछा न आरभिसरे [।।]



अशोक का गिरनार का प्रथम शिलालेख

10. जब सम्राट अशोक के किसी भी शिलालेख में बुद्ध को छोड़कर किसी देवी - देवता का नाम है ही नहीं तो फिर सम्राट अशोक को देवताओं के प्रिय राजा कहने का क्या मतलब ?

बुद्धप्रिय राजा अशोक कहने से संदर्भ जुड़ता है।



11. तो मैं इसीलिए कहता हूँ कि देवानंपियेन का मतलब बुद्ध प्रिय राजा (अशोक) होगा। अर्थात वह राजा जिनको बुद्ध प्रिय हों।

देवताओं के प्रिय राजा (अशोक) नहीं होगा।

जो संस्कृत साहित्य देवताओं की स्तुतियों से भरा पड़ा है, वह भला देवानांमप्रिये इति च मूर्खे क्यों कहेगा?

अर्थात देवानांमप्रिये का अर्थ मूर्ख होता है, यह कहकर अपने पैरों में कुल्हाड़ी क्यों मारेगा?

जब देवताओं का प्रिय होने पर आदमी मूर्ख ही हो जाएगा, तब वह विभिन्न देवताओं का जाप क्यों करेगा?

वस्तुतः देवानंपियेन में जो देव है, वह बुद्ध के लिए आया है, तभी संस्कृत साहित्य में ऐसा अनादर हुआ है।

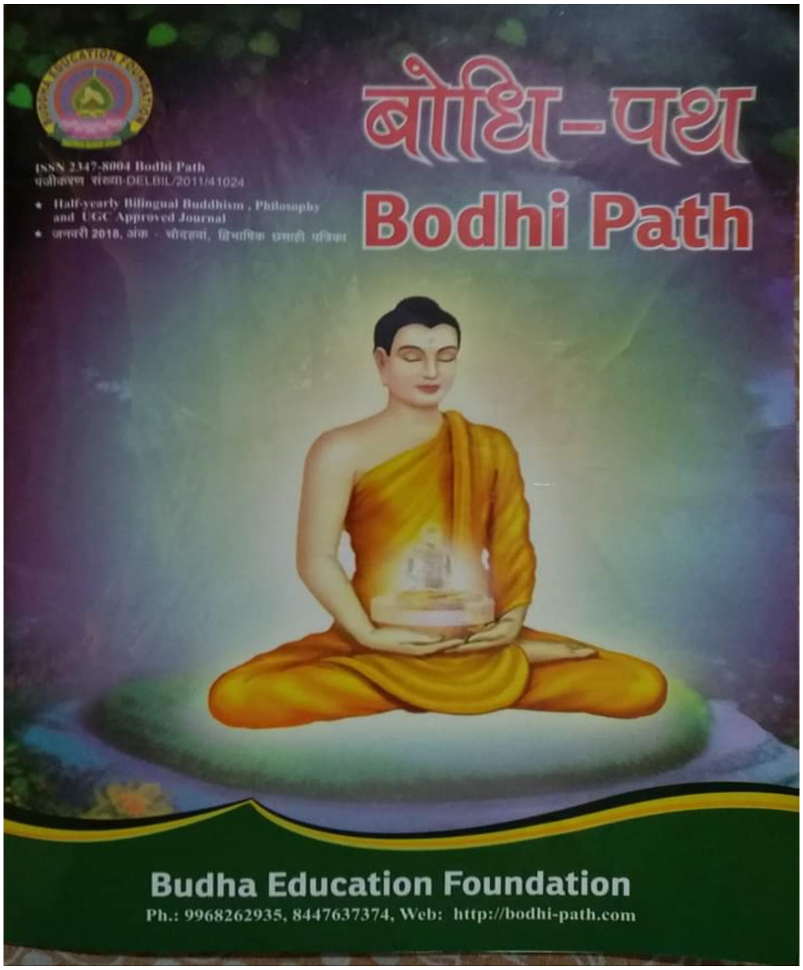


12. मैंने " बोधि - पथ " पत्रिका पलटी तो सबसे पहले नव नालंदा महाविहार के डा. भिक्षु प्रज्ञापाल का लेख पढ़ा।

लेख, अर्थ परिवर्तन का घृण्य - सिद्धांत में उन्होंने बताया है कि किस प्रकार संस्कृत आचार्यों ने देवानांमप्रिय का अर्थ मूर्ख किया है।

कात्यायन, कैयट से लेकर भट्टो जी दीक्षित तक ने देवानांमप्रिय का अर्थ मूर्ख किया है। कात्यायन ने लिखा है कि देवानांमप्रिये इति च मूर्खे अर्थात देवानांप्रिय का अर्थ मूर्ख है।

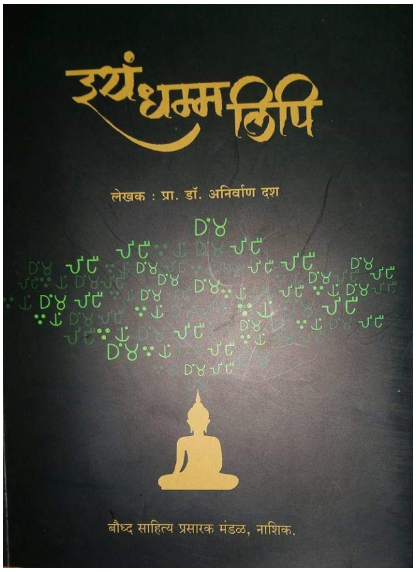
इतिहासकार बताते हैं कि जेम्स प्रिसेप के द्वारा शिलालेखों के प्रथम पाठन (1834 - 35) के बाद सम्राट अशोक इतिहास में उभर कर सामने आए। मगर मन में जो बात उभरती है, वह यह कि इतने सारे संस्कृत के आचार्य देवानांमप्रिय के मूर्ख अर्थ से परिचित कैसे हुए?



13. अशोक के अभिलेख में कहीं भी ब्राह्मी लिपि नहीं लिखा है।

हर जगह अभिलेख की लिपि को धम्म लिपि कहा गया है।

फिर भी इतिहासकार अशोक के शिलालेखों की लिपि को ब्राह्मी लिपि बताते हैं।

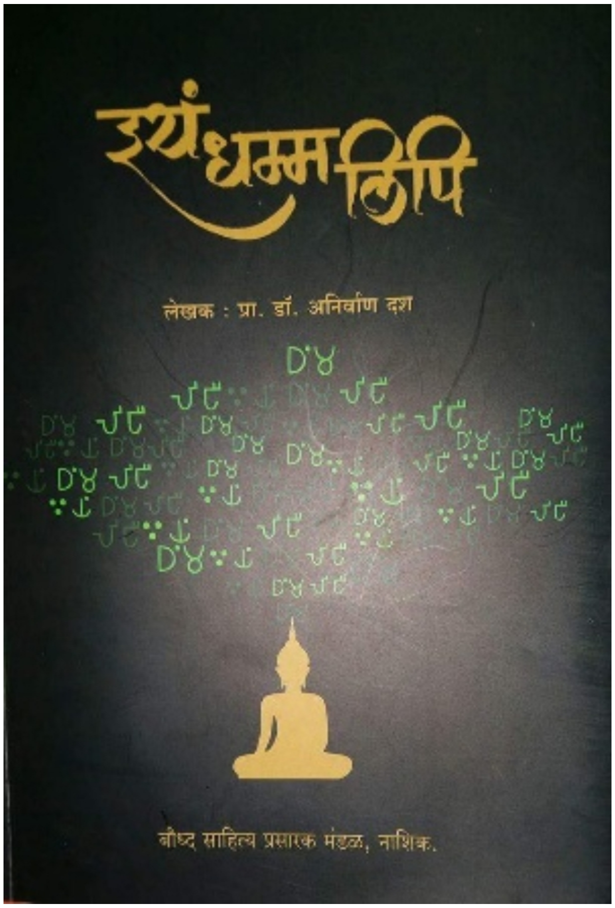


14. मगध क्षेत्र में जीभ बिराकर " लिबिर लिबिर " किसी को चिढ़ाने के लिए किया जाता है।

ये क्या था लिबिर ?

वही, अशोक के अभिलेखों को लिखने वाले लिपिकार जिन्हें " लिबिर " कहा जाता था।

जिन्हें लिखने का ज्ञान नहीं था, वे लिखने वाले को " लिबिर लिबिर " कहते थे।



15. पुरातत्व बताता है कि पहले धंम, फिर ध्रम और आखिर में धर्म बना, मगर आचार्य लोग उल्टा बताते हैं कि पहले धर्म, फिर धंम बना।

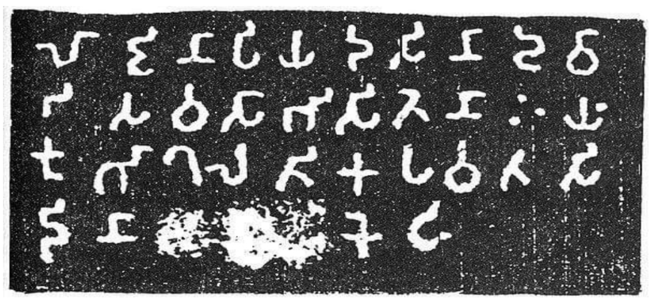


16. नीचे की तस्वीर अशोक के बराबर गुफालेख की है जिसमें लिखा है कि 12 वें वर्ष में राजा प्रियदर्शी ने खलतिक पर्वत पर यह गुफा आजीविकों को प्रदान की है।

आप देख सकते हैं कि इस गुफालेख के सभी शब्द सुरक्षित हैं। सिर्फ एक शब्द को मिटाने की कोशिश है और वह शब्द है - " आजीविक " ।

सिर्फ आजीविक शब्द को मिटा देने से और उसकी जगह किसी दूसरे संप्रदाय का नाम डाल देने से यह गुफा उसी संप्रदाय का हो जाता। बाकी शब्दों में छेड़छाड़ की जरूरत ही नहीं है।

कोई पढ़ रहा था और पढ़कर सही जगह पर हाथ डाला था, मगर सफलता हाथ नही लगी।



17. कभी - कभी विध्वंस भी इतिहास बदलने का कारण होता है। बात 1986 की है। कर्नाटक के गुलबर्गा जिले में भीमा नदी के तट पर सनाथी (सन्नति) है। सनाथी में एक मंदिर है। मंदिर में चंद्रलांबा देवी की मूर्ति है।

एक दिन संयोगवश मंदिर की छत ढहकर मूर्ति पर आ गिरी। मूर्ति टूट गई, फर्श भी टूटा और एक नया इतिहास उभरकर सामने आया।

मंदिर के ध्वंसावशेषों से अशोक के चार शिलालेख सामने आए। इन्हीं शिलालेखों से मंदिर का फर्श और फाउण्डेशन बने हुए थे। इनमें से एक शिलालेख का इस्तेमाल मूर्ति रखने की चौकी के रूप में किया गया था।

फिर पुरातत्व विभाग ने आसपास के क्षेत्र में खुदाई आरंभ की। एक विराट बौद्ध भारत सामने आया। बड़ा - सा महास्तूप ... अनेक वोटिव स्तूप ... चैत्यगृह ... अनेक खड़ी - बैठी

बुद्ध की मूर्तियाँ ... धम्म चक्र ... सैकड़ों ब्राह्मी अभिलेख ... जातक कथाओं का अंकन ... सिक्के ...रेलिंग के ध्वंसावशेष ... अनेक!!!

यहीं से अशोक की वो मूर्ति भी मिली है, जिसके ऊपर बतौर शीर्षक दक्षिण की ब्राह्मी लिपि में " राया असोक " लिखा है।



18. देउर कोठार मध्य प्रदेश के रीवा जिले में स्थित बौद्ध स्थल है। इसकी पहली जानकारी 1982 में मिली। 1999 - 2000 में खुदाई हुई। खुदाई में लगभग 50 छोटे-बड़े स्तूप सामने आए।

देउर मूलतः प्राकृत का देहुर है। देहुर का संस्कृत रूप देवगृह है। देउर कोठार का अर्थ है - देवगृहों का भंडार। कोठार का अर्थ भंडार है। देव मूल रूप से बुद्ध का सूचक है जो हमें देवानंपिय में प्राप्त होता है।

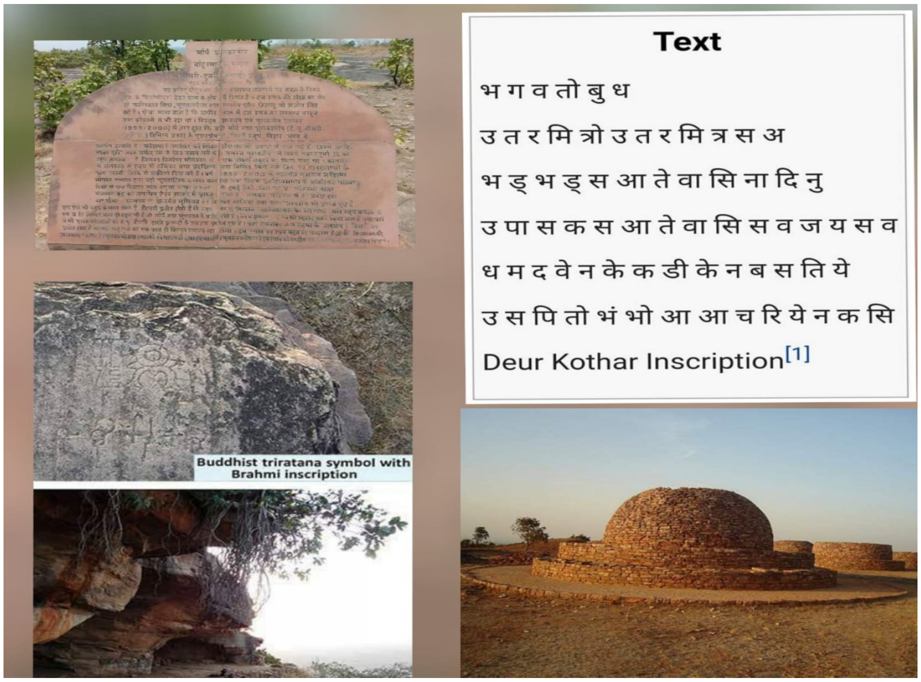
देउर कोठार वाक़ई स्तूपों का भंडार है। यह बात खुदाई से पहले भी वहाँ की जनता जानती थी। तभी हमारे पूर्वजों ने उसका नाम देउर कोठार दिया है।

इतिहासकारों ने माना है कि अनेक स्तूप मौर्यकालीन हैं। बगल में बौद्ध भिक्षुओं के शैलाश्रय हैं। शैलाश्रय में शैलचित्र हैं। मगर वहाँ के शैलचित्रों को इतिहासकारों ने कोई 5 हजार साल पुराना बताया है। इनमें एक शैलचित्र त्रिरत्न का भी है।

एक विशाल लाल बलुए पत्थर का स्तंभ भी मिला है। स्तंभ टुकड़ों में है। इस पर छः पंक्तियों का बुद्ध को समर्पित अभिलेख है।

तस्वीर में स्तूपों की श्रृंखला है, शैलचित्र हैं, त्रिरत्न का भी शैलचित्र है, गुफाएँ हैं, स्तंभ पर अंकित अभिलेख का देवनागरी भाषांतर है और पुरातत्व विभाग का बोर्ड है।

इतिहास बदल रहा है!!!



19. अशोक के शिलालेखों पर संस्कृत के अभिलेख लिखवाए गए हैं, मगर संस्कृत के अभिलेखों पर अशोक के शिलालेख क्यों नहीं लिखवाए गए हैं?

भारत में संस्कृत का सबसे पुराना प्रथम एवं द्वितीय लंबा अभिलेख क्रमशः जूनागढ़ अभिलेख (दूसरी सदी) तथा प्रयाग प्रशस्ति (चौथी सदी) है।

प्रथम अभिलेख रुद्रदामन का और दूसरा समुद्रगुप्त का माना जाता है।

क्या कारण है कि ये दोनों अभिलेख सम्राट अशोक के अभिलेखों पर या आसपास लिखवाए गए हैं ? प्रथम अशोक के चतुर्दश शिलालेख के आसपास अंकित है और द्वितीय इलाहाबाद के अशोक स्तंभ पर।

संस्कृत के सर्वाधिक पुराने तथा गौरवशाली अभिलेखों का सम्राट अशोक के अभिलेखों पर या आसपास लिखवाया जाना कोई संयोग है या इसका कोई मतलब है?

20. एक धम्म - यात्रा सम्राट अशोक ने कैमूर पहाड़ी के उस रास्ते से की थी, जिस रास्ते से चलकर गौतम बुद्ध बोध गया से सारनाथ पहुँचे थे।

अभी तक सम्राट अशोक के इस रास्ते पर रात्रि - विश्राम के बतौर सबूत तीन अभिलेख से तीन ठहरावों का पता चल चुका है : - सहसराम, मठ मोरिया और अहरौरा।

जाहिर है कि अशोक को इस धम्म यात्रा में दसियों दिन लगे होंगे। इसलिए अभी कैमूर पहाड़ी के इस रास्ते पर दसियों अभिलेख खोजा जाना बाकी है।



हिन्दुस्तान 8.8.09

कैमूर की तलहटी होकर सारनाथ पहुंचे थे बुद्ध!

पटना |

कई इतिहास का साक्षी भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण का पटना सर्किल फिर नया इतिहास रचने को तैयार है। हाल में उसके द्वारा किए गए अनुसंधान और उत्खनन से भगवान बुद्ध के ज्ञान प्राप्ति स्थल बोध गया और प्रथम उपदेश स्थल सारनाथ के रास्ते को लेकर नया विचार सामने आ रहा है। विभिन्न स्रोतों से जानकारी मिलती है कि ज्ञान प्राप्ति के बाद भगवान बुद्ध पहले पाटलिपुत्र आए, फिर गंगा बेसिन होते हुए सारनाथ पहुंचे। पर, अब नई खोज के बाद यह कहा जा रहा है कि बुद्ध गया से डेहरी ऑन सोन व कैमूर की तलहटी से होते हुए सासाराम, बसहा और अहरौरा पहुंच कर नदी के रास्ते सारनाथ पहुंचे।

इस विषय पर शोध प्रस्तुत करने वाले शंकर शर्मा के मुताबिक, गया से सारनाथ के सबसे छोटे और प्रमाणिक रास्ते होने के कई साक्ष्य उपलब्ध हैं। एक अंतरराष्ट्रीय जरनल 'ल्युमिनिटिज इंडिया' में इसे प्रकाशित भी किया गया है। गया से सारनाथ जाने के लिए बुद्ध के अपनाए मार्ग पर मतभेद रहा है। सारनाथ में ही उन्होंने अपना पहला उपदेश दिया था। 2009 में वाराणसी की शोध संस्था ज्ञानप्रवाह ने बसहां गांव में अशोक के समय के एक पत्थर पर लिखे राजाज्ञा को खोज निकाला। बसहां गांव कैमूर जिले में आता है। यह अरहौरा और सासाराम के बीच स्थित है, जिनके उत्खनन में बौद्ध अवशेष पहले ही मिल चुके हैं।

जानकारी मिलने के बाद भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के विशेषज्ञों की टीम बसहां गांव पहुंची। अन्वेषण में चट्टानों के बने आश्रयस्थल, चित्र, शिलालेख और स्तूप मिले। इनमें से कुछ तो बुद्ध के पूर्ववर्ती काल के थे। सबसे अहम अशोक के समय का अभिलेख है। इसके पास ही एक बौद्ध स्तूप भी मिला है। इससे दो बातें स्पष्ट हैं। पहला, यह कि पूरा इलाका लंबे समय से आबाद रहा है। दूसरा, सीमा पर ही गुरहुर गांव में ऐसे चित्र प्राप्त हुए हैं, जिनसे यह पता चलता है कि पूरा इलाका बौद्ध धर्म के प्रभाव में रहा है। इनमें से कुछ में अपने पांच शिष्यों को उपदेश देते भगवान बुद्ध दिखाई देते हैं।

खुलासा

18 योजन है बौद्ध साहित्य के अनुसार गया से सारनाथ की दूरी

05 हफ्ते में बुद्ध ज्ञान प्राप्ति के बाद बोध गया से सारनाथ पहुंचे थे

गुरहुर में मिला चट्टान पर बना बुद्ध का चित्र (बाएं)। बसहां गांव में अशोक का शिलालेख।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने अब तक जिन साइट पर काम किया है, उससे बुद्ध के गया से सारनाथ के मार्ग को लेकर नई स्थापनाएं मिल रही हैं। बुद्ध कैमूर के रास्ते सारनाथ पहुंचे थे, इसके स्पष्ट संकेत मिल रहे हैं। संजय कुमार मंजुल, अधीक्षण, पुरातत्व विभाग

21. अभी तक बिहार में सम्राट अशोक के सासाराम स्थित एक ही लघु शिलालेख का जिक्र इतिहास में होता आया है, अब नए शोध से कम से कम दो दर्ज होंगे। अशोक का यह दूसरा लघु शिलालेख कैमूर जिले के चाँद प्रखंड में बसहा गाँव के पास कैमूर की पहाड़ी पर अवस्थित है। जिस क्षेत्र में यह अभिलेख है, उसे मठ मोरिया अर्थात मोरिय राजा का विश्राम - स्थल कहा जाता है।

जैसा कि अभिलेख से ज्ञात है कि सम्राट अशोक ने जनता की तकलीफों को जानने के लिए कुल 256 रातें राजमहल के बाहर क्षेत्र में गुजारी थी, जिसमें से वे एक रात इसी मठ मोरिया में रूके थे। शिलालेख के ठीक बगल में एक शैल - मठ भी है, जिसमें एक रास्ता शिलालेख के सटे हुए जाता है और दूसरा रास्ता पहाड़ी की चोटी से आता है। शैल - मठ अवलेपित है। ऐसा इसलिए कि दीवार पर साँप - बिच्छू को चढ़ने से यह अवरोधित करे।

अभिलेख प्राकृत भाषा और धम्म लिपि (ब्राह्मी लिपि) में है। शिलालेख के ऊपर प्राकृतिक शैल - छज्जा है, जो उसकी रक्षा धूप और वर्षा से करता है। सामने एक बड़ा - सा प्राकृतिक पत्थरों का प्लेटफार्म है, जहाँ बीसेक लोग आराम से उठ - बैठ सकते हैं। अभिलेख के लेखन में भी किसी लेप का प्रयोग जान पड़ता है, जिससे उसकी चमक बनी हुई है। अभिलेख में कुल मिलाकर 9 पंक्तियाँ हैं और इसके अक्षरों की लिखावट लगभग समरूप है। अभिलेख

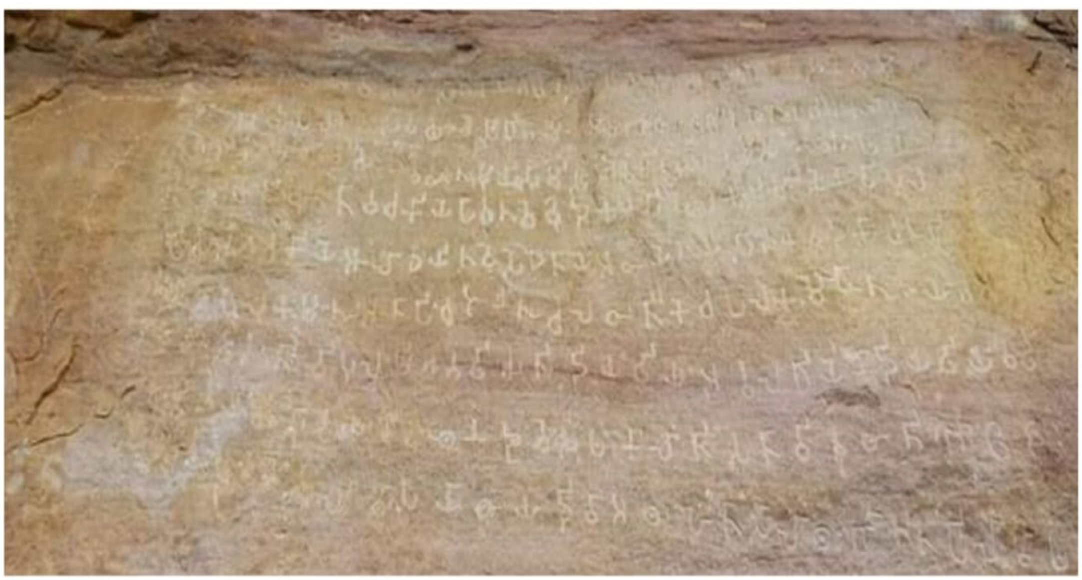
मुख्य रूप से समाज के छोटे और बड़े दोनों तबकों के लिए अवसर की समानता की घोषणा करता है।

देवनागरी रूपांतर

1. देवानंपिये हेवं आह अधिकानि अढातियानि सवछलानि अं उपासके सुमि
2. न चु वाढं पलकंते सवछले साधिके अं मम संघे उपयीते एतेन च अंतलेन
3. जंबुदीपसि अमिसं देवसा च मनिसा मिसंदेव कटा पलकमस इयं फले
4. नो च इयं महतता व चकिये पावतवे खुदकेन पि पलकममीनेना विपुले
5. पि सुअगे चकिये आलाधयितवे से एताये अठाये इयं सावने खुदका च उडा
6. ला चा पलकमंतु अंता पि च जानंतु चिलठितीके च पलकमे होतु इयं च अ
7. ठे वढिसति विपुलं पि च वढिसति दियढियं अवलधियेना दियढियं वढि
8. ...ति इयं च सावने विवुथेन दुवे संपनालाति सता विवुथा ति 200 50 6 इमं
9. ..... पवतेसु लिखापयाथा यदि वा अथि हेता सिलाथंभा ततपि लिखापयाथा ति

हिंदी अनुवाद

देवानंपिये अर्थात बुद्ध के प्रिय राजा ऐसा कहते हैं, ढाई साल से अधिक समय से मैं (बौद्ध) उपासक रहा हूं, अधिक पराक्रम नहीं किया। एक साल से अधिक हुआ, जब मैं संघ की संगति में आया। इस समय तक जंबूद्वीप में जो लोग बुद्धि और ज्ञान से नहीं जुड़े थे, उन्हें जोड़ा गया। यह पराक्रम का ही फल है। यह सिर्फ बड़े लोगों द्वारा ही प्राप्त करना शक्य नहीं है बल्कि छोटे लोग भी पराक्रम करने से विपुल अच्छा भविष्य प्राप्त कर सकते हैं। इस लक्ष्य के लिए यह घोषणा की गई है कि छोटे और बड़े लोग [अवसर की समानता के कारण] पराक्रम करें, सीमांत लोग भी [इसे] जानें और यह पराक्रम चिरस्थायी हो। और इस लक्ष्य में वृद्धि होगी, विपुल वृद्धि होगी, डेढ़ गुना, कम से कम डेढ़ गुना वृद्धि होगी। यह घोषणा मैंने यात्रा के दौरान की है, मुझे यात्रा करते दो सौ छप्पन रातें बीत चुकी हैं। इस लक्ष्य को शिलाओं पर लिखवाएँ, यदि शिलास्तंभ हों तो उन पर भी लिखवाएँ।



22. 19 वीं सदी से पहले भारत में लिखी हुई एक भी ऐसी पुस्तक उपलब्ध नहीं है जिसमें लिखा हो कि सम्राट अशोक ने भारत के विभिन्न हिस्सों में पत्थर के बड़े - बड़े स्तंभ खड़े किए और उन पर अभिलेख लिखवाए।

जबकि भारत के अनेक ग्रंथों ने दावा ठोका है कि हम 3000 साल पुराने हैं, हम 2000 साल पुराने हैं।

आश्चर्य कि इसी 3000 साल और 2000 साल के बीच कहीं सम्राट अशोक भारत में मौजूद थे।

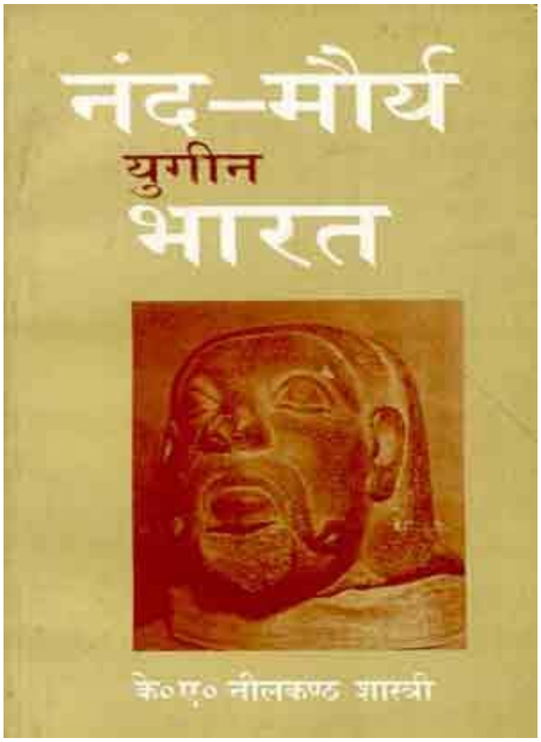


23. प्राचीन काल में सम्राट अशोक ने " पियदसिन " की उपाधि धारण की थी, पौराणिक काल में राम ने " प्रियदर्शन " की उपाधि धारण की थी।

रामायण के प्रारंभ में ही वाल्मीकि नारद से सवाल करते हैं कि " कश्चैकप्रियदर्शन "?

और आधुनिक काल में इंदिरा गांधी ने " प्रियदर्शिनी " की उपाधि धारण की थी।

पुरातत्त्व के आधार पर पियदसिन सर्वाधिक प्राचीन है, प्रियदर्शन और प्रियदर्शिनी बाद का है ।यदि पुरातत्व पर यकीन करें तो राम और इंदिरा गांधी की उपाधि अशोक के पियदसिन से प्रेरित जान पड़ता है।



24. भारत के इतिहास में यह बहुविख्यात स्थापना है कि सम्राट अशोक ने लिखवाया है कि राजकीय रसोई में पहले जहाँ सैकड़ों पशु - पक्षी भोजन के लिए मारे जाते थे, वहाँ अब सिर्फ 3 प्राणी - दो मोर और एक हिरण मारे जाते हैं और भविष्य में वे भी नहीं मारे जाएंगे।

सवाल यह है कि मोर मौर्य वंश का टोटेम और हिरण बौद्ध धम्म का पवित्र पशु था, फिर अशोक ने ऐसा क्यों लिखवाया?

दरअसल अशोक ने मोर और हिरण मारने की बात नहीं कही है। वे दो पक्षी और एक पशु मारने की बात कही है। इतिहासकारों ने गलती से पक्षी को मोर से और पशु को हिरण से जोड़ दिया है।

आप शाहबाजगढ़ी का शिलालेख पढ़िए। उसमें लिखा है कि 2 म्रुगो मारे जाएंगे। फिर मनसेहरा का शिलालेख पढ़िए। लिखा है कि 1 म्रिगे मारे जाएंगे। मतलब कि अशोक ने लिखवाए कि 2 म्रुग और 1 म्रिग मारे जाएंगे।

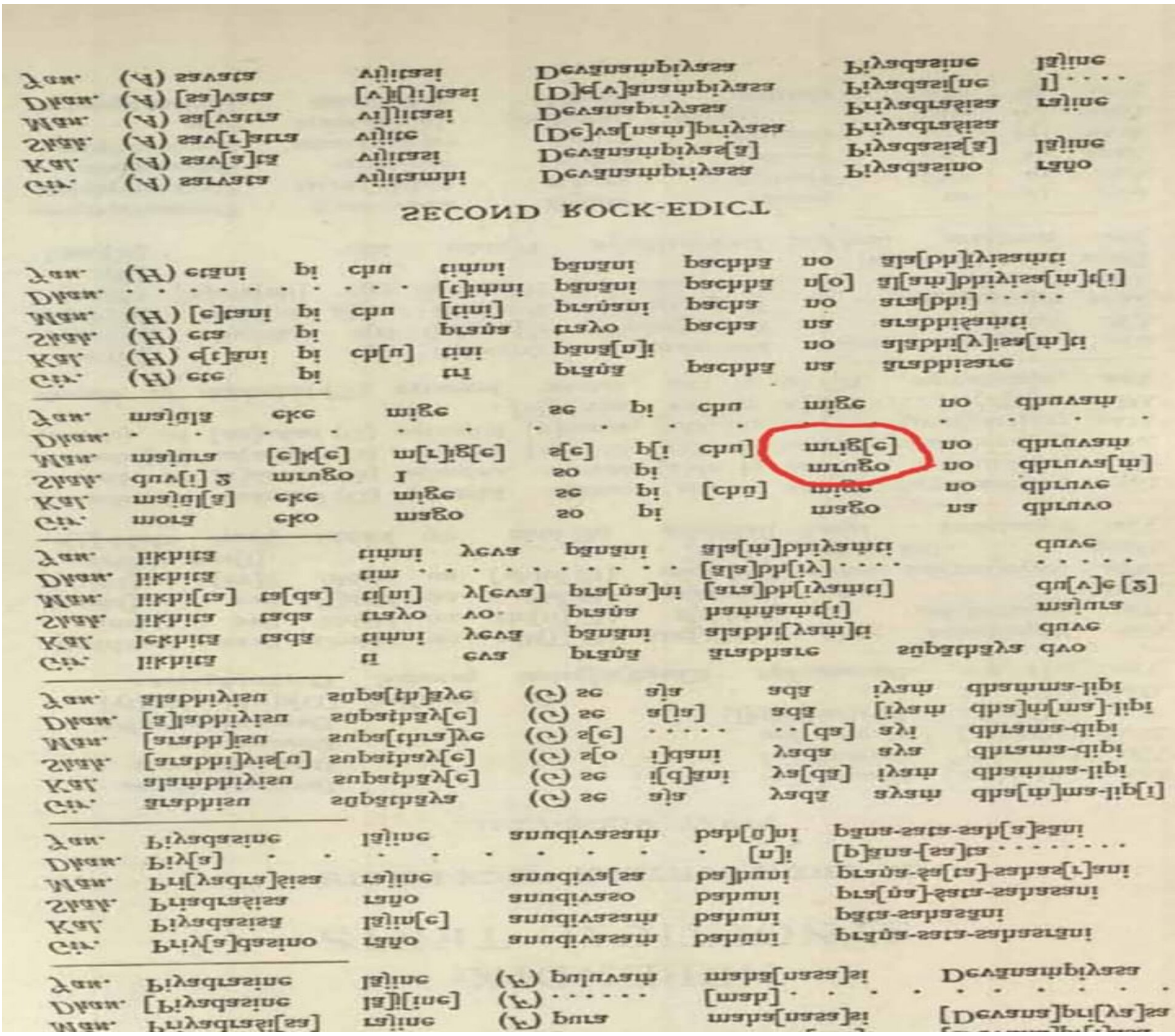
म्रुग का मतलब पक्षी और म्रिग का मतलब पशु होता है। अर्थात अशोक ने दो पक्षी और एक पशु मारने की बात कही है।

म्रुग से फारसी का मुर्ग बना है। फारसी में मुर्ग का अर्थ पक्षी होता है, मुर्गा बाद में उसका पर्याय बना। इसीलिए मुर्गबाग का अर्थ पक्षी विहार, मुर्गे सहर का अर्थ सुबह बोलने वाला पक्षी, शुतुरमुर्ग का अर्थ ऊँट जैसी लंबी गर्दन का पक्षी, मुर्गाबी का अर्थ बत्तख की प्रजाति का पक्षी होता है।

म्रिग से संस्कृत का मृग बना है। मृग का असली अर्थ पशु होता है, हिरण बाद में उसका पर्याय बना। इसीलिए शेर को मृगराज (पशुओं का राजा), बंदर को शाखामृग (शाखाओं पर रहने वाला पशु) और हाथी को हस्तिनमृग (हाथ वाला पशु) कहा जाता है। कन्नड़ और मलयालम में आज भी पशु को मृग कहा जाता है। मृगया अर्थात शिकार तो शिकार सिर्फ मृग (हिरण) का नहीं बल्कि अनेक प्रकार के पशुओं का होता है।

दरअसल इतिहासकारों ने मोर और मृग का संदर्भ गिरनार शिलालेख से लिए हैं। डा. बरूआ ने अपनी पुस्तक " अशोका ईडिक्ट्स इन न्यू लाइट " में लिखा है कि मोर भी पक्षी का पर्याय है, न कि मयूर का। उन्होंने इसकी पुष्टि में बुद्धघोष की मज्झिम निकाय टीका का हवाला दिया है कि मोर दरअसल पक्षी समुदाय को दर्शाता है।

मैंने म्रुग और म्रिग का संदर्भ ई. हुल्त्ज्स्च (1857 - 1927) की पुस्तक " इन्स्क्रिप्शन्स आफ अशोक " से लिया है। हुल्त्ज्स्च जर्मनी के प्राच्यविद थे और अशोक के शिलालेखों के प्रखर जानकार थे। नीचे का पन्ना उन्हीं की पुस्तक से है।



25.शम्स ए सिराज अफीफ सुल्तान फीरोज तुगलक के काफी करीबी थे और दीवाने वजारत में कार्यरत थे।

अपनी पुस्तक " तारीख ए फीरोजशाही " में अशोक स्तंभ टोपरा से दिल्ली लाए जाने का वृत्तांत लिखा है कि सुल्तान ने स्तंभ उखाड़ने के बाद इसे खरोंच न लगे इस कारण रेशम की रुई पर रखवाया था।

लाट सुकुमार को खरोंच न आए कि तूझे रुई में संजोकर कभी रेशम पर सुलाया गया था, आज खरोंच - खरोंच है।

धिक जीवन सम्राटविहीना!!!



26. मध्यकाल में सम्राट अशोक की लिपि पहेली बनी हुई थी। फिरोजशाह तुगलक ने अशोक के दो विशाल स्तंभ दिल्ली उठवा मँगवाए थे। मगर कोई भी विद्वान उसे पढ़ नहीं सका।

सम्राट अकबर भी स्तंभ पर लिखे आशय को जानना चाहते थे। मगर पढ़ने वाला कोई नहीं।

आधुनिक काल में अंग्रेज भी इसे पढ़ने को लेकर पसोपेश में थे। आखिरकार विलियम जोन्स ने बनारस के तत्कालीन हाकिम के पास अशोक की लिपियों की छाप भेजी कि आप

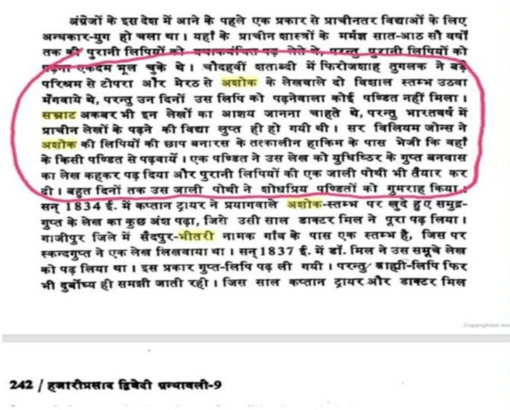
इसे बनारस के किसी विद्वान पंडित से पढ़वाइए। इसलिए कि बनारस विद्वान पंडितों का शहर है।

बनारस के एक विद्वान पंडित ने इसे पढ़कर बताए कि इस पर युधिष्ठिर का गुप्त बनवास लिखा है। इतना ही नहीं, उस विद्वान पंडित ने अशोक की लिपि को पढ़ने की एक जाली किताब भी लिख डाली और बताए कि मैंने सही पढ़ा है।

बहुत दिनों तक उस विद्वान पंडित की बात सत्य मानी जाती रही।

शुक्रिया जेम्स प्रिंसेप कि आपने अशोक के अभिलेखों को सही पढ़ लिया वरना पंडित जी की उस जाली किताब से पढ़े जाने पर अशोक के अभिलेख महाभारत और रामायण की कहानी बन जाती।

शुक्रिया जेम्स प्रिंसेप!



अंग्रेजों के इस देश में आने के पहले एक प्रकार से प्राचीनतर विद्याओं के लिए अन्धकार-युग हो चला था। यहाँ के प्राचीन शास्त्रों के मर्मज्ञ सात-आठ सौ वर्षों तक की पुरानी लिपियों को यथाकथंचित पढ़ लेते थे, परन्तु पुरानी लिपियों को पढ़ना एकदम भूल चुके थे। चौदहवीं शताब्दी में फिरोजशाह तुगलक ने बड़े परिश्रम से टोपरा और मेरठ से अशोक के लेखवाले दो विशाल स्तम्भ उठवा मँगवाये थे, परन्तु उन दिनों उस लिपि को पढ़नेवाला कोई पण्डित नहीं मिला। सम्राट अकबर भी इन लेखों का आशय जानना चाहते थे, परन्तु भारतवर्ष में प्राचीन लेखों के पढ़ने की विद्या लुप्त ही हो गयी थी। सर विलियम जोन्स ने अशोक की लिपियों की छाप बनारस के तत्कालीन हाकिम के पास भेजी कि वहाँ के किसी पण्डित से पढ़वायें। एक पण्डित ने उस लेख को युधिष्ठिर के गुप्त बनवास का लेख कहकर पढ़ दिया और पुरानी लिपियों की एक जाली पोथी भी तैयार कर दी। बहुत दिनों तक उस जाली पोथी ने शोधप्रिय पण्डितों को गुमराह किया। सन् 1834 ई. में कप्तान ट्रायर ने प्रयागवाले अशोक-स्तम्भ पर खुदे हुए समुद्रगुप्त के लेख का कुछ अंश पढ़ा, जिसे उसी साल डाक्टर मिल ने पूरा पढ़ लिया। गाजीपुर जिले में सैदपुर-भीतरी नामक गाँव के पास एक स्तम्भ है, जिस पर स्कन्दगुप्त ने एक लेख लिखवाया था। सन् 1837 ई. में डॉ. मिल ने उस समूचे लेख को पढ़ लिया था। इस प्रकार गुप्त-लिपि पढ़ ली गयी। परन्तु ब्राह्मी-लिपि फिर भी दुर्बोध्य ही समझी जाती रही। जिस साल कप्तान ट्रायर और डाक्टर मिल

242 / हजारीप्रसाद द्विवेदी ग्रन्थावली-9



27. भला हुआ कि अशोक स्तंभ के अक्षर पढ़ लिए गए वरना आज तक यह भीम की लाठी ही कही जाती।



28. सम्राट अशोक के स्तंभ कारीगरी के अनोखे नमूने हैं। पत्थर के स्तंभों पर शानदार चमक है। ऐसी कि धातु के होने का भ्रम होता है।

पहला भ्रम अंग्रेज यात्री टाम कार्येट को हुआ था। वे 17 वीं सदी के मुगल काल में भारत आए थे। टोपरा - दिल्ली स्तंभ देखा और लिखा कि यह पीतल की परत चढ़ा स्तंभ है।

दूसरा भ्रम 19 सदी के आरंभ में आए बिशप हैबर को हुआ और लिखा कि यह ढली हुई धातु का है।

अजीब इंजीनियरिंग थी! जब फिरोजशाह तुगलक इसे दिल्ली लाए थे, तब इसे खींचने के लिए 8400 लोग लगे थे, वो भी जब इसे कोई डेढ़ सौ मील ले जाना था।

सोचिए कि अशोक के इंजीनियरों ने कैसे चुनार से टोपरा भेजा होगा, अचरज होता है।



29. आप चित्र एक में अशोक स्तंभ के शीर्ष की कमल चौकी देख रहे है। चित्र दो में सुसज्जित वृषभ देख रहे हैं।

ये दोनों खुदाई में आस - पास कोसाम्बी से 2. 40 किमी की दूरी पर 1963-64 में मिले थे।

यदि चित्र एक पर चित्र दो को रखिएगा तो आपको चित्र तीन में दिखाए गए अशोक के रामपुरवा का वृषभ शीर्ष मिल जाएगा।

खंड - खंड अवशेषों को जोड़ कर मुकम्मल परिदृश्य कायम किया जा सकता है।





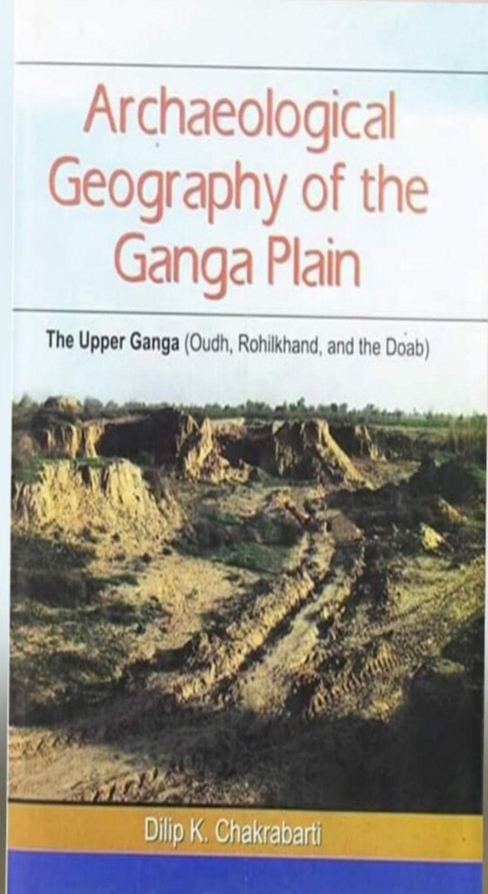


30. दिलीप कुमार चक्रवर्ती की पुस्तक " आर्कियोलॉजिकल ज्योग्राफी आॅफ दि गंगा प्लेन " में लिखा है कि अयोध्या के सरयू तट पर नागेश्वरनाथ मंदिर में जो शिवलिंग स्थापित है, वह अशोक स्तंभ के शीर्ष पर मौजूद उल्टे कमल पर स्थापित है।

अयोध्या का यह उल्टे कमल का शीर्ष गुणवत्ता में सारनाथ जैसा है।

इससे मौर्य काल में अयोध्या के महत्व का पता चलता है।

चित्र एक पुस्तक है, दो अशोक स्तंभ पर स्थापित शिवलिंग है और तीन जो किताब में लिखा है, वो है।





9 A Mauryan lotus capital (third century BCE) serving as the female base of a Siva stone in the Nageswarnath Siva temple in Ayodhya (photo

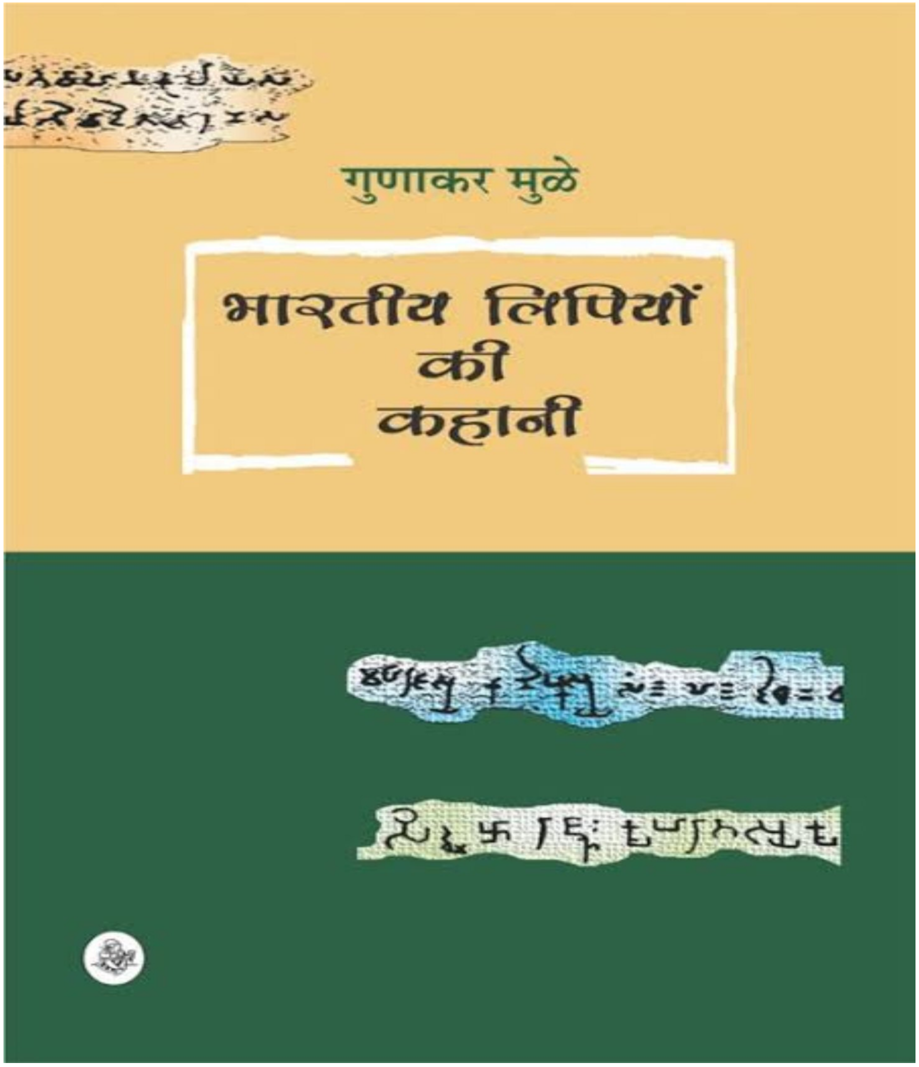
II.4. FAIZABAD-AYODHYA

25. *Ayodhya* (63 J/1)—extensive traces of structural mounds within the fortification of ancient Ayodhya—Hanumangarhi is located on the ancient fortification which is fast disappearing—extensive excavations urgently needed at this site which is one of the most important city sites of northern India, if the extent and traces of fortification and other mounds are anything to go by. The Asokan lotiform capital now kept as the base of the Sivalinga in Nageshwarnath temple on the bank of the Sarayu is of the same quality as the inverted lotus base of the Sarnath capital, thus testifying to the importance of Ayodhya in the Mauryan empire. The back of this temple stands against a high ground which is now built up. If this area is excavated, there is a strong possibility of discovering the missing portion of the capital and the pillar itself (likely to be inscribed). It is unfortunate that the recent controversy about Ram Janmabhumi has detracted from the enormous significance of Ayodhya as an ancient city. The inscription of Dhanadeva now lies in a modern Jaina religious complex in the Ranopali area which also needs excavations. Although the modern Ayodhya town is densely crowded, there are still places which would bear extensive horizontal excavations.

In view of the location of the Asokan lotiform capital in the Nageswarnath temple and the presence of a high mound behind this temple, it appears to be more logical to put the location of the Asokan stupa at Ayodhya at this spot on the bank of the Sarayu and not away from it at Mani Parvat, as Cunningham (1871: 325; for a discussion, Fuhrer 1891: 299) had done.

31. भुवनेश्वर के भास्करेश्वर मंदिर का शिवलिंग सम्राट अशोक के स्तंभ का रूपांतरण है ।

--- गुणाकर मुले: भारतीय लिपियों की कहानी (पृ. 37)



32. लाट भैरो अशोक स्तंभ कैसे?

चीनी यात्री ह्वेनसांग ने 7 वीं सदी में भारत की यात्रा की। वे बनारस भी गए। बनारस - यात्रा का पूरा विवरण उनकी पुस्तक के सातवें अध्याय में है। उन्होंने लिखा कि बरना नदी के पश्चिमी भाग में अशोक का बनाया हुआ 100 फीट ऊँचा स्तूप है। स्तूप के सामने पत्थर का काँच की भाँति चमकीला एक स्तंभ है।

विसेंट स्मिथ ने " Identification of the Asoka Pillar N.E. of Benares city described by Hiuen Tsang " (1909) में इस अशोक स्तंभ की पहचान बरना नदी के पश्चिम में स्थित लाट सरैया में मौजूद लाट भैरो के रूप में की।

फ्रेंच यात्री ट्रेवेनियर (1605 - 1689) ने 1665 में बनारस की यात्रा की। उन्होंने अपने यात्रा -वृतांत के आठवें अध्याय में लिखा कि यह स्तंभ कोई 32 - 35 फीट ऊँचा है। इसकी मोटाई करीब उतनी है, जितनी कि तीन आदमी के मिले हुए हाथों की गोलाई है।

कालांतर में 1809 के एक दंगे में इस स्तंभ के टुकड़े - टुकड़े हो गए। इस घटना का विवरण हमें फिल राबिसन के एक संग्रह (1865) से प्राप्त होता है। बाद में टूटे हुए स्तंभ को ताम्र - कवच से मढ़वा दिया गया।

present Lat Bhairon which is the remnant of an ancient pillar which was destroyed in the Hindu-Muslim riots in 1809 CE. The accounts of this riot were compiled on the basis of the official documents prepared by Phil Robinson in 1865 CE. He tells that the present location is



Broken Aśokan pillar (**Lāt Bhairava**) covere with red cloth

ful design. The most beautiful are placed each in the middle of a garden enclosed by walls which have openings of half a foot square, through which the passers-by can see them. The most considerable of all is like a great square pedestal, each face of which is about forty paces long. In the middle of this platform you see a column of 32 to 35 feet in height, all of a piece, and which three men could with difficulty embrace.[1] It is of sandstone, so hard that I could not scratch it with my knife. It terminates in a pyramid, and has a great ball on the point, and below the ball it is encircled by large beads. All the sides of this tomb are covered with figures of animals cut in relief in the stone, and it has been higher above the ground than it now appears; several of the old men who guard some of these tombs having assured me that since fifty years it has subsided more than 30 feet. They add that it is the tomb of one of the kings of BHUTÁN, who was interred there after he had left his country to conquer this kingdom, from which he was subsequently driven by the descendants of TAMERLANE. It is from this kingdom of BHUTÁN that they bring musk, and I shall give a description of it in Book III.

I remained at BENARES on the 12th and 13th, and during these two days there was continual rain; but it did not prevent me from resuming my journey, and on the evening of the 13th I crossed the GANGES with the passport of the Governor. They examine all travellers' baggage before embarking in the boat, personal property pays nothing, and it is only on merchandise that one must pay duty.

[1] This was probably the Asoka pillar, known as the *Lât Bhairo*, which is believed to have been erected in the third century B.C.

सातवां अध्याय

पांच प्रदेशो का वृत्तान्त (१। पओलोनीस्सी (२) चेनन्नू (३) फिशीलई (४) ोलीशी (५) निपोलो।

पओलोनीस्सी (वाराणसी या बनारस)

इस देश का क्षेत्रफल लगभग ४,००० ली है। राजधानी की पश्चिमी सीमा र गङ्गा नदी बहती है। इसकी लम्बाई १८-१९ ली और चौडाई ५-६ 'ली है। सके भीतरी द्वार कङ्घी के दातो के समान बने हैं [1]। आबादी घनी और मनुष्य धन-ान हैं, तथा उनके घरो में बहुमूल्य वस्तुओ का सग्रह रहता है। लोगो का आचरण ोमल औ' सभ्य है, वे विद्याभ्यास मे दत्तचित्त रहते हैं। अधिकतर लोग विरुद्ध र्मावलम्बी हैं, बौध्द-धर्म के अनुयायी बहुत थोडे हैं। प्रकृति कोमल, पैदावार अधिक, क्ष फलफूल सयुक्त, और घने-घने जङ्गल सर्वत्र पाये जाते हैं। लगभग ३० संघाराम ौर ३,००० सन्यासी हैं, और सबके सब सम्मतीय सस्थानुसार हीनयान-सम्प्रदाय के नुयायी है। लगभग १०० मन्दिर और १०,००० विरुध्द-धर्मावलम्बी हैं जो सबके ाव महेश्वर का आराधन करते हैं। कुछ अपने बालो को मुंडा डालते हैं और कुछ ालो को बांधकर जटा बनाते हैं, तथा वस्त्र परित्याग करके दिगम्बर रहते हैं और रीर मे भस्म का लेप करते हैं। ये बडे तपस्वी होते हैं तथा बडे कठिन-कठिन साधनो जन्म-मृत्यु के बन्धन से छूटने का प्रयत्न करते है।

मुख्य राजधानी में २० देव-मन्दिर है जिनके मडप और कमरे इत्यादि पत्थर ौर लकडी से, सुन्दर प्रकार की चित्रकारी इत्यादि खोदकर, बनाये गये हैं। इन थानो मे वृक्षो की घनी छाया रहती है और पवित्र जल की नहर इनके चारो ओर नी हुई है। महेश्वर देव की मूर्ति १०० फीट से कुछ कम ऊँची तांबे की बनी हुई है। सका स्वरूप गम्भीर और प्रभावशाली है तथा यह सजीव सी विदित होती है।

राजधानी के पूर्वोत्तर बरना नदी के पश्चिमी तट पर अशोक राजा का बन-ाया हुआ १०० फीट ऊचा एक स्तूप है। इसके सामने पत्थर का एक स्तम्भ कांच के मान स्वच्छ और चमकीला है, इसका तल भाग बर्फ के समान चिकना और चमक-र है। इसमे प्राय: छाया के समान बुध्ददेव की परछाई दिखलाई पडती है।

(1) मालूम होता है कि लोहे की छडो से कङ्घी के समान द्वार बने होगे।

33. वो जमाना था, जब मध्य और दक्षिण गुजरात के इलाके को लाट प्रदेश कहा जाता था। जैसे बौद्ध विहारों के कारण बिहार नाम पड़ा, वैसे अशोक की लाटों के कारण लाट प्रदेश नाम पड़ा।

संस्कृत काव्यशास्त्र का जो लाटानुप्रास है, वह लाट प्रदेश की देन है। इसीलिए आचार्य विश्वनाथ ने लिखा कि प्रायेण लाटजनप्रियत्वाल्लाटानुप्रासः।

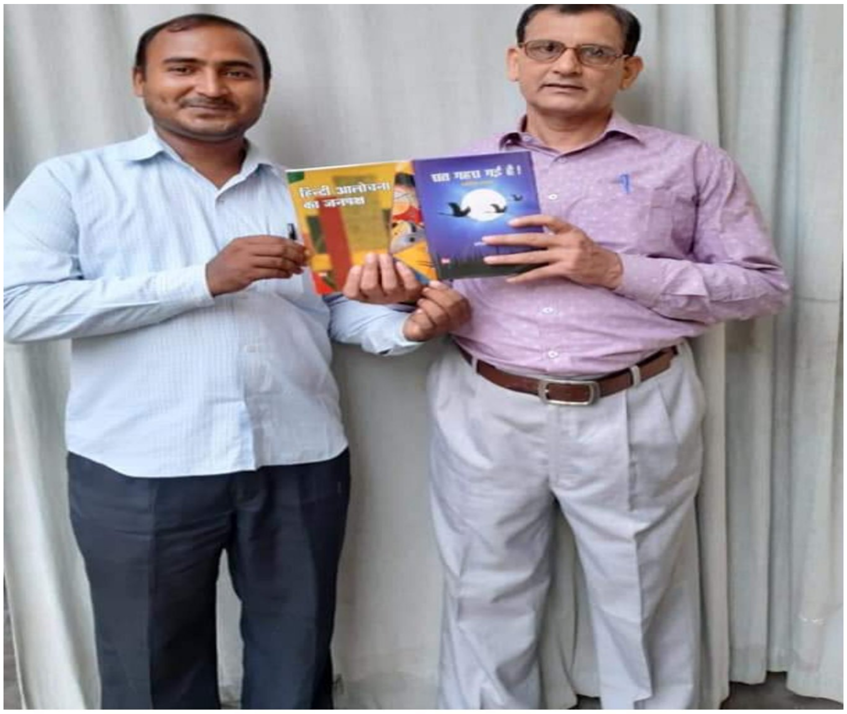
अर्थात लाटानुप्रास लाट जनों का प्रिय है।

रीति सिद्धांतकारों में बाद के आचार्य रुद्रट ने संस्कृत काव्यशास्त्र में लाटी स्टाइल का सिद्धांत दिए, वह भी लाट प्रदेश की स्टाइल थी। यह समास को लेकर मध्यमार्गीय स्टाइल थी।

लाट प्रदेश का प्रथम साहित्यिक सबूत टोलेमी की किताब में और पुरातात्विक सबूत मंदसौर और अजंता के अभिलेखों में मिलता है।

अशोकन प्राकृत को लाटी प्राकृत भी कहा जाता है। अपभ्रंश के भेदों में लाटी अपभ्रंश भी है।

अशोक की लाटों की भाषा ने संस्कृत काव्यशास्त्र को गहरे में प्रभावित किया।



34. सम्राट अशोक ने अपने स्तंभ को " सिला थंभ " कहा है, खंभ से खड़ा और थंभ से ठाड़/ठाढ़ शब्द जुड़ा है।





35. सम्राट अशोक के सिंह चतुर्मुख ने स्तूप कला को प्रभावित किया।











36. वो दिन दूर नहीं जब भारत में विज्ञापन से लेकर साहित्य तक में अशोक- स्तंभ के प्रतीकों का बड़े पैमाने पर प्रयोग होगा।

दैनिक हिंदुस्तान का विज्ञापन इसका नमूना है - अशोक स्तंभ सा अजर - अमर, हिंदुस्तान और बिहार का रिश्ता।



37. सारनाथ के सिंह - स्तंभ पर अशोक - चक्र दो प्रकार के हैं। एक में 32 आरे हैं और दूसरे में 24 आरे हैं।

32 आरे वाला अशोक चक्र मुख्य है। इसीलिए वह शीर्ष पर है और सिंह उसे कंधों पर उठाए हुए हैं।

24 आरे वाला अशोक - चक्र उप है। इसीलिए वह सिंहों की गोल वेदी पर नीचे बने हैं, जिनकी संख्या 4 है।

भारत ने मुख्य को छोड़कर राष्ट्रीय ध्वज में उप अशोक - चक्र का चयन किया है।



38. चीनी यात्री ह्वेनसांग ने गाजीपुर को " चान - चू " कहा है। " चान - चू " चीनी भाषा के दो शब्दों का मेल है। चान का अर्थ " विपस्सना " और चू का अर्थ " क्षेत्र " होता है। इस प्रकार " चान - चू " का पूरा अर्थ विपस्सना का क्षेत्र अर्थात एरिया हुआ। गाजीपुर कभी विपस्सना का क्षेत्र हुआ करता था। अर्थात गाजीपुर का क्षेत्र सारनाथ के निकट होने के कारण बौद्ध स्थलों से भरा - पूरा था।

चान का एक उच्चारण-पद्धति चेन है। चान / चेन से चीन में एक बौद्ध पंथ " चा' आन " का प्रचलन है। चान वस्तुतः बौद्ध शब्दावली झान का बदला हुआ रूप है, जिससे संस्कृत का ध्यान बना है।

ह्वेनसांग 7 वीं सदी में जब गाजीपुर आए थे, तब गाजीपुर के क्षेत्र में अनेक बौद्ध केंद्र थे। राजधानी में 10 संघाराम थे। राजधानी के पश्चिमोत्तर में सम्राट अशोक का स्तूप था। गौतम बुद्ध यहाँ सात दिन रूके थे। गाजीपुर से 200 ली की दूरी पर एक अन्य संघाराम था, जिसमें विदेशी बौद्ध रहा करते थे।

उबैदुर्रहमान ने गाजीपुर में गौतम बुद्ध, सम्राट अशोक और बौद्ध स्थलों पर काम किया है। उन्होंने लिखा है कि अनेक बुद्ध की मूर्तियाँ औड़िहार, मसोनडीह, जौहर गंज तथा भितरी क्षेत्र से प्राप्त हुई हैं। बिहार और संघारामों के अवशेष भितरी, सैदपुर तथा शादियाबाद से मिलते हैं। अशोक के स्तंभ लटिया, भितरी और गौसपुर में मिलते हैं।

गौसपुर स्तंभ का सिर्फ शीर्ष भाग मिलता है। लटिया और भितरी के अशोक स्तंभ की तस्वीरें नीचे दी जा रही हैं, जिसे 1870 में जोसेफ डेविड बेग्लर ने ली थी।



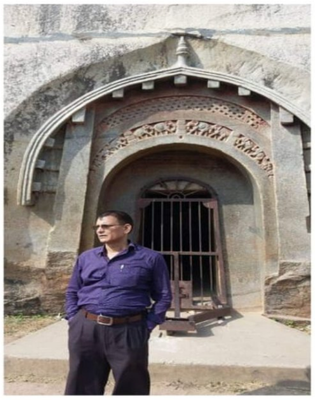

39. बेहद गर्मी थी ... सुजाता के गाँव से बराबर की पहाड़ियों पर जाना था ... बराबर की पहाड़ियों पर अशोक की बनवाई हुईं गुफाएँ हैं।

रास्ते की जानकारी ली ... पता चला कि गया के मोरिया घाट से बेला जाना होगा ... बेला सुनकर उरूबेला जैसे गाँव याद आए ... मोरिया घाट से गुजरते हुए मठ मोरिया की याद आई ... कैमूर जिले के मठ मोरिया में अशोक का अभिलेख है ...अशोक ने यहाँ एक रात गुजारी थी ... जानें क्यों इतिहासकार मौर्य कहते हैं ...जनता के लिए वह मोरिय था।

आश्चर्य नहीं कि गया का मोरिया घाट अशोक के नाम पर पड़ा होगा ... अशोक के बौद्ध गया जाने के प्रमाण हैं।

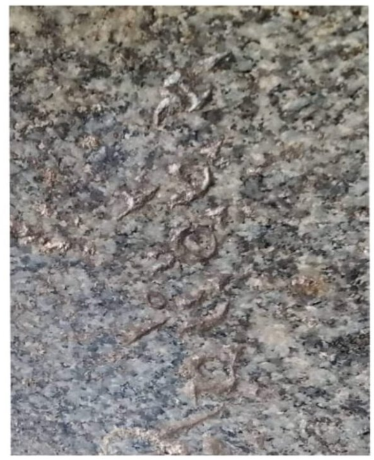
अशोक के समय में बराबर की पहाड़ी जवान रही होगी ... अभी बिल्कुल बूढ़ी और जर्जर है ... सीढ़ियों से चढ़कर गुफाओं के पास पहुँचा ... गुफाएँ ग्रेनाइट की बनी हुईं भीतर से एकदम चिकनी और चमकदार थीं।

लिपियों को देखा ...हैरत हुई कि अनेक लिपियाँ अभी अनपढ़ी हैं ... एक लिपि ऊपर से नीचे की ओर लिखी गई थी... दूसरी शंखाकृति में शंख लिपि थी ... ये लिपियाँ सिंधु घाटी की भाँति पढ़ी नहीं जा सकी हैं। आँखें उस मूर्ति को तलाश रही थीं जिसमें गौतम बुद्ध माँ की गोद में हैं ... सीढ़ियों से उतरते दाहिने किनारे एक पेड़ के नीचे वह मूर्ति दिखाई पड़ी ...संगमरमर की बनी ... बिल्कुल उपेक्षित!









40. आश्चर्य क्यों? 12 हजार बुद्ध की मूर्तियाँ तो हांगकांग के शा टिन के एक बौद्ध मठ में हैं।

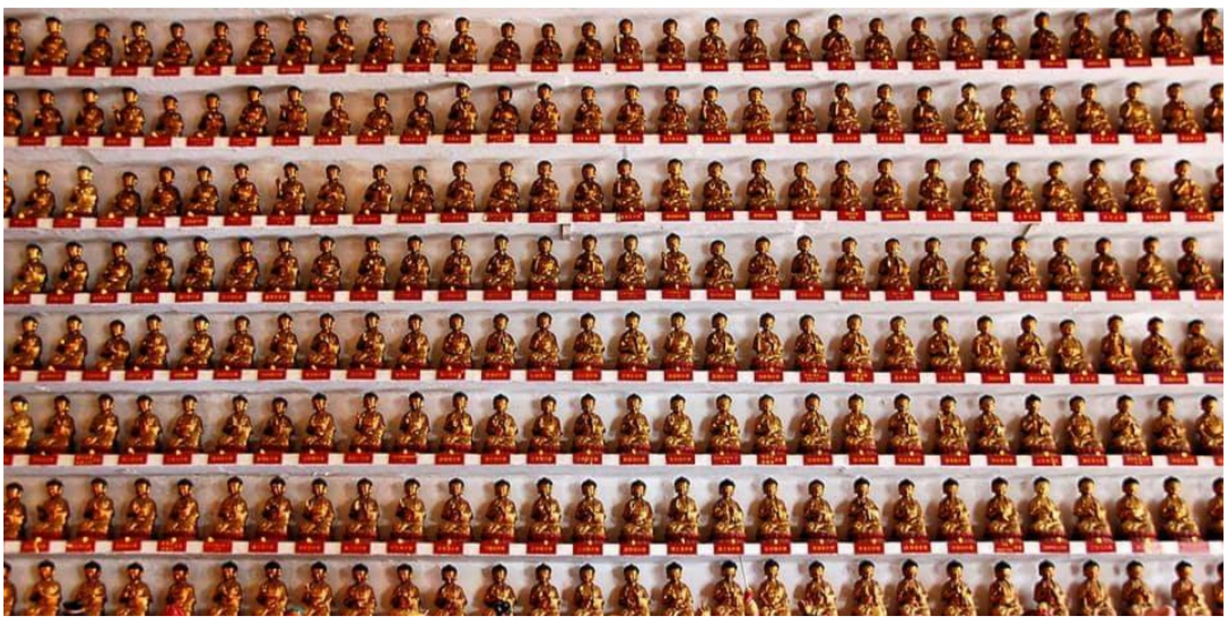
नाम है 10 हजार बुद्ध मठ, लेकिन बुद्ध की मूर्तियाँ 12000 हैं।

इसे यूट काई ने 1951 में स्थापित किए थे और 6 साल बाद 1957 में पूरा हुआ।

एक आदमी ने 12000 बनवाए यदि राजा चाहे तो 84000 बनवा दे। आश्चर्य क्यों?

(अशोक द्वारा 84000 स्तूप बनाए जाने का जिक्र फाहियान ने अपने यात्रा - विवरण के 27 वें खंड में किए हैं)





41. छत्तीसगढ़ के सिरपुर में अंतरराष्ट्रीय बुद्धिस्ट कान्फ्रेंस चल रहा है। कई देश के प्रतिनिधि आए हैं।

सिरपुर का प्राचीन नाम लोग श्रीपुर बता रहे हैं। मगर पुरातत्व में " श्री " का इस्तेमाल सबसे पहले समुद्रगुप्त की प्रयाग - प्रशस्ति में मिलता है। जबकि सिरपुर का इतिहास समुद्रगुप्त से प्राचीन है।

सिरपुर एक बड़ा बौद्ध स्थल है। यहाँ खुदाई में अनेक बौद्ध विहार और स्तूप मिले हैं।

दरअसल सिरपुर का नाम सिरिपुर है। श्री का पूर्व रूप सिरि है।

बौद्ध राजे और रानियाँ, जिन्हें बुद्धिज्म में विश्वास था, अपने नाम में सिरि लगाते थे।

सातवाहन वंश के राजे और इखाकु वंश की तमाम रानियों के नाम में सिरि मिलता है।

इन वंशों के शिलालेखों और सिक्कों पर सिरि की भरमार है, जबकि श्री का लेखन समुद्रगुप्त से पहले कहीं पुरातत्व में मिलता नहीं है।

सिरि वास्तव में बौद्ध अनुयायी होने का सूचक शब्द है। यहीं सिरि दक्षिण में तिरु है, जो तिरुपति और तिरुवनंतपुरम में है।

इसलिए सिरपुर का मतलब बुद्ध के अनुयायियों का नगर है।

यदि इतिहासकार यह मानते हैं कि श्रीनगर को सम्राट अशोक ने बसाया था तो ठीक ही मानते हैं।

बशर्ते कि यह मान लिया जाए कि श्रीनगर का भी मूल नाम सिरिनगर था, वहीं जैसे श्रीपुर का मूल नाम सिरिपुर रहा होगा।



42. चीनी यात्री ह्वेनसांग 7 वीं सदी में सिरपुर आए थे। तब उन्हें मालूम हुआ कि वहाँ पर राजा अशोक द्वारा बनवाया गया बौद्ध स्तूप है। ह्वेनसांग ने दिशा सहित स्तूप का वर्णन किए।

चीनी यात्री की बात सच साबित हुई। ह्वेनसांग की बताई गई दिशा में सिरपुर का स्तूप भग्नावस्था में जनवरी, 2009 में प्राप्त हुआ।

बड़े - बड़े पत्थरों से निर्मित यह स्तूप एक 13. 20 × 12.80 मीटर के प्रस्तर निर्मित अधिष्ठान पर स्थित है।

जी हाँ, सम्राट अशोक के बनवाए गए अनेक स्तूपों का पता लगाया जाना अभी बाकी है।

चीनी यात्री ने यह भी लिखा है कि यहाँ 100 बौद्ध विहार हैं।

36 गढ़ में यदि 100 विहार मिल जाएंगे वो भी एक ही जगह तो पूरे 36 गढ़ के 36 गढ़ कम ही पड़ेंगे।

अच्छा हुआ कि मगध ने अपना नाम बिहार कर लिया।



43. उज्जैन से 5 किमी दूर स्थित 100 फीट ऊँचा और 350 फीट व्यास का मौजूद वैश्य टेकरी के स्तूप की व्यवस्थित खुदाई कराए सरकार।

मिल सकता है विश्व धरोहर का खजाना !!!

वैश्य टेकरी के मुख्य टीला पास दो और छोटे - छोटे टीले हैं। एक तुलावती और दूसरा कंकर टीला के नाम से जाना जाता है।

1938 - 39 में इसकी खुदाई हुई थी। मगर बंद हो गई। उत्खनन के दौरान मौर्यकालीन ईंटें, आहत सिक्के, ताँबे की बनी चूड़ियाँ प्राप्त हुईं थीं। फिलहाल ये उज्जैन के संग्रहालय में हैं।

उज्जैन से सम्राट अशोक का गहरा रिश्ता था, राजा होने के पहले भी और बाद में भी। वैश्य टेकरी की सामग्री इसे मौर्य काल का स्तूप होने का प्रमाण प्रस्तुत करती है।





44. मौर्य सम्राट अशोक ही साँची स्तूप के मूल सर्जक थे। बाद में 12 वीं सदी तक इसका विकास होता रहा।

साँची स्तूप की खोज के दो सौ साल ... 1818 में आज से ठीक दो सौ साल पहले जनरल टेलर ने इसे खोजा था।

साँची स्तूप के निर्माण में कई राजवंशों, देश के कई गाँव, शहर के लोगों, उनके संबंधियों, विभिन्न पेशा से जुड़े दानदाताओं ने योगदान किया है।

स्तूप की वेदिकाओं, स्तंभों पर अनेक गाँव, शहरों के नाम, दानदाताओं के नाम ब्राह्मी लिपि में लिखे हुए हैं।

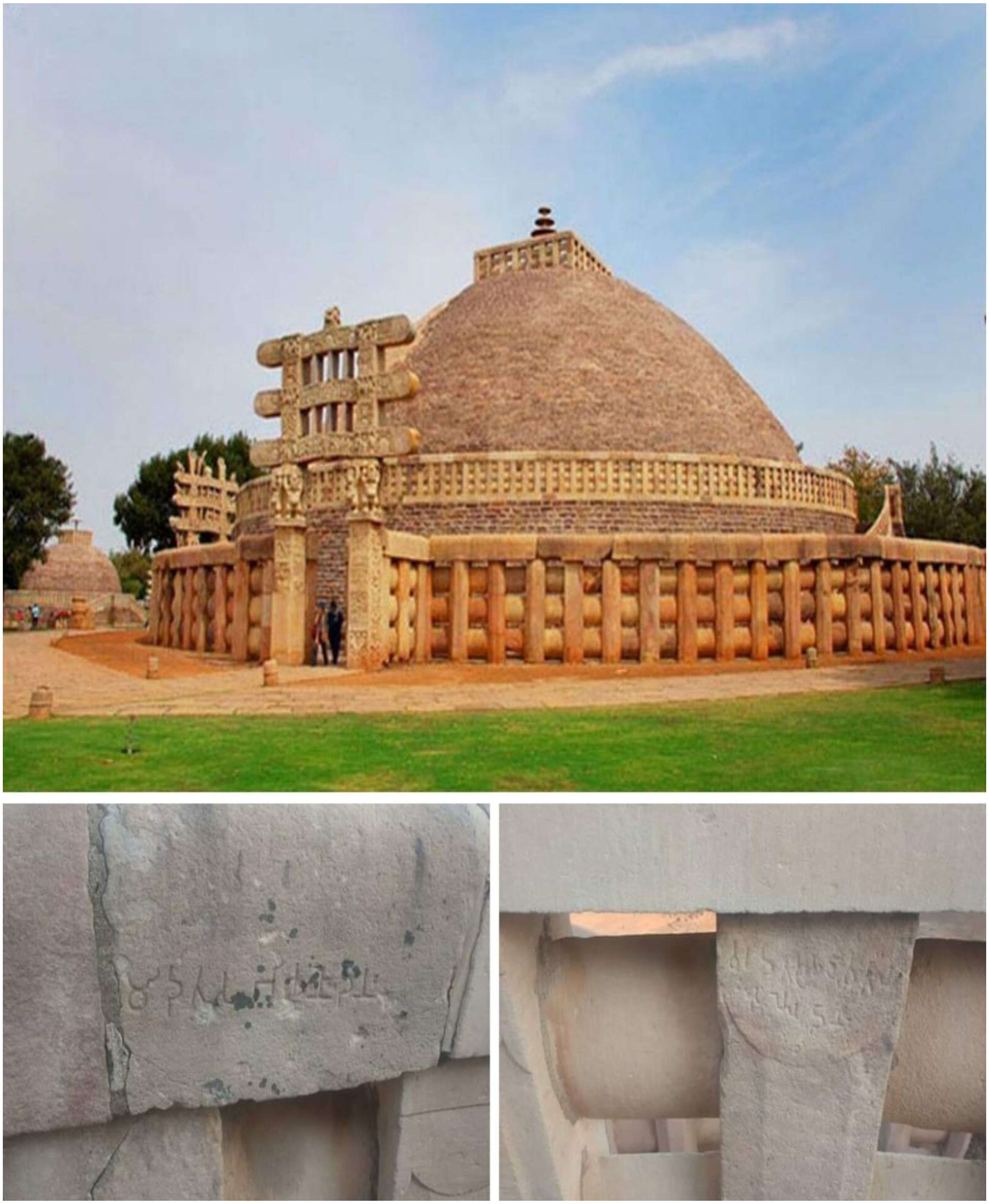
भारत के गाँवों, शहरों और लोगों के नाम जो लिखे हुए हैं, उसे पढ़कर सहसा विश्वास ही नहीं होता है कि हमारे पूर्वज- पुरखे कभी अपना नाम, अपने गाँव का नाम प्राकृत भाषा में ऐसे रखा करते थे।

अब देखिए ना, कुछेक गाँवों - शहरों के नाम ... पहले तो साँची का नाम ही काकनादबोट था, फिर अनेक गाँव, शहरों के नाम अंकित हैं ... उजेन, कुरारा, भोगावाधन, कम्दगीगम, कुर्घरा आदि आदि!

तब लोगों के नाम भी प्राकृत भाषा में हुआ करते थे ... आप नीचे का अभिलेख पढ़िए ... ये साँची स्तूप के दानदाता हैं ... इनका नाम है - मिदतु! ऐसे अनेक लोगों का नाम वहाँ के अभिलेखों में दर्ज हैं - केकट, धमासिव, वहना, वजिगुत, कादक्ष, वाकला, नगादिन, अयपसनक, काबोज, विसकम, धमरिवत आदि!

अब गाँव - शहरों के नाम, लोगों के नाम संस्कृतनिष्ठ होते जा रहे हैं। प्राकृत नाम बीते युग की बात हो गई है। इन गाँवों - शहरों के नाम, लोगों के नाम, ऐसा लगता है मानो किसी दूसरे देश का नाम हो।

ये नाम लिखित हैं ... पत्थरों पर लिखित हैं ... प्रामाणिक हैं। हमारी भाषाई संस्कृति कितनी बदल गई है कि हम आज अपने पूर्वजों के नाम और गाँव भी नहीं पहचान पा रहे हैं!



45. जैसा कि मैंने कहा है कि साँची स्तूप के प्रथम निर्माता सम्राट अशोक हैं। बाद में अनेक लोगों ने अनेक जगहों से आकर इसे विकसित करने में मदद की।

पिथौरागढ़ से धर्मेन्द्र सिंह ने साँची स्तूप के स्तंभ से लिए गए एक अभिलेख का चित्र पढ़ने के लिए भेजा है।

प्राचीन अभिलेखों को पढ़ने से अधिक कठिनाई उसका अर्थ करने में होती है।

कारण कि प्राचीन अभिलेखों के शब्दों के बीच हिंदी की भाँति गैप नहीं होता है। गैप नहीं होने की वजह से शब्द आपस में घुल-मिल जाते हैं। शब्दों को तोड़ना कठिन कार्य है।

एक और कठिनाई यह है कि आज की तारीख में शब्दों के अर्थ काफी कुछ बदल चुके होते हैं। इसलिए सही अर्थ के लिए हजारों साल पीछे जाना होता है।

साथ ही अनेक अक्षर मिटे हुए होते हैं। कभी लिपिकार से भी लिखने में गलती हो जाती है। इससे समस्या और बढ़ जाती है।

आइए, इसे पढ़ते हैं। लिखा है - ओडियनदिनगरिकयदन।

आइए, इसे तोड़ते हैं - ओडिय नदिनगरि कय दन।

आइए, इसे शुद्ध करते हैं - ओडिय नदिनगरि कय दानं।

आइए, इसका अर्थ करते हैं - ओडिय = उत्कल देश, नदिनगरि = एक शहर का नाम, कय = किया हुआ, दानं = उत्सर्ग।

आइए, इसका भावार्थ देते हैं - उत्कल देश या उड़ीसा प्रांत की नदीनगरी (के लोगों) का किया हुआ उत्सर्ग या त्याग या सहयोग।

आइए, इसका विश्लेषण करते हैं। पहली बात यह कि नदिनगरी के अनेक दाताओं ने साँची स्तूप के लिए उत्सर्ग किए जैसे नदिनगरि के काबोज भिक्षु ने उत्सर्ग किए थे, नदिनगरि के अचल भिक्षुणी ने भी उत्सर्ग किए थे।

नदिनगरि वस्तुतः पश्चिम बंगाल का शहर नदिया जान पड़ता है। तब उत्कल और बंग की सीमारेखा एक दूसरे को काटती - छूती होगी।

साँची स्तूप के निर्माण में देश के कोने - कोने से सहयोग राशि आई थी। उड़ीसा भी अपवाद नहीं था।



46. एक पुस्तक है - गया और बुद्ध गया (1931 - 34 का अंग्रेजी पुनर्मुद्रण , 1975) । लेखक हैं - डॉ. बेनीमाधब बरूआ (1888 - 1948)। डॉ. बरूआ चटगांव जिले के थे और पालि में कोलकाता से एम.ए. थे।

डॉ. बरूआ ने कीलहार्न द्वारा संपादित पाल वंश के राजा नयपाल (1038 - 53) का शिलालेख (1040 ई.) के संदर्भ से बताया है कि गया के ब्राह्मण तीर्थस्थल 11 वीं सदी के बाद के हैं।

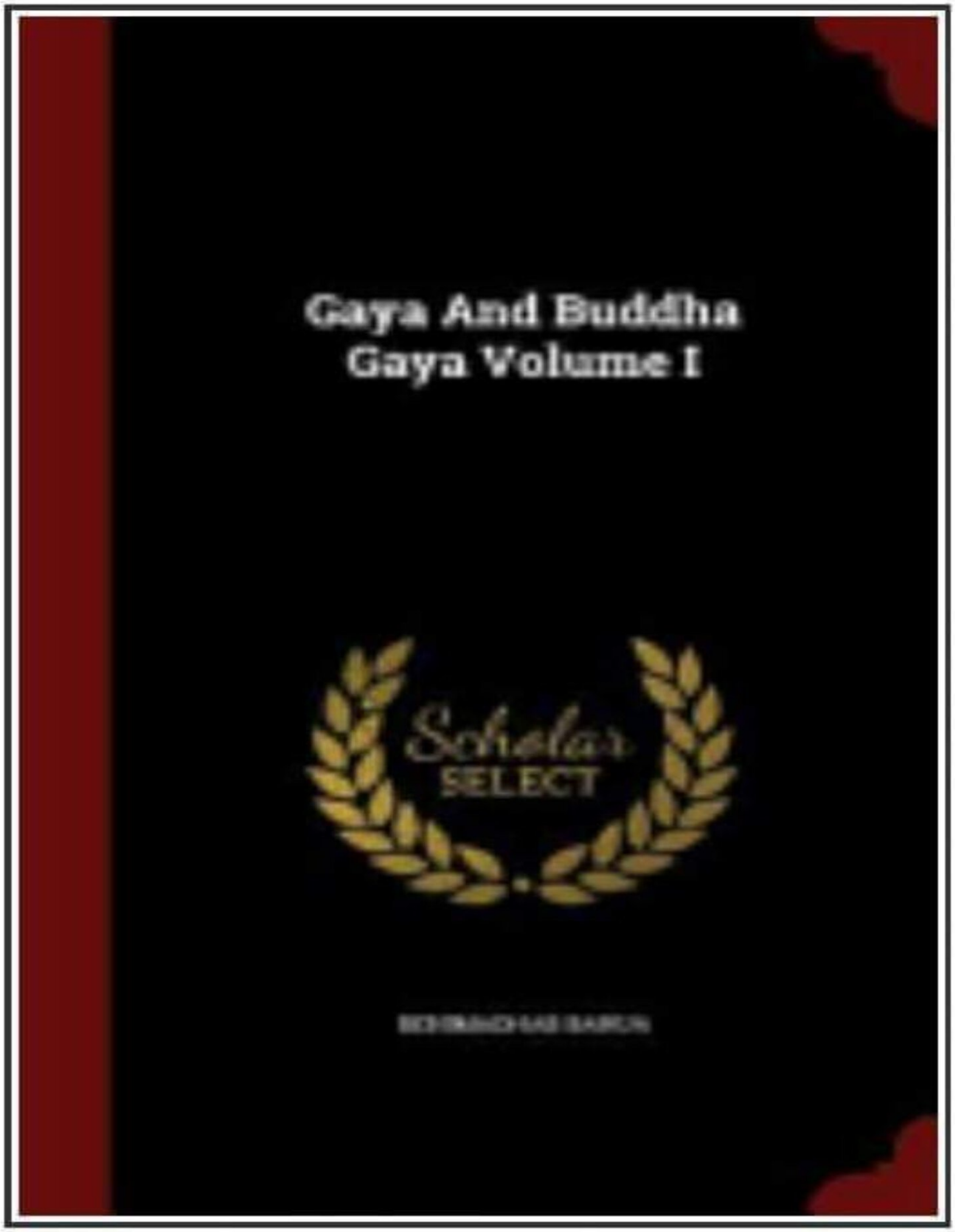
गिरनार के आठवें शिलालेख से पता चलता है कि सम्राट अशोक ने अपने अभिषेक के दसवें वर्ष बोध गया गए। यहाँ स्तूप का निर्माण करवाए।

फाहियान तथा ह्वेनसांग ने अशोक द्वारा बनवाए गए स्तूप को देखा था।

बुद्ध के समय में यहाँ कोई प्रसिद्ध नगर नहीं था। उरुवेला नामक गाँव यहाँ बसा था।

कालांतर में बौद्ध धर्म को काउंटर करने के लिए यहाँ एक से बढ़कर एक तीर्थ स्थल बनवाए गए।

(संदर्भ :- डॉ. बेनीमाधब बरूआ : गया और बुद्ध गया, जिल्द 1, पृष्ठ 66)



47. एल. एस. एस. ओ ' मैली ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक " गया " में लिखा है कि गयासुर का मिथक 14 - 15 वीं सदी का है।

गयासुर का मिथक गया के गयावाल पंडों ने गढ़ा है। गयावाल पंडे मध्यकाल के मध्वाचार्य के समय के हैं और उन्हीं के समर्थक हैं।

पौराणिक कथा है कि गया में गयासुर नामक एक राक्षस रहता था। वह तप कर ऐसी शक्ति प्राप्त कर ली कि उसे देखने या छूने से ही लोग मोक्ष पाने लगे।

.....वो ऐसा तो बुद्ध ही थे।

सीधे- सीधे मोक्ष प्रदान करने वाले गयासुर से परेशान देवताओं ने उसकी पीठ पर यज्ञ किया और यह स्थापित किया कि लोगों को मोक्ष यज्ञ और कर्मकांड करने से मिलेगा।

ये गयासुर कौन था? ...और कोई नहीं बुद्ध का विकृतिकरण है।

फाहियान , ह्वेनसांग, इत्सिंग जाने कितनों ने गया की यात्रा की, बुद्ध की चर्चा सबने की, मगर किसी ने गयासुर की चर्चा नहीं की।

डा. बरुआ और ओ'मैली ने बताया है कि गयासुर का मिथक सल्तनत काल का है।

बोध गया से ही सम्राट अशोक की धम्म यात्रा आरंभ हुई थी।

Bengal District Gazetteers

GAYA

BY

L.S.S. O'MALLEY, I.C.S.

3. अशोक : मूल्य , प्रभाव और प्रेरणाएँ

1. मार्क्स के सिद्धांतों को प्रशासन के क्षेत्र में लेनिन ने लागू किया और बुद्ध के सिद्धांतों को प्रशासन के क्षेत्र में सम्राट अशोक ने लागू किया।

बुद्ध के सिद्धांतों को प्रशासन के क्षेत्र में लागू किए जाने की जरूरत है। यहीं समय का तकाजा है।

प्रशासन के क्षेत्र में न केवल मानवाधिकार संरक्षण को बल्कि जीवाधिकार संरक्षण को भी स्थापित करने का श्रेय सम्राट अशोक को है।

जीवों के शोक हरने वाले अशोक को नमन!






2. जयचंद्र विद्यालंकार ने 1938 में इतिहास - प्रवेश नाम से भारत का इतिहास लिखा था।

आज इतिहासकारों में " मौर्य प्रशासन " - " मौर्य प्रशासन " लिखने की होड़ लगी है, जबकि अशोक के शिलालेखों में प्रशासन जैसा कोई शब्द नहीं है।

अशोक के शिलालेखों में " अनुसासन " शब्द है। प्रशासन का इस्तेमाल गुप्त राजाओं के शिलालेखों में है।

जयचंद्र विद्यालंकार ने मौर्य प्रशासन लिखने पर आपत्ति की है और अपने इतिहास- ग्रंथ में " मौर्य प्रशासन " की जगह " मौर्य अनुशासन " का इस्तेमाल किया है।

प्रशासन में प्रकृष्टता का भाव है, जबकि अशोक के अनुसासन में धम्म की करुणा और प्रेम की मिठास है।

प्रशासन में प्रकृष्टता के भाव के कारण आधुनिक काल में पुलिस, फौज, कर्फ्यू, मार्शल ला, लाठी चार्ज, अश्रु गैस, इनकाउंटर जैसे जन दमनकारी औजार विकसित हुए।

जबकि सम्राट अशोक ने जिन औजारों से अपनी जनता से नजदीकियाँ बनाई, वह जन दमनकारी नहीं बल्कि धम्म अनुसासन था, प्रशासन कतई नहीं।

अशोक के राजपद का आदर्श था कि हर समय और हर स्थान पर जनता की आवाज सुनने के लिए मुझे बुलाया जा सकता है, मैं सो रहा होऊँ तब भी।

शायद इसीलिए एच. जी. वेल्स ने लिखा कि इतिहास के पृष्ठों को रंगने वाले हजारों राजाओं के नामों के बीच अशोक का नाम सर्वोपरि नक्षत्र के समान दैदीप्यमान है।



3. सम्राट अशोक भारत के ऐसे प्रथम पालिटिक्ल फिलासफर थे, जिन्होंने राजपद और शासन के आदर्श सबसे पहले लिखित रूप में जारी किए।

अशोक के राजपद का आदर्श था कि हर समय और हर जगह पर जनता की आवाज सुनने के लिए मैं तैयार हूँ।

चाहे रसोईघर में होऊँ, चाहे अंतःपुर में, मैं सो रहा होऊँ या उद्यान में होऊँ, जनता की कोई भी बात मुझ तक पहुँचाई जा सकती है।

छठे शिलालेख में अशोक ने इतना ही नहीं बल्कि यह भी लिखवाया है कि मैं सर्वत्र जनता का काम करूँगा और सभी का हित मेरा कर्तव्य है।

सम्राट अशोक का आदर्श वाक्य था कि सवे मुनिसे पजा ममा अर्थात सभी मनुष्य मेरी संतान हैं।

कर्मचारी जनता के सुख और कल्याण का हमेशा ख्याल रखें, जैसे कुशल धाय बच्चे की प्रसन्नता का ख्याल रखती हैं।

आश्चर्य इस बात की है कि अशोक ने अपने कई लघु शिलालेखों में अवसर की समानता की बात कही है।

अचरज होता है कि आज से कोई सवा दो हजार साल पहले का कोई पॉलिटिक्ल फिलॉसफर, वो भी जो एक राजा हो, इस तरह की बात सोचता हो।

देश के यशस्वी सम्राट अशोक ने पॉलिटिक्ल फिलॉसफी के क्षेत्र में अभूतपूर्व मानदंड स्थापित किए, जिन्हें छूने के लिए अनेक राजा ललचते रहे और छू नहीं पाए।



4. गौतम बुद्ध का जमाना था। तब स्वतंत्र पशु - चिकित्सालय नहीं था।

तत्समय के मशहूर चिकित्सक जीवक थे। राजगीर में उनका चिकित्सालय था।

अब भरहुत स्तूप पर उकेरे गए जीवक के अस्पताल का दृश्य देखिए। (चित्र 1)

चिकित्सालय में औषधियाँ सिकहर (छींका) पर टँगी हुई हैं। जीवक पेट का इलाज कर रहे हैं। संबंधित औषधियाँ सिलबट्टे से पीसी जा रही हैं।

चिकित्सालय में बीमार पशु भी हैं। कराहते बीमार पशुओं का अंकन बड़ा मार्मिक है।

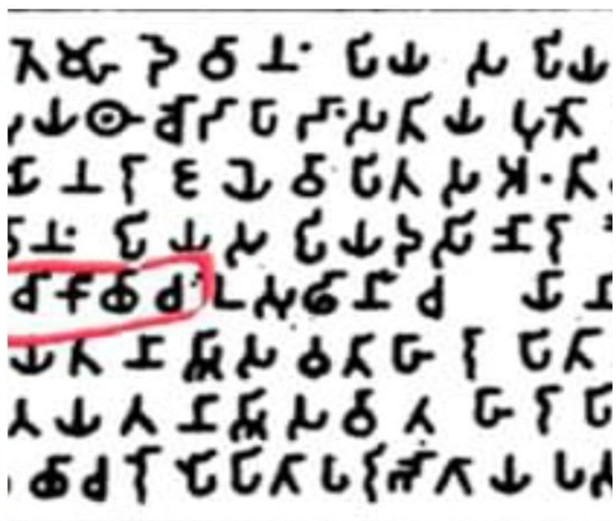
फिर सम्राट अशोक का जमाना आया। सम्राट अशोक ने पशु चिकित्सालय को मनुष्यों के चिकित्सालय से अलग किए।

दूसरे शिलालेख में लिखवाए कि मनुष्य चिकित्सा और पशु चिकित्सा मैंने दो चिकित्साओं को अलग-अलग स्थापित किए।

लाल घेरे में प्राकृत भाषा और धम्म लिपि में लिखा है -- मनुस चिकीछा च पसु चिकीछा। (चित्र 2)

भारत के इतिहास में स्वतंत्र पशु चिकित्सालय खोलने का श्रेय सम्राट अशोक को है।





5. वो एक जमाना था, जब आज का श्री लंका बुद्ध के संदेशों को अशोक की लिपि और भाषा में आत्मसात करता था।

धम्म लिपि के ये शिलालेख भारत के नहीं बल्कि श्री लंका की दम्बुल्ला और सिगिरिय गुफाओं के हैं।

धम्म लिपि .....जो भारत और श्री लंका को जोड़े हुए थी। धम्म लिपि ....जो बुद्ध के संदेशों की वाहक थी।

अशोक ही इस धम्म लिपि के सबसे बड़े संरक्षक थे। श्री लंका को धम्म लिपि बाकायदे देने का श्रेय इस सम्राट को है।

श्री लंका के राजा तिस्स तो अशोक से इतने प्रभावित थे कि उन्होंने खुद देवानंपिय की उपाधि धारण कर ली।

इससे सम्राट अशोक के चुंबकीय व्यक्तित्व को समझा जा सकता है।

पीछे की तरफ भारत का राजचिह्न है।



6. भारत का सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न है।
इस सम्मान के पदक का डिजाइन पीपल की पत्तानुकृति पर सामने में बना 32 तीलियों का धम्म चक्र है।

पीछे की तरफ भारत का राजचिह्न है।

भारत का राजचिह्न सारनाथ स्थित अशोक के सिंह स्तंभ की अनुकृति है।

मूल स्तंभ में शीर्ष पर एक - दूसरे की ओर पीठ किए हुए चार सिंह हैं।

सिंह 32 तीलियों का धम्म चक्र कंधों पर उठाए हुए हैं।

32 तीलियों का एक धम्म चक्र पत्थर का बना हुआ कनगनहल्ली - सन्नति (कर्नाटक) से, दूसरा टेराकोटा का लुंबिनी (नेपाल) से और तीसरा चट्टान पर बना हुआ कोठापल्ली (आंध्र प्रदेश) से मिला है।

भारत रत्न का न केवल रत्न (त्रिरत्न) बल्कि पीपल, धम्म चक्र और सिंह चतुर्मुख भी बौद्ध सभ्यता से प्रेरित है।



7.किसी ने सम्राट अशोक को क्रूर शासक बता दिया तो जानिए अशोक का नाम शांति, अनाक्रमण, लोक कल्याण और सांस्कृतिक विजय की नीति के लिए अमर है, जिसका कोई दूसरा उदाहरण एशिया के इतिहास में नहीं मिलता है।

जगह - जगह मनुष्यों और पशुओं के लिए चिकित्सालय बनवाए, कुएँ खुदवाए और सड़कों पर पेड़ लगवाए। सब पंथों के लोग प्रेम और सहिष्णुता से रहें, ऐसी शिक्षा देने की व्यवस्था कराई।

ऐसा जान पड़ता है कि समूचे मध्य और पश्चिमी एशिया, मिस्र, बेनगाजी तक उत्तरी अफ्रीका और यूनान तक अशोक के धम्म कार्य फैले हुए थे।

मिस्र इसका अपवाद है, जहाँ का शासक अखनातन ने ईसा पूर्व 14 वीं सदी में अशोक जैसी शांतिवादी नीति अपनाई थी।



8.बौद्ध सभ्यता के प्रचार - प्रसार का जो काम उत्तर के मौर्यों ने किया, वही काम दक्षिण में सातवाहनों ने किया।

अशोक के सभी अभिलेख प्राकृत में हैं तो सातवाहनों के भी सभी अभिलेख प्राकृत में हैं।

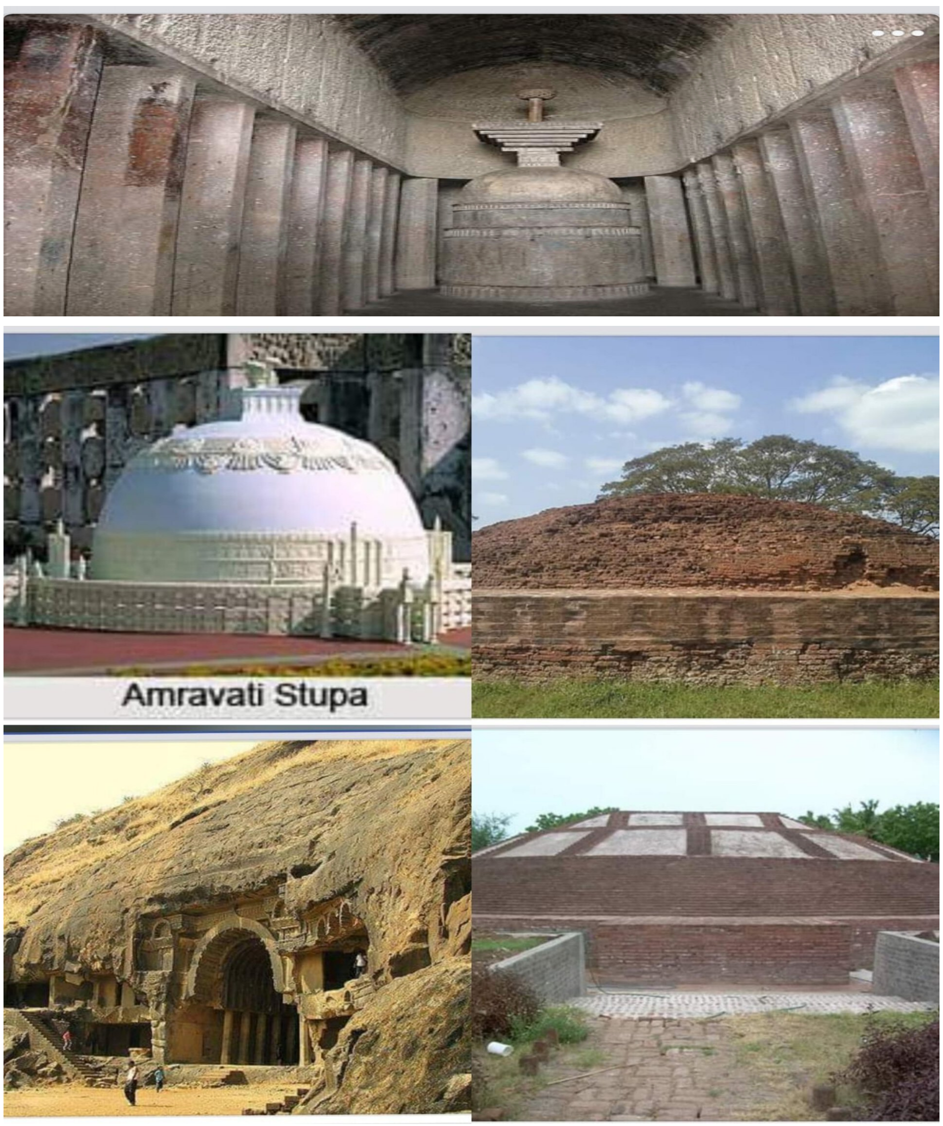
उत्तर में मौर्य काल तक संस्कृत के अभिलेख नहीं मिलते हैं तो दक्षिण में भी सातवाहन काल तक संस्कृत के अभिलेख नहीं मिलते हैं।

मौर्यों ने अनेक स्तूप, चैत्य और विहार बनवाए तो सातवाहनों ने भी अनेक स्तूप, चैत्य और विहार बनवाए।

अमरावती, गोली, जगय्यपेटा, घंटसाल, भट्टीप्रोलु, नागार्जुन कोंडा जैसे स्थानों के स्तूप इन्हीं सातवाहनों के हैं।

पीतलखोरा, नासिक, भाजा, कार्ले, जुन्नार, बेदसा, कोण्डने आदि स्थानों की बौद्ध गुफाएँ, चैत्य इन्हीं सातवाहनों के नाम हैं।

इससे पता चलता है कि मौर्य वंश और अशोक ने किस तरह से आने वाले राजवंशों को प्रभावित किए।



9. सिंधु घाटी सभ्यता की लिपि दरअसल ब्राह्मी लिपि (अशोक की धम्म लिपि) का पूर्व रूप है। फिर हम क्यों नहीं पढ़ पाते हैं? इसे समझिए।

देवनागरी लिपि आप पढ़ लेते हैं, मगर हजार साल पहले की नागरी लिपि जो इसी देवनागरी का पूर्व रूप है, आप नहीं पढ़ पाइएगा। कारण कि हजार साल में लिपि- चिह्नों में काफी बदलाव आ जाता है।

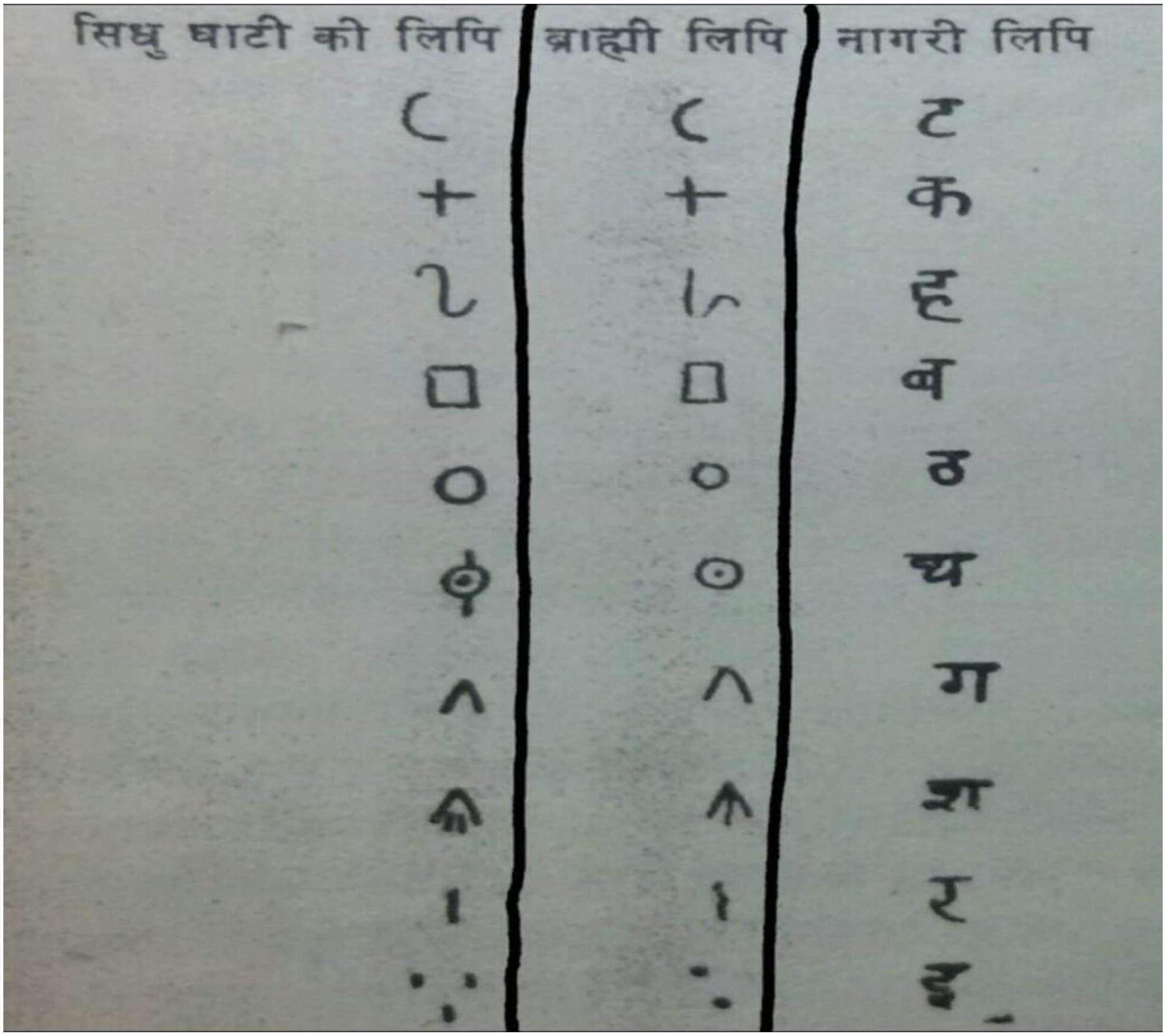
आप अशोक की लिपि को पढ़ लेते हैं, पर जरूरी नहीं है कि उसके हजार साल पहले की सिंधु लिपि जो उसका पूर्व रूप है, उसको भी पढ़ पाइएगा।

कोई भी अज्ञात लिपि तब पढ़ी जाती है, जब उसका द्विभाषी अभिलेख मौजूद हो जिसमें कि एक लिपि ज्ञात हो। अशोक के अभिलेख द्विभाषी हैं। इसीलिए वे पढ़े जा सके हैं। या फिर अभिलेख काफी लंबे हों ताकि बार- बार किसी खास लिपि- चिह्न को आने पर उसके संकेतों को पकड़ा जा सके। अशोक के अभिलेख लंबे हैं, जिसमें एक ही लिपि - चिह्न बार - बार आ रहा है। इसलिए वे पढ़े जा सके हैं।

मगर सिंधु घाटी के अभिलेख छोटे- छोटे हैं और वे द्विभाषी भी नहीं हैं। इसलिए उसे पढ़ने में कठिनाई आ रही है। सिंधु लिपि को पढ़ने के लिए बैक- सिद्धांत अपनाना होगा और ब्राह्मी के लिपि- चिह्नों का अनुगमन करते हुए पीछे की ओर लौटना होगा यानि सिंधु लिपि तक! मगर सिंधु लिपि और ब्राह्मी लिपि के बीच की कड़ियाँ गुम हैं। बैक - सिद्धांत के रास्ते में यही बड़ी कठिनाई है। मार्ग कठिन है, मगर असंभव नहीं है।

अंतिम बात यह कि अशोक के अभिलेखों की प्राकृत भाषा ज्ञात थी। सिर्फ लिपि अज्ञात थी। इसलिए अशोक के अभिलेख को पढ़ने में सहूलियत हुई। मगर सिंधु घाटी सभ्यता की भाषा और लिपि दोनों अभी अज्ञात बनी हुई हैं। इसलिए पढ़ने में कठिनाई है।

सिंधु घाटी सभ्यता की लिपि दो प्रकार की हैं। एक चित्रात्मक और दूसरी अक्षरात्मक। अक्षरात्मक लिपि के अनेक चिह्न सम्राट अशोक की लिपि से मेल खाते हैं। आप नीचे की तस्वीर में इसके तुलनात्मक अध्ययन को देखिए।



10. पहली तस्वीर सम्राट अशोक द्वारा इस्तेमाल की गई धम्म लिपि की है। धम्म लिपि का चौथी सदी में जो स्वरूप था, वह तस्वीर में अंकित है।

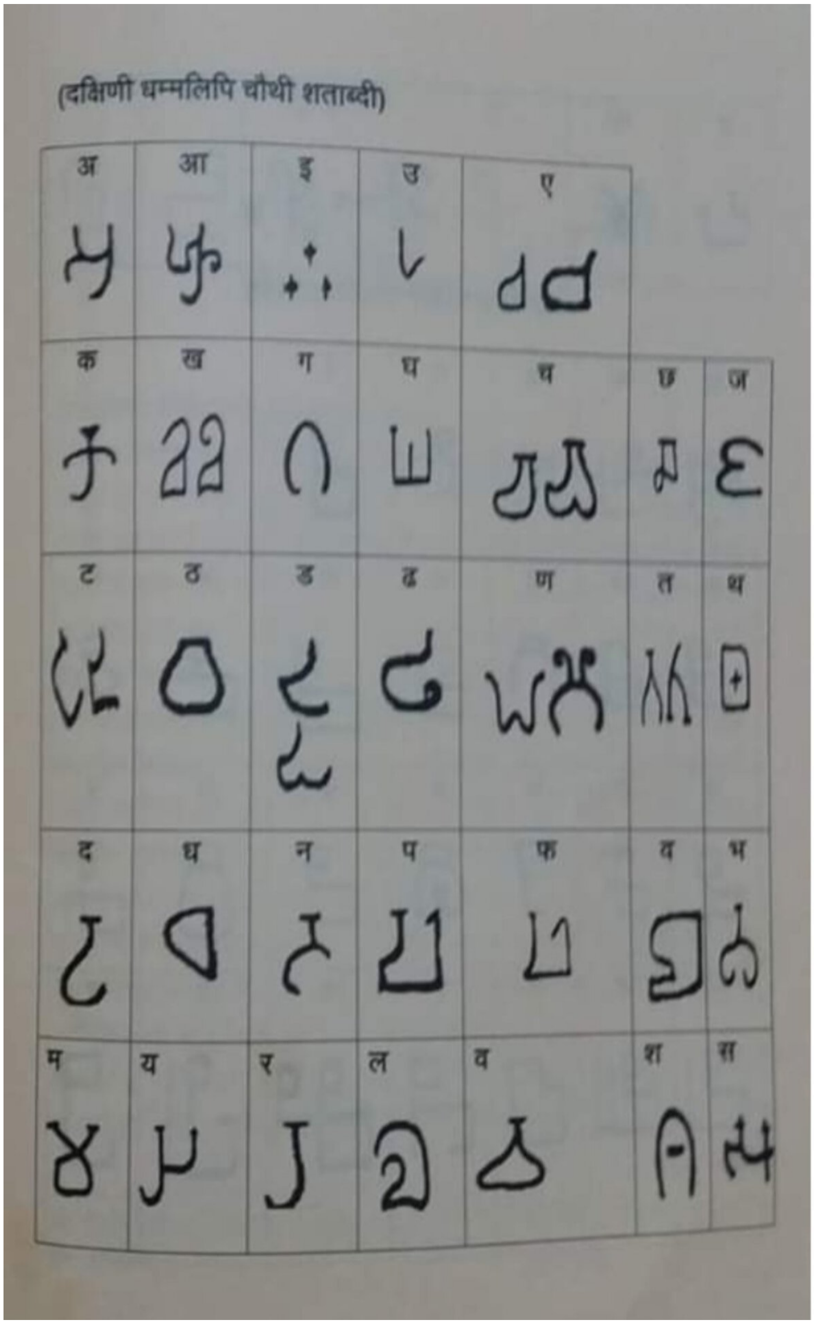
दूसरी तस्वीर कम्पूचिया की खेमिर लिपि की है। खेमिर लिपि की आठवीं सदी में जो स्वरूप था, वह चित्र में अंकित है।

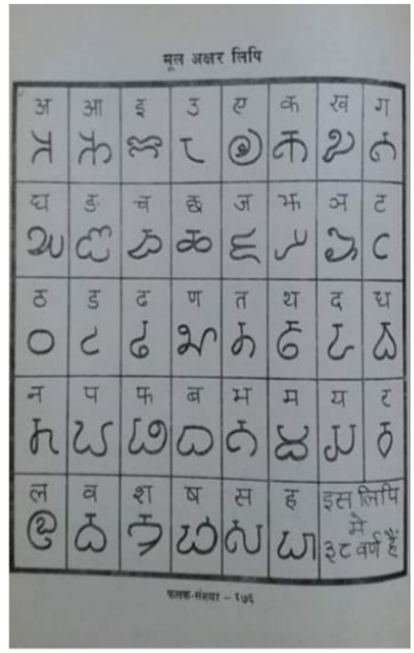
आप तुलना कर देख सकते हैं कि कम्पूचिया की खेमिर लिपि वस्तुतः धम्म लिपि का ही विकास है।

अ, आ, क, घ, ज, ठ, ढ, द, म, य वगैरह पर ध्यान दीजिए।

धम्म लिपि से न सिर्फ नागरी, शारदा, टाकरी, लंडा और गुरुमुखी जैसी भारतीय लिपियों का विकास हुआ है बल्कि तिब्बती तथा दक्षिण-पूर्व एशिया की अनेक आधुनिक लिपियाँ भी इसी से विकसित हुईं हैं।

तीसरी तस्वीर में धम्म लिपि का तुलनात्मक आँकड़ा है।







11.सम्राट अशोक के पिता ने यूनान से दार्शनिक की माँग की थी, अशोक ने उससे बड़ा दार्शनिक यहीं खोज ली थी।



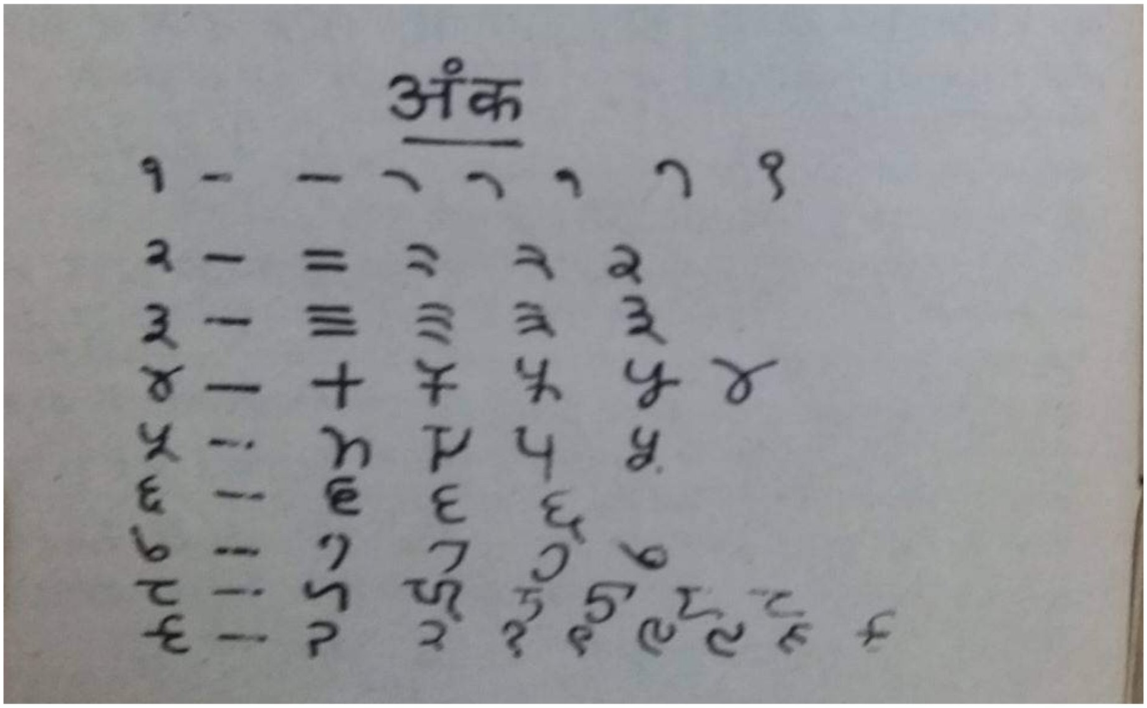
12. दुनिया को 1, 2, 3 .... लिखने का तरीका बौद्ध सभ्यता ने सिखाया है।

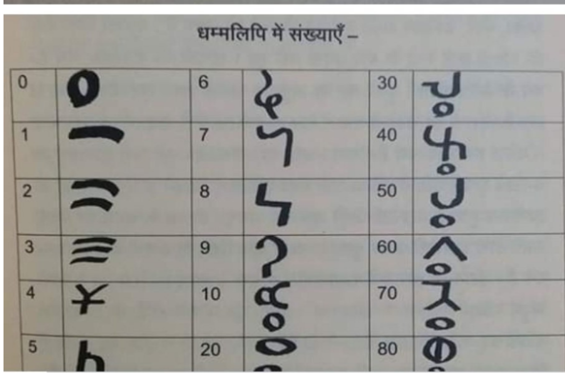
बौद्ध सभ्यता की लिपि ब्राह्मी से लेखन में 1, 2, 3 ..... का विकास हुआ है।

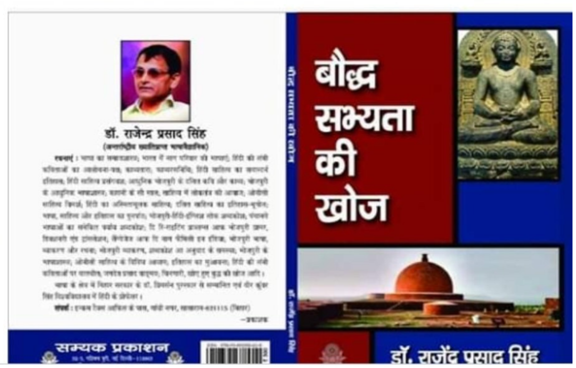
सबसे पहले सातवीं सदी में इसे अरबों ने सीखा और हिंदसा (हिंद देश से प्राप्त) कहा।... अरबों से बारहवीं सदी में इसे यूरोप ने सीखा और अरेबिक कहा।

यूरोप में बारहवीं सदी के बाद जो वैज्ञानिक और औद्योगिक क्रांति हुई, उसमें बौद्ध सभ्यता के 1, 2, 3 ......का बहुत बड़ा योगदान है।

हर सभ्यता बौद्ध सभ्यता नहीं होती! धम्म लिपि उर्फ ब्राह्मी लिपि से 1,2,3... अंकों का विकास कैसे हुआ, जिसे बाद में दुनिया ने अपनाया। विकास- क्रम देखिए। धम्म लिपि में अंकों का लेखन जो अलग- अलग धम्म लिपि के शिलालेखों से लिए गए हैं ,देखिए ।







13. तब भारत के गांधार क्षेत्र में प्राकृत भाषा और लिपि का प्रचलन था।

समय पलटा और गांधार देश पर ईरान के हखामनी राजाओं की हुकूमत आ गई।

गांधार में ईरान के अधिकारी नियुक्त हुए। ये अधिकारी वर्ग आरमी लिपि (आरमेई/ आरमाइक) पढ़ते और जानते थे।

मगर गांधार की जनता ब्राह्मी लिपि जानती थी।

गांधार में ईरान के अधिकारी वर्ग और जनता के बीच राजकाज में संवाद की समस्या आ खड़ी हुई।

तब वहाँ के विदेशी अधिकारी और यहाँ की देशी जनता दोनों की सहूलियत के लिए कामचलाऊ लिपि खरोष्ठी का विकास हुआ।

खरोष्ठी की लिपि की शैली दाएँ से बाएँ की ओर आरमी लिपि की भाँति बनी रही, आरमी लिपि की भाँति स्वरों का अभाव भी खरोष्ठी के लेखन में बना रहा, मगर खरोष्ठी लिपि की भाषा प्राकृत ताजिंदगी बनी रही।

खरोष्ठी एक कामचलाऊ लिपि थी। इसके प्रचलन का प्रमुख समय पुरातत्व के हिसाब से ईसा पूर्व 3 री सदी से ईसा के 3 री सदी तक था। बाद में भी क्षीण प्रयोग मिलता है। मगर प्रमुख समय वहीं था।

कहना न होगा कि वो समय सम्राट अशोक का ही है।



14. भारत में हाथियों के संरक्षण के लिए 1992 में " गजतमे " नाम से एक परियोजना की शुरुआत की गई थी।

वह सम्राट अशोक के कालसी शिलालेख का हाथी है, जिसके नीचे ब्राह्मी लिपि में " गजतमे " लिखा हुआ है।

यह पशुओं के नीचे नाम लिखे जाने का संभवतः भारत में प्रथम उदाहरण है।

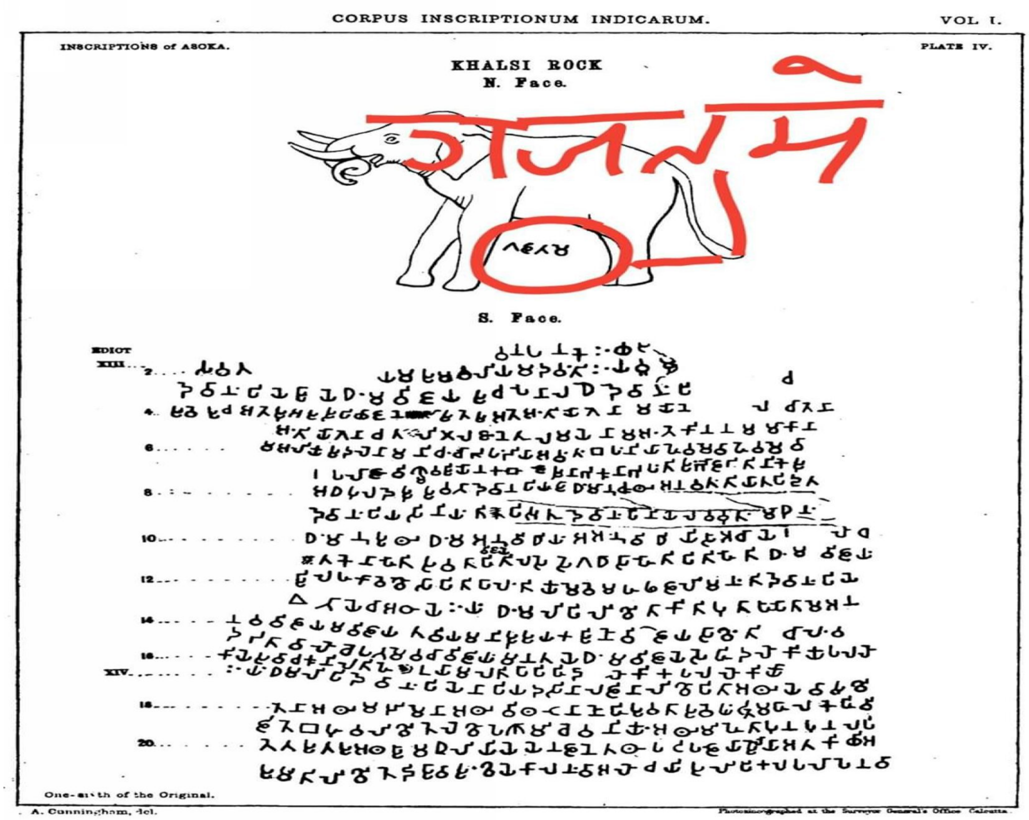
अशोक चक्र भी सम्राट अशोक के नाम पर है। इसका आरंभ 4 जनवरी, 1952 को हुआ था।

यह भारत का सर्वोच्च वीरता पदक है।

चक्र के केंद्र में अशोक चक्र की प्रतिकृति उत्कीर्ण होती है। पश्चभाग पर हिंदी तथा अंग्रेजी में " अशोक चक्र " लिखे होते हैं।

सही अर्थों में सम्राट अशोक प्रथम राष्ट्रीय शासक थे, जिन्होंने पूरे राष्ट्र को एक भाषा और लिपि देकर एकता के सूत्र में बाँध दिए।

स्वतंत्र भारत ने सारनाथ स्तंभ के सिंह - शीर्ष को अपने राजचिह्न के रूप में ग्रहण कर मानवता के इस महान नायक के प्रति अपनी सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित की है।



15. अशोक - चक्र ने स्तूप - कला को प्रभावित किया।

स्तूप का नाम सुनते ही दिमाग में एक अर्द्ध गोलाकार संरचना की तस्वीर उभरती है।

लेकिन रूकिए, हर जगह का स्तूप अर्द्ध गोलाकार नहीं है। एक स्तूप धम्म चक्क के आकार का है, जिसमें आठ आरे बने हुए हैं। धम्म चक्क में भी 8 आरे हैं।

एक दूसरे स्तूप में आरों की संख्या क्रमशः 12, 24 और 32 है। बीच की संख्या अशोक - चक्र की याद दिलाती है। अशोक - चक्र में भी 24 आरे हैं।

ऐसे स्तूप पंजाब के जिला फतेहगढ़ साहिब के गाँव संघोल में मिले हैं। कभी संघोल में भिक्षु संघ था। इसीलिए इसका नाम संघोल है।

स्तूप की खुदाई 1968 में हुई थी। स्तूप से एक सोप पत्थर की मंजूषा मिली है।

मंजूषा के ढक्कन पर खरोष्ठी लिपि में एक बौद्ध स्कालर का नाम लिखा है। वह स्कालर भद्रक थे। उन्हीं का अस्थि - भस्म उस मंजूषा में है।





16. सम्राट अशोक ने वास्तुकला के इतिहास में एक नई शैली चलाई।

गया के निकट बराबर की पहाड़ियों में अशोक ने आजीवकों को गुहा दान दिए। गुहा के अंदर चमकती हुई पालिश है।

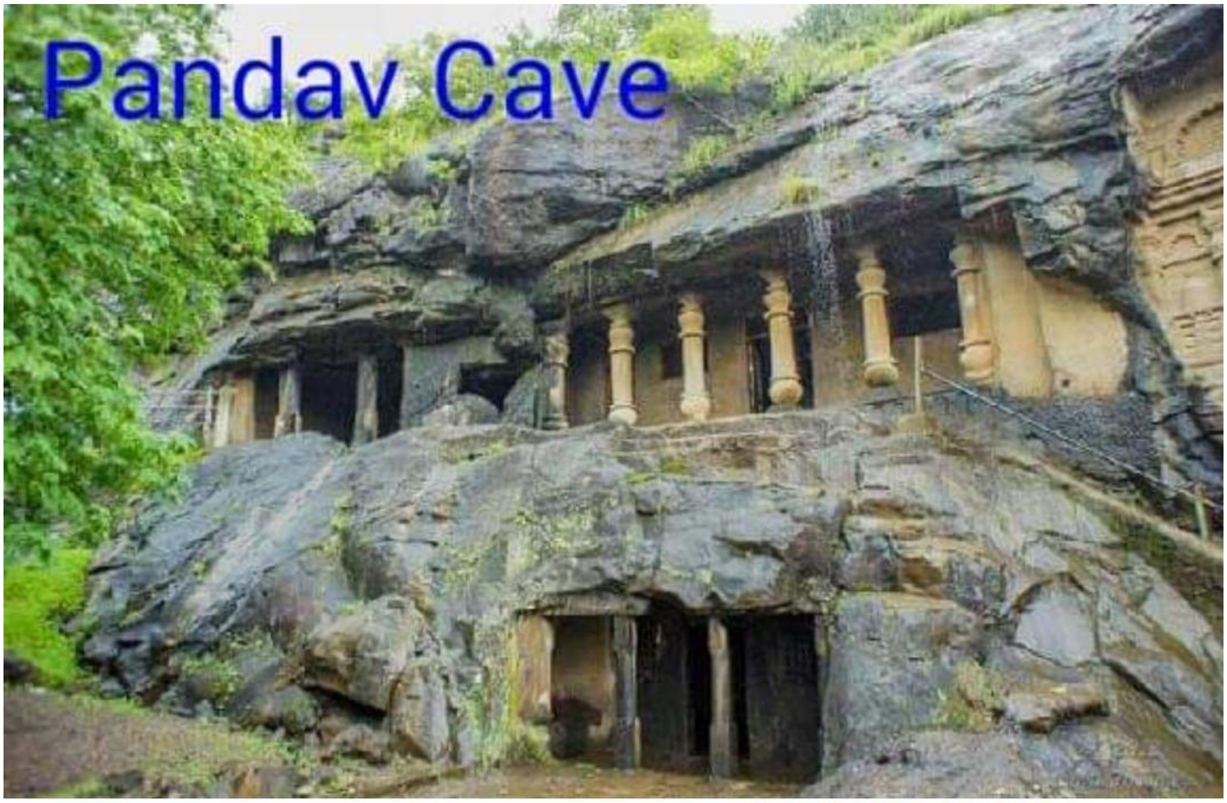
जाहिर है कि चैत्यों का मौलिक विकास अशोक के समय में आरंभ हुआ। बाद में चलकर इस शैली का विकास महाराष्ट्र के भाजा, कन्हेरी और कार्ले चैत्यगृहों में दिखाई पड़ता है।

महाराष्ट्र में नासिक के पास बौद्ध गुफाएँ हैं। इसे पांडव गुफाएँ कहा जाता है।

विराटनगर में सम्राट अशोक के अभिलेख और बौद्ध स्तूप मिले हैं। इसे पांडवों का अज्ञातवास बताया जाता है।

गया का पास बराबर की पहाड़ियों में मौर्य राजाओं के बनाए बौद्ध गुफाएँ हैं। इसे सुदामा गुहा और गोपी गुहा कहा जाता है।

कोई शक नहीं कि ये तमाम स्थान महाभारत के पात्रों से मौर्य काल के बाद में जोड़े गए हैं।







17. वे इतिहासकार जो मौर्यों की कारीगरी को ईरान में जाकर खोजते हैं, वे क्यों नहीं बताते हैं कि मौर्यों का शाही महल ईरान के सूसा और एकबटना के शाही महल से किस कारण अधिक सुंदर और शानदार था।

पाटलिपुत्र का शाही महल ईरान के शाही महल से अधिक सुंदर और शानदार था, यह बात न तो भारत और न ईरान के इतिहासकारों ने बताई है बल्कि यूनान के इतिहासकारों ने बताई है। पक्षपात की कोई गुंजाइश नहीं है।

अब अशोक कालीन रामपुरवा के इस बैल की मूर्ति को लीजिए, देखिए पूरा मूर्ति - विन्यास सिंधु घाटी के उस कूबड़दार वृषभ (तथाकथित) से मेल खाता है।

यदि कोई शक हो तो फिर मौर्य कालीन इस हाथी के उत्कीर्णन को देखिए, वो भी सिंधु घाटी सभ्यता के सीलों पर उत्कीर्ण हाथी से कैसे मेल खाता है।

भला जिस देश के पास सिंधु घाटी की विरासत हो, वह कहाँ - कहाँ की जूठन खाता चलेगा?



<u>4. अशोक : गल्प , मिथ और लिजिन्ड्रियाँ</u>

1. तो क्या सोने का लंका पाटलिपुत्र ही था?

मेगस्थनीज ने लिखा है कि मौर्यों के शाही महल के स्तंभों पर सोने की बेलें चढ़ी थीं ... चाँदी के पक्षियों को उन पर सजाया गया था। सोने- चाँदी से शाही महल सुसज्जित था। लंका भी सोने का था।

मौर्यों के शाही महल को जलाए जाने का प्रमाण है ... सोने- चाँदी से सुसज्जित होने के भी प्रमाण हैं। लंका को भी जलाए जाने का वर्णन है ...सोने का होने का भी वर्णन है।

लंका में अशोक वाटिका थी। पाटलिपुत्र में अशोकाराम था, जिसमें बौद्ध संगीति हुई थी।

राहुल सांकृत्यायन ने लिखा है कि मौर्य वंश के दस राजे ही रावण के दस सिर के प्रतीक हैं।

तो क्या सोने का लंका पाटलिपुत्र ही था?

इतिहास गवाह है कि पाटलिपुत्र में चैत्य काफी थे। वाल्मीकि के हनुमान लंका जाकर चैत्य ही जलाते हैं और अशोक- वाटिका उजाड़ते हैं।

वाल्मीकि ने लंका के संदर्भ में चैत्य शब्द का प्रयोग किया है।

तमिल की परंपरा यह है कि कोई भी शब्द " र " या " ल " से आरंभ नहीं किया जाएगा। इसलिए रावण और लंका तमिल परंपरा के शब्द नहीं हैं।

ये रहा मौर्यों के शाही महल के अवशेष!!!



पटना के कुम्हरार में खुदाई के दौरान की तस्वीर। खुदाई के दौरान यहां मौर्य कालीन अवशेष मिले थे। इनमें मौर्य कालीन स्तंभ शामिल थे

2. तो क्या अशोक का चपड़ ही चाणक्य है?

सम्राट अशोक का एक लघु शिलालेख सिद्धापुरा में है। सिद्धापुरा कर्नाटक के चित्रदुर्ग जिले में है।

सिद्धापुरा शिलालेख के लेखक (लिपिकार) चपड़ हैं।

चपड़ अशोक के दक्षिण भारत के शिलालेखों के भी लेखक हैं।

किंतु वे दक्षिण भारत के नहीं थे। वस्तुतः वे पश्चिमोत्तर भारत के निवासी थे। चाणक्य का रिश्ता भी पश्चिमोत्तर से था।

कहा जाता है कि लेखक जहाँ कहीं का भी होता है, उसकी भाषा और लिपि पर कहीं न कहीं उसकी मातृभाषा और लिपि की छाप होती है।

सिद्धापुरा शिलालेख पूरी तरह से ब्राह्मी लिपि में लिखित है। मगर अंत में चपड़ ने " लिपिकार " को खरोष्ठी लिपि में लिख दिए हैं - दाएँ से बाएँ की ओर।

खरोष्ठी का प्रचलन भारत के पश्चिमोत्तर में गांधार क्षेत्र में था। तक्षशिला उसकी गतिविधियों का बड़ा केंद्र था।

कोई शक नहीं कि चपड़ का यह खरोष्ठी प्रेम उन्हें तक्षशिला की ओर खींच ले जाता है।

वहीं तक्षशिला जिसे चाणक्य से जोड़ा जाता है।

ज्ञात सबूतों के आधार पर कहा जाएगा कि सम्राट अशोक के दरबार का सबसे बड़ा लेखक चपड़ था।

ब्रह्मगिरी और जटिंग- रामेश्वर जैसे शिलालेखों को लिखने का श्रेय लेखक चपड़ को ही प्राप्त है। बाकायदे अभिलेखों के नीचे लेखक चपड़ का नाम दर्ज है।

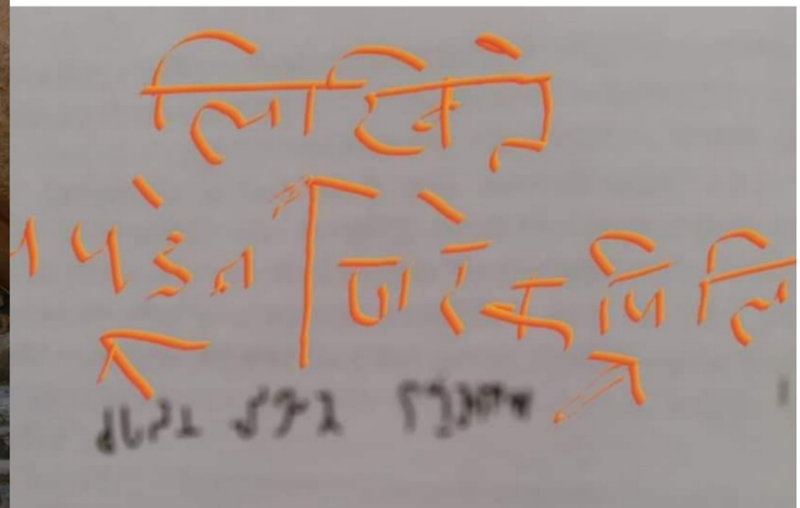
आश्चर्य कि लेखक चपड़ का नाम किसी किताब में दर्ज नहीं है। इतिहासकारों ने मौर्यकालीन लेखकों में चाणक्य की गणना गाजे- बाजे के साथ किया है, मगर चपड़ को छोड़ दिया है।

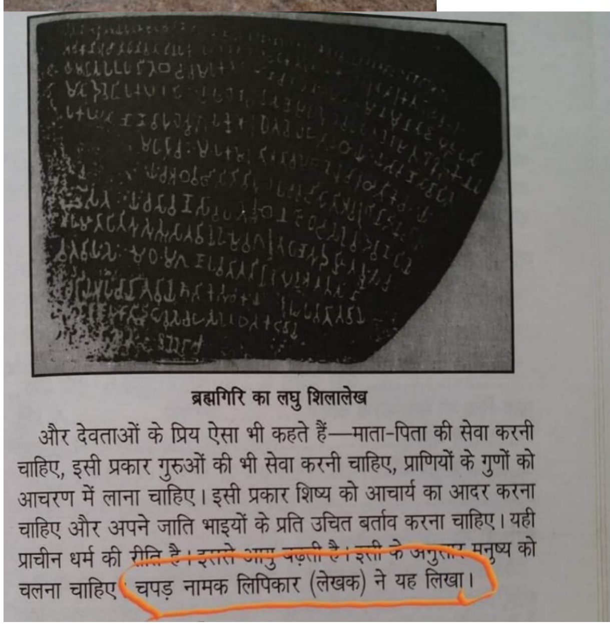
मौर्यकाल का जो ऐतिहासिक लेखक है, वह गायब है, जो अनैतिहासिक है, वहीं सिर चढ़कर बोल रहा है।

मौर्य राजाओं को संस्कृत नहीं आती थी और चाणक्य को प्राकृत नहीं आती थी ।

जाने कैसे मौर्य राजे चाणक्य से सलाह लिया करते थे ?






ब्रह्मगिरि का लघु शिलालेख

और देवताओं के प्रिय ऐसा भी कहते हैं—माता-पिता की सेवा करनी चाहिए, इसी प्रकार गुरुओं की भी सेवा करनी चाहिए, प्राणियों के गुणों को आचरण में लाना चाहिए। इसी प्रकार शिष्य को आचार्य का आदर करना चाहिए और अपने जाति भाइयों के प्रति उचित बर्ताव करना चाहिए। यही प्राचीन धर्म की रीति है। इससे आयु बढ़ती है। इसी के अनुसार मनुष्य को चलना चाहिए। चपड़ नामक लिपिकार (लेखक) ने यह लिखा।



3. तो क्या पुराणों में वर्णित अशोकाष्टमी ही अशोक जयंती है?

अशोकाष्टमी का विस्तृत विवरण हमें कृत्यरत्नावली, कूर्मपुराण तथा व्रत परिचय में मिलता है। (पुराणकोश, पृ. 36)

पुराणों के अनुसार अशोकाष्टमी व्रत चैत शुक्ल अष्टमी को किया जाता है। इस दिन व्रत रखकर अशोक वृक्ष की पूजा की जाती है।

व्रत - कथा यह है कि रावण की नगरी लंका में अशोक वाटिका के नीचे इसी दिन जानकी माता को हनुमान जी के माध्यम से श्री राम का संदेश प्राप्त हुआ था।

आश्चर्य कि ठीक चैत शुक्ल अष्टमी को ही अशोक जयंती मनाई जाती है। पाटलिपुत्र का यह जयंती - समारोह फाहियान ने अपनी आँखों से देखा था और जिसका विवरण अपनी डायरी में दर्ज किए हैं।

मगर पौराणिक संदर्भों की अशोकाष्टमी में अशोक वृक्ष का महत्व स्थापित है।

अब आप अशोक वृक्ष और सम्राट अशोक के बीच संबंध की जाँच के लिए बौद्ध ग्रंथ दिव्यावदान का अध्ययन करें, जिसमें लिखा है कि नामसाम्य के कारण सम्राट अशोक को अशोक वृक्ष बहुत प्रिय था या हजारी प्रसाद द्विवेदी की उस चंवरधारणी यक्षिणी को याद करें जो मथुरा संग्रहालय में अशोक वृक्ष का पौधा लिए खड़ी है।

ऐसे में साबित होता है कि चैत शुक्लाष्टमी को मनाया जानेवाला वार्षिकोत्सव अशोकाष्टमी मूलतः सम्राट अशोक का जन्मदिन है, जिसमें पुराणकारों ने सावधानीपूर्वक सम्राट अशोक को विस्थापित करके सिर्फ अशोक वृक्ष को जोड़ लिया है।



4. तो लाट भैरव क्या अशोक - स्तंभ ही है?

ये वाराणसी में लाट भैरव कौन हैं ?

सम्राट अशोक का लाट ही तो है।

लाटों की पूजा अनेक स्थलों पर होती है। गुणाकर मुले ने अपनी पुस्तक " भारतीय लिपियों की कहानी " (पृ. 37) में लिखा है कि वाराणसी में लाट भैरव के नाम से अशोक - स्तंभ था।

ह्वेनसांग ने जब वाराणसी की यात्रा की थी, तब उन्होंने इसे देखा था, लिखा कि बरना नदी के पश्चिमीतट पर सम्राट अशोक का बनवाया हुआ 100 फीट ऊँचा एक स्तूप है। स्तूप के सामने पत्थर का एक स्तंभ काँच के समान स्वच्छ और चमकीला है। इसका तल बर्फ के समान चिकना और चमकदार है। इसमें प्रायः छाया के समान तथागत बुद्ध की परछाई दिखलाई देती है।

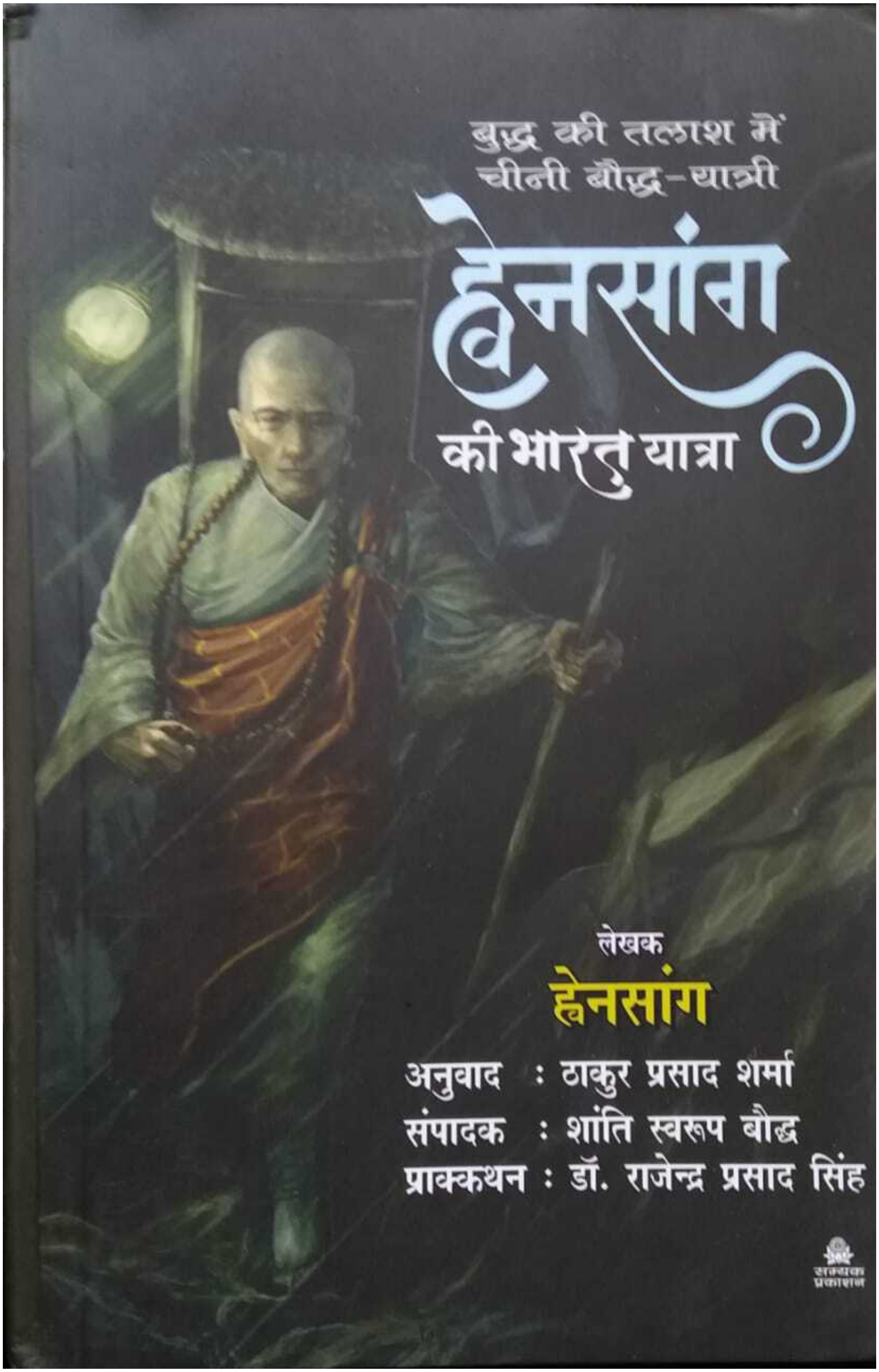
बाद में विसेंट स्मिथ ने इसकी पहचान लाट सरैया में मौजूद लाट भैरव के रूप में की।

फ्रेंच यात्री ट्रेवेनियर ने भी 1665 में इसे देखा था।

1809 ई. के दंगे में इस स्तंभ के टुकड़े - टुकड़े हो गए।

आगे मुले ने यह भी लिखा है कि भुवनेश्वर के भास्करेश्वर मंदिर में खंडित अशोक - स्तंभ की पूजा बतौर शिवलिंग होती है।

हाथी - घोड़ा, रथ - पालकी के साथ बाबा लाट भैरव की शाही बारात जब निकलती है, तब देखने वालों का रेला उमड़ पड़ता है।


बुद्ध की तलाश में
चीनी बौद्ध-यात्री
ह्वेनसांग
की भारत यात्रा
लेखक
ह्वेनसांग
अनुवाद : ठाकुर प्रसाद शर्मा
संपादक : शांति स्वरूप बौद्ध
प्राक्कथन : डॉ. राजेन्द्र प्रसाद सिंह
सम्यक प्रकाशन

5. छत्तीसगढ़ में सिरपुर और राजिम के बीच महानदी के किनारे बसे छोटे - से नगर आरंग को मंदिरों की नगरी कहा जाता है।

किंवदंती है कि राजा मोरध्वज ने यहीं पर कृष्ण के आदेश से अपने बेटे को आरा से जीवित काट दिए थे। इसलिए यह आरंग है।

अभी खबर आ रही है कि पुरातत्व विभाग ने आरंग क्षेत्र के रींवा में खुदाई की है। मौर्य काल की ईंट मिली है, किले का सबूत मिला है और लोक स्तूप मिलने की संभावना है।

आरंग क्षेत्र में मौर्यकालीन बसाहट को देखते हुए राजा मोरध्वज के नाम को मौर्य राजाओं से जोड़ने की इच्छा होती है। आखिर मोर तो मौर्य राजाओं का वंशीय चिह्न था ही।

सर्वप्रथम ग्रुनवेडेल ने यह बताया कि मोर वस्तुतः मौर्यों का वंशीय चिह्न है।

इसकी पुष्टि अशोक के लौरिया नंदनगढ़ स्तंभ के निचले हिस्से में उत्कीर्ण मोर की आकृति से हो जाती है।

मौर्यों के सिक्कों पर भी मोर के चित्र देखने को मिलते हैं।

कहीं इसमें अप्रत्यक्ष ढंग से मौर्य राजाओं की दान वीरता की कहानी तो नहीं छिपी है? क्योंकि मौर्य राजाओं ने दान खूब किए।

रोमिला थापर ने कहा है कि महाभारत में युधिष्ठिर का चरित्र सम्राट अशोक से प्रेरित था।

शांतिपर्व में कथा है कि जब युधिष्ठिर से राजभार ग्रहण करने को कहा गया तो उन्होंने संन्यास लेने की बात कही। बाद में उन्हें राजा बनने के लिए मनाया जाता है।

रोमिला थापर ने इसी प्रसंग में यह बात कही हैं कि जब युधिष्ठिर ने सत्ता संभालने से इनकार किया, तब हो सकता है कि उनके मन में सम्राट अशोक की छवि रही हो।

तब यह कोई असंभव नहीं कि अर्जुन के साथ कृष्ण द्वारा मोरध्वज का दान - परीक्षण में मौर्य राजाओं की दान वीरता की छवि रही हो।

कथा - गल्प भी कभी - कभी वास्तविक चरित्र की छवि से प्रेरित होते हैं।



सिरपुर और राजिम के बाद अब छत्तीसगढ़ (Chhattisgarh) के आरंग क्षेत्र में प्राचीन सभ्यता (Ancient civilization) के मिलने की संभावना जताई जा रही है। आरंग क्षेत्र के ग्राम रींवा में पुरातत्व विभाग की खुदाई में 1800 साल पुरानी ईंट मिली है। जिसके बाद वहां पर मौर्य काल (Mauryan period) के अवशेष मिलने की संभावना जताई जा रही है।

6. गणपति बप्पा मोरया!

मौर्य राजे मोरिय गण के थे। वहीं गणपति मोरया थे।

बुद्ध के धम्म में मौर्यों की आस्था थी।

बुद्ध विनय (विनयपिटक) के अधिष्ठाता थे।

विनय के आधार पर बुद्ध का एक नाम विनायक था। भदंत आनंद कौशल्यायन के पालि - हिंदी कोश में इसे देखा जा सकता है।

बुद्ध अष्टांगिक मार्ग के भी सर्जक थे। इसलिए वे अष्टविनायक भी थे।

आखिर गणपति बप्पा मोरया में अष्टविनायक का ही आह्वान किया जाता है।



7. सम्राट अशोक का सिंहचतुर्मुख ने सबसे पहले बौद्ध कला को प्रभावित किया और गौतम बुद्ध की चार मुख वाली मूर्ति को जन्म दिया, फिर ब्रह्मा के चार मुख की परिकल्पना की गई।



8. महाभारत - कथा पर बुद्ध और सम्राट अशोक का प्रभाव।

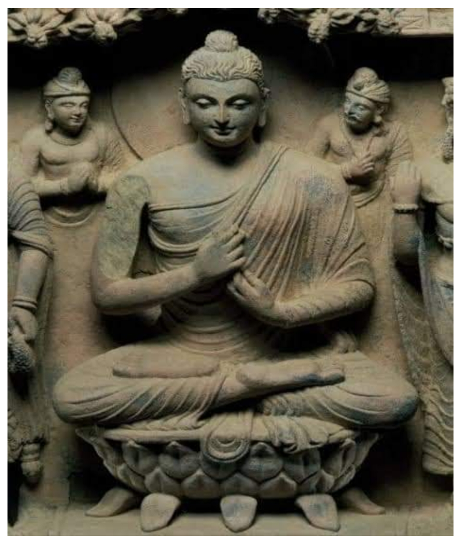
महाभारत महाकाव्य है। युधिष्ठिर इस महाकाव्य के पात्र हैं। कलिंग के रक्तरंजित भीषण युद्ध से सम्राट अशोक शोकाकुल हो उठते हैं और महाभारत के रक्तरंजित भीषण युद्ध से युधिष्ठिर शोककुल हो उठते हैं।

युधिष्ठिर संन्यास लेने की बात करते हैं। उन्हें राजसिंहासन व्यर्थ लगता है। बाद में मनाए जाने पर राजा बनने को तैयार होते हैं। मगर युधिष्ठिर राजा बनने पर धर्म का अनुशीलन करते हैं। इसीलिए वे धर्मराज कहलाए।

सम्राट अशोक धम्म का अनुशीलन करते हैं। इस अर्थ में कहा जा सकता है कि महाकाव्य के कवि ने युधिष्ठिर के चरित्र - चित्रण में ऐतिहासिक नायक सम्राट अशोक के व्यक्तित्व के कुछ अंशों का इस्तेमाल किया है।

यह कथा महाभारत के " शांति पर्व " में है। युद्ध से ऊबे लोगों ने शांति की राह चलने को प्रेरित हुए और यह प्रेरणा बुद्ध से मिली थी।





9. पुल बाँध कर लंका जीता गया ...यह पुरुषोत्तम श्रीराम की मर्यादा थी और बगैर समुद्र में पुल बाँधे ....बगैर खून - खराबे के लंका जीत लिया गया ....वो सम्राट असोक की गरिमा थी।



<u>लेखक - परिचय</u>

डॉ. राजेंद्रप्रसाद सिंह

अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त भाषावैज्ञानिक तथा इतिहास - मर्मज्ञ

पुस्तकें : 1. भाषा का समाजशास्त्र 2. भारत में नाग परिवार की भाषाएँ 3. हिंदी की लंबी कविताओं का आलोचना - पक्ष 4. काव्यतारा 5. हिंदी साहित्य का सबाल्टर्न इतिहास 6. हिंदी साहित्य प्रसंगवश 7. आधुनिक भोजपुरी के दलित कवि और काव्य 8. भोजपुरी के आधुनिक भाषाशास्त्र 9. कहानी के सौ साल 10. साहित्य में लोकतंत्र की आवाज 11. ओबीसी साहित्य विमर्श 12. हिंदी का अस्मितामूलक साहित्य 13. दलित साहित्य का इतिहास - भूगोल 14. भाषा, साहित्य और इतिहास का पुनर्पाठ 15. भोजपुरी - हिंदी - इंग्लिश लोक शब्दकोश 16. पंचानवे भाषाओं का समेकित पर्याय शब्दकोश 17. दि रि - राइटिंग प्रॉब्लम्स आफ भोजपुरी ग्रामर, डिक्शनरी एंड ट्रांसलेशन 18. लैंग्वेजेज आफ दि नाग फ़ैमिली इन इंडिया 19. भोजपुरी भाषा, व्याकरण आ रचना 20. भोजपुरी व्याकरण, शब्दकोश आ अनुवाद के समस्या 21. भोजपुरी के भाषाशास्त्र 22. ओबीसी साहित्य के विविध आयाम 23. इतिहास का मुआयना 24. खोए हुए बुद्ध की खोज 25. बौद्ध सभ्यता की खोज 26. शहीद जगदेव प्रसाद की दास्तान 27. जगदेव प्रसाद वाङ्मय 28. हिंदी की लंबी कविताओं पर बातचीत 29. चिनगारी 30. सम्राट अशोक का सही इतिहास 31. हिंदी के प्रमुख भाषावैज्ञानिक, बोलियाँ एवं अस्मितामूलक भाषाविज्ञान आदि।

सम्मान : बिहार सरकार के डा. ग्रियर्सन पुरस्कार (2016 -17) से सम्मानित।

संप्रति : प्रोफेसर, स्नातकोत्तर हिंदी विभाग, एस. पी. जैन कालेज, सासाराम (बिहार)

संपर्क : इन्कम टैक्स आफिस के पास, गाँधी नगर, सासाराम - 82115 (बिहार)